कृषियोग

कृषियोग

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

KRISHIYOG

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-50-7
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2020)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

कृषियोग/07

काजक रोप/17

खटसमाद/29

जीबठपन/43

गोटी लाल/54

अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह/64

दहेज/76

जेहेन मति तेहेन गति/88

'पंगु' उपन्यासक पछातिक रचना-क्रमः/102

कृषियोग

आठ बजे भिनसुरका समय। कहब जे भिनसुरका आठ बजेक समय सभदिना एक्केरंगक होइए से नइ होइए। बैशाख-जेठक आठ बजे भिनसुरका समय जेहेन होइए तेहेन पूस-माघक नहियेँ होइए। मुदा से सभ अखन नहि, अखन बस एतबे जे सामा पाबैन कहियौ आकि मास असनान, चाहे हरिहर बाबाक पूजा कहियौ आकि बराह बाबाक पूजा-मेला, ओइ सभकेँ भेना आइ छअ दिन भऽ गेल तँए अगहनक अन्हरियाक आइ छठम दिन छी, माने अठारह नवम्बर।

एते कहैक प्रयोजन किछु खास नहियेँ अछि मुदा तारीखो-तिथि तँ अपन धरम बिगाड़िते अछि बस तेतबए...।

किसान छी, बाध दिस जाइत रही कि टोलसँ निकैलते रस्ते कातक आमक गाछक निच्चाँमे योगियो बाबा आ समदर्शियो बाबाकेँ बैसल देखलयैन। रस्ते धेने आगू बढ़ल जाइत रही कि योगी बाबा ठहाका मारि हँसला।

एते तँ बुझले अछि जे योगी बाबा हमरा सभकेँ बाल-बोध बुझै छैथ तँए जँ कोनो गलतियो करब तँ बुझौता, चेतौता मुदा ठहाका मारि हँसता तँ नहि।

ओना, हुनका दुनू गोरे–माने योगियो बाबा आ समदर्शियो बाबा–सँ रस्ता काटि अपन काजक रस्ता पकैड़ आगू बढ़ि गेलौं। गाछक छाहैरसँ कनियेँ आगू बढ़लौं कि मनमे उठल जे योगी बाबाक हँसीक ठहाका जरूर

किछु शुभ सन्देशक इशारा छी...।

शुभ सन्देशक इशारा मनमे अबिते जहिना सभकेँ नीक बात शुभ समाचार सुनैले जिज्ञासा जगैए तहिना अपनो भेल। घुरि कऽ योगी बाबा लग पहुँच बजलौं-

“बाबा, तेहेन रामधुनिमे मन फँसि गेल छल जे अहाँपर नजैरिये ने पड़ल तँए आगू बढ़ि गेलौं। पछाइत जखन धियान टुटल तखन अ हाँपर नजैर पड़ल, तँए घुमि एलौं।”

ओना, योगी बाबा अपन योग क्रिया (जीवन योग) सँ हमरा-दे बुझि गेला तेहेन उचक्का अछि जे एक किलोमीटर हटलेसँ देखि नेने हएत आ केहेन ओरिया कऽ बाजल अछि! मुदा तइसँ हमरा कोन मतलब। जहिना वेदकेँ कोन मतलब अहाँसँ छै; ओ तँ अहाँक जिनगीक ओहन रस्तापर ठाढ़ अछि जइसँ अहाँक पूर्ण स्वतंत्र जीवन भेट रहल अछि आकि नै भेट रहल अछि; तेकर लेखा-जोखा राखत। जखन स्वतंत्र जीवनक बाट भेट रहल अछि तखन किए ने पूर्ण स्वतंत्र भऽ जिनगी बिताएब, मुदा तइले अहाँकेँ ने अपन वेद बुझए पड़त...। योगी बाबा बजला-

“बौआ, गाम-घरक की हाल-चाल अछि?”

जहिना कियो गामक चालि देखि बजैमे गामेकेँ ढठिया दइए तहिना हमहूँ गामकेँ ढठियबैत बजलौं-

“बाबा, अनकर हाल-चाल की कहब! अपने ऐगलो साल देखब कि नइ देखब से चिन्ता मनमे बनल अछि।”

जाधैर हम बजैत रहलौं ताधैर योगी बाबा अपन मुड़ी डोलबैत रहला, मुदा बजला किछु ने।

ओना, अप्पन मन लटकल छल ओइ हँसी–ठहाका–क फल सुनैले मुदा से उनटे दिस योगी बाबा भँसिया रहल छला। अपनाकेँ संयमित

करैत बजलौं- “बाबा, अपनेटा ठहाका मारि हँसब आकि अनको हँसाएब?”

‘अप्पन’ आ ‘आन’ सुनि योगी बाबा बजला- “हम केकरो मनाही करै छिऐ जे तूँ नइ हँसह। तखन तँ हँसैले मन चाही, से तँ ओ अपने ने बनौत।”

जहिना योगी बाबा अप्पन पल्ला झाड़ि कात भेला तहिना हमहूँ अपन पल्ला हुनके ऊपरमे दैत बजलौं- “बाबा, अहाँकेँ समाजेक बाबाटा नइ बुझै छी, गुरुओ बुझै छी, तँए सदिखन मनमे रहबे करैए जे गरुगरकेँ सरुगर योगी बाबा जरूर बनौता।”

ले बलैया! बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं मुदा अप्पन विचारमे केतए घोंच भऽ गेल से बुझबे ने केलौं। ओना, योगी बाबा बुझि गेला तँए ठहाका मारि तँ नहि हँसला मुदा मन जरूर मुस्कियेलैन।

आब, ठहाका सुनि जेते मन नइ घबड़ाएल छल तइसँ बेसी योगी बाबाक मुस्की देखि घबड़ाएल। मनमे उठल- ठहाका केकरापर मारने छला केकरापर नहि, तइसँ अपना कोन हानि-लाभ अछि मुदा मुस्की तँ सोल्होअना हमरेपर मारलैन अछि जे अपना आँखिएसँ देखलौं..!

मुदा लगले मनमे ईहो भेल जे दोहराकऽ जँ फेर पुछिऐन आ जँ कहीं पहिलुके जकाँ फेर केतौ घोंच भऽ जाए त तखन तँ दोबर मुस्कीसँ ने मुस्कीएता। मुदा बाबाक बातो तँ ताबे धरि नहियेँ बुझब जाबे तक पेटसँ निकालि धरतीपर नै रखता। तखन?

तखन तँ यएह ने जे जहिना भक्त सोल्होअना भगवानसँ अभक्त होइत अपनाकेँ समर्पित केने रहैए तहिना करब बेसी नीक हएत। बजलौं-

“बाबा, अहीं जखन खेल खेलबै तखन हम –छौड़ा-माड़ैर–सभ की करबै?”

जेना लहका बंशीक घाव माछक गलफड़मे लगैए वा जहिना

वृन्दावनमे गोपी सभकेँ कृष्णक बंशीक लगलैन तेना तँ योगी बाबाकेँ नइ लगलैन मुदा विचारमे किछु-ने-किछु लाव लगबे केलैन। बजला-

"अनुप! तोहर नामे 'अनुप' छह तँए तोरा नइ कहबह तँ केकरा कहबै।"

योगी बाबाक विचार सुनि मन थोड़ेक अपनो थीर हुअ लगल आ थोड़ेक अपनो शक्ति लगा थीर केलौं। जँ से नइ करितौं तँ योगी बाबाक जोड़-घटाव छिऐन किने, निच्चाँमुहेँ अधियाइत घटत आकि ऊपरमुहेँ बढ़ियाइत बढ़त से सूत्र जँ सुनबे ने करब तखन तँ दिनका नाच रातिमे लालटेनक इजोते देखब..!

मुदा एतेक रच्छ जरूर रखलौं जे किछु बजबे ने केलौं। जँ किछु बजितौं तँ तही बातक नाँगैर पकैड़ योगी बाबा धार-पोखैरमे हेल जइतैथ, मुदा नइ बजने एते तँ भेबे कएल जे अपना फुरने अप्पन विचारक बात योगी बाबा बजता। सएह भेल। योगी बाबा बजला-

"अनुप, अखन तक तूँ गुरुए ने बुझै छहक।"

योगी बाबाक मुहसँ सोझगर बात सुनि, जहिना पतराएल धारमे मोटाएल धारा मिलते मोटाए लगैए; तहिना योगी बाबाक विचार सुनि अपनो मनमे भेल। बजलौं-

"बाबा, ओहूमे की कोनो रोख-वृख अछि।"

हमर 'रोख-वृख' सुनि योगी बाबाक मुस्कीमे गम्भीरता आबए लगलैन। मने-मन बाबाक चिन्त चिन्तनधार लग पहुँचा विचार देलकैन जे अनुप प्रशान्त महासागरमे हेलै-जोकर अखन नइ भेल अछि तँए किए ने ओहन बाट पकड़ा दिऐ जे जेहेन गतिये चलत तेते समयमे पहुँचत...। योगी बाबा बजला- "बौआ अनुप! गुरु तक तँ बुझै छहक मुदा सतगुरु नइ बुझै छहक।"

योगी बाबाक मुहसँ खसल 'गुरु' आ 'सतगुरु' आइये सुनलौं! मुदा

अनेरे किए बेसी लाड़-झाड़ झाड़ितौं, सुपुट शब्दमे बजलौं- “नइ।”

हम्मर बात जेना योगी बाबाक मनकेँ झमारि देलकैन तहिना विचलित हुअ लगलैन। मन तेना विचलित भऽ गेलैन जे अपने धिक्कारए लगलैन। धिक्कारए ई लगलैन जे केते लोक समाजमे एहेन अछि जे कर्म-ज्ञानक संग वर्तमानमे भक्त बनि ठाढ़ अछि। दुनूक बीचमे जेकर जे दूरी बनल छै ओ तँ अपना आँखिये सभ देखैए। मुहसँ बाजह वा नै बाजह।

ओना, अपन मन अखन तक योगी बाबाक ठहाकापर लटकले छल मुदा तैबीच दोसरे-तेसरे विचार सभ उठि गेल। तहूमे जखन मुहसँ खसि पड़ल जे गुरुक ऊपर सतगुरु नइ बुझै छी, तखन उनैट कऽ केना पुछिऐन जे बाबा ‘ठहाका’ किए मारलिऐ? सभ देखिते छी जे परिवारमे वृद्ध-वृद्धक की गति छैन। जैठाम सबहक आँखिक नोर पीड़ासँ पीड़ित भऽ भऽ झहैर रहल छैन तैठाम योगीबाबा केना ठहाका मारि रहला अछि..! मनमे ओना बेर-बेर विचार उमैक जाए मुदा तेकरा मनेमे जाँतिकऽ रखने रहलौं।

योगी बाबा आ समदर्शी बाबा, दुनू एक-बतरिये छैथ, एक्के गामक एक्के टोलक सेहो छैथ, मुदा जेना योगी बाबाक परिवारजन ठहाका मारि हँसै छैन तेना समदर्शी बाबाक परिवारमे नहि छैन। ओना, समदर्शी बाबा अपने सभ दर्शनोक विचार बुझै छैथ आ सभ शास्त्रो-पुराणक संग सामाजिक रीति-रेवाज सेहो बुझै छैथ। पढ़ल-लिखल सेहो छथिए, मुदा ने अप्पन विचारक ने कोनो कोण-ठौर छैन, ने समाजेक रीति-रेवाजक ठेकान-ठौर आ कोनो अप्पन जीवनक संग परिवार-समाजक रूप गढ़ैक दिशा छैन! जइसँ सभ किछु बेठेकान बनलो छैन आ बनितो छैन्हें। कहब जे तखन योगी बाबाकेँ गप-सप्पक मिलान समदर्शी बाबाक संग केना रहै छैन? यएह ने सिद्धान्त आ बेवहार अछि।

जहिना कियो श्रमिक उत्साहक संग श्रम करैत श्रमण बनि आगू

बढ़ैए तहिना योगी बाबाक मन तैयार भेलैन, बजला- “बौआ अनुप, पचास बर्खक कृषि यज्ञमे हमरो योग रहल अछि।”

बजा गेल-

“एकरा के काटत।”

हमर बात सुनि योगी बाबाक मनमे बीस बर्ख पूर्वक बात आगूमे आबि गेलैन। बजला-

“बौआ, एक साल तेते धान अपनो, अपन गामो आ अपना इलाकोमे भेल जे धनमण्डल भऽ गेल। लेबाल नइ रहल। जेतबेमे जेकर बिकाएल से तेतबेमे अपन धान बेच जान हल्लुक केलक।”

बजा गेल-

“वाह..!”

जहिना खेतक कोण लग हरवाह अप्पन हर मोड़ि लइए तहिना योगी बाबाक विचार हमर ‘वाह’ सुनि मोड़ि लेलैन। मोड़ाइते बजला-

“बौआ, पचास बर्खक जिनगीमे केतेको रौदी देखलौं। एक-सलियो रौदी देखलौं, दू-सलियो देखलौं आ पन-सलिया सेहो देखलौं। देखबेटा नइ केलौं, ओहन विपैत्तिक मुकाबला सेहो केलौं। तइसँ आरो जे भेल से भेल मुदा आँखि तकैत जीबैत तँ अखनो देखिते छह किने।”

बजलौं-

“बाबा, सुनै छी जे बारह बर्खक रौदीमे जनकजी हर जोतलैन जइमे सीतो भेटलैन आ खूब बरखो भेल..!”

योगी बाबा स्पष्ट बजला-

“तेहेन रौदी तँ नइ देखलौं मुदा गामक इनार-पोखैर सुखा गेल से तँ देखबे केलौं, संगे ओकर भोग सेहो भोगबे केलौं।”

अपनो विचारमे जेना कोनो नवगछुलीक मुड़ीमे कनोजैड़ छुटै छै

तहिना कनोजैड़ छुटए लगल। बजलौं- "बाबा, ऐ बेरक बाढ़ि जकाँ पहिनौं बाढ़ि अबै छल?"

रौदीक संग बाढ़िक चर्च सुनिते योगी बाबाक मनमे अनेको गुणा आत्मवलक शक्ति जगलैन। मनक शक्ति जगिते योगी बाबा बजला-

"बौआ अनुप, बाढ़िये-रौदीटा किए कहै छह, केते झाँट-बिहाड़ि, पानि-पाथरक संग छोट-पैघ भुमकमक प्रकोप सेहो भोगनहि छी। मुदा..?"

योगी बाबाक मुहसँ खसल 'मुदा' सुनि अपनो मनमे भेल जे भरिसक 'मुदा' कहि बाबा विपैत सभकेँ बिसरए चाहि रहला अछि। पुछलयैन- "मुदा की बाबा?"

हमर पुछबसँ योगी बाबाक मन ठंढाएल इनहोर पानि जकाँ ठंढाए लगलैन। बजला-

"बौआ, आब ऐ सभ घटनाकेँ मोन पाड़ि अनेरे किए मनकेँ तड़पाएब। छोड़ह ऐ सभकेँ।"

स्पष्ट भऽ गेल जे अपना जनैत योगी बाबा अपनो भोगल जीवनकेँ बिसरए चाहि रहल छैथ, मुदा अपना तँ बुझल नहि छल तँए मनमे बेर-बेर जिज्ञासा जगिये रहल छल जे आरो की सभ भेल। पुछलयैन-

"बाबा, बिनु बजने जँ छोड़ि देब तखन हम सभ–ऐगला पीढ़ी– केना बुझब?"

हमर बात सुनि योगी बाबाक मन ठमकलैन। कने-काल मने-मन विचार करैत बजला-

"बौआ! जे जिनगी बीत गेल आ जिनगीक संग सुखो-दुखो आ समैयो बीत गेल, जेकरा भूतो कहै छिऐ आ अतीतो कहै छिऐ। अतीतेपर ठाढ़ भेल वर्तमानो चलैए, मुदा पुन: घुमि अतीतमे थोड़े जाएत। यएह अतीतक अनुभव-ज्ञान गुरु रूप धारण करैए। मुदा सतगुरु..?"

अदहा बात माने 'गुरु'कें जानब तँ बुझबे केलौं जइसँ मनमे कनी चैन आएल मुदा 'सतगुरु' बुझैक जिज्ञासा मनमे तेते जोर मारलक जे मुहसँ अनेरे खसि पड़ल- "की 'मुदा सतगुरु' कहलिऐ बाबा?"

हमर बात सुनि योगी बाबाक मनमे जेना प्रसन्नता जगलैन तहिना प्रसन्न होइत प्रसन्नचित्तसँ बजला-

"बौआ अनुप! वर्तमानकेँ बुझब-जानब आ बुझि-सुझि चलबे 'सतगुरु' भेला।"

योगी बाबाक बात मनमे नीक जकाँ जगहो ने बनौने छल कि समदर्शी बाबा उठान हारैत योगी बाबाकेँ कहलैन-

"भाय, ई साल नहि खेपब।"

समदर्शी बाबाक बात सुनि योगी बाबाक मनमे अनेको प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। चारि-पाँच बर्ख उमेरोमे समदर्शी छोट अछि, कोनो तेहेन बिमारियो देहमे नइ देखै छिऐ जे बिछानो धरत, तखन एहेन बात किए बाजल जे ऐ साल नइ खेपब..!

योगी बाबाक ठहाका अपनो मनमे ठहैर-ठहैर उठबे करै छल मुदा जखन दू गोरेक बीच योगी बाबा छैथ तखन तँ दुनू गोरेक बात ने बुझता। यएह सोचि अपने चुपचाप रही। तैबीच योगी बाबा बजला-

"किए ने ई साल खेपबह समदरसी?"

जहिना योगी बाबा चारि बीघा खेतबला खेतिहर तहिना समदर्शी बाबा सेहो छैथ। ओना, बीचमे जे दुनू बेटीक बिआह केलैन तइमे कट्ठा पनरहे करीब जमीन बिकाएल छेलैन, मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी, जहिना खेत-बिकाइसँ पहिलुका रहन-सहन आ चालि-ढालि छेलैन तहिना अखनो छेबे करैन। समदर्शी बाबा बजला-

"योगी भाय, अखन तक जे बनल-बनाएल जिनगी छल ओ एकाएक ऐ साल बाढ़िक चलैत टुटि गेल, ऐगला कोनो आशा नहि देखि

रहल छी।”

समदर्शी बाबाक सतही विचार योगी बाबाकेँ सेहो अपन घटित जीवनसँ अनुभव छेलैन्हे तँए नीक जकाँ महसूस भेबे केलैन। मुदा बाढ़िक पछातिक जीवनमे दुनू गोरेक बीच अकास -पतालक अन्तर जकाँ भऽ गेलैन। योगी बाबा बजला- “समदरसी, बाढ़िक जेहेन घटना ऐबेर भेल तेहेन की कहियो नइ भेल छल। केतेको बेर भेल, मुदा मनुख तँ सभ किछु अङ्गेज अपन वंश-धारकेँ जीवित रखनहि अछि किने, आकि नहि?”

समदर्शी बाबा बजला-

“हँ, से रखनहि अछि।”

योगी बाबा बजला-

“जहिना तोहर कि गामेक आन लोकक आकि इलाके-लोकक तँ एक्के गति अछि किने?”

समदर्शी बाबा बजला-

“हँ, से तँ अछिए।”

धारक पानि जहिना समुद्रमे मिलिते तुष्टि प्राप्त करैए तहिना अप्पन किसानी जिनगीक धारमे बहैत योगी बाबा बजला-

“समदरसी, खेतमे लगौल जे किछु स्थायी वा अस्थायी सम्पैत–गाछ-बिरीछ–छल, सभ किछु नष्ट भऽ गेल। मात्र खेतटा बँचल रहल। अखन जँ हम लोककेँ कहबे करबै जे फल्लाँ साल एहेन उपजा भेल वा आमे फड़ल छल, तइसँ अपन भुखाएल पेटक भूख मेटाएत?”

समदर्शी बाबा मुड़ी डोलबैत कहलखिन-

“से तँ नहियेँ मेटाएत।”

योगी बाबा बजला- “सभ आदमीकेँ ने अपन-अपन होश करए पड़तै जे जीवन धारमे केना हेलब?”

समदर्शी बाबा बजला- “हँ से तँ होश करए पड़तै..!”

योगी बाबा बजला-

“भरिसक अही बीचमे तूँ बेहोश भऽ गेलह तँए जिनगी खेपब भार बुझि पड़ि रहल छह। मानै छी घटना भेल, मुदा अप्पन टुटल जिनगीक जोड़ो-जाड़ तँ अपने ने करए पड़त।”

मुड़ी डोलबैत समदर्शी बाबा बजला-

“हँ से करए पड़त।”

योगी बाबा अपन जीवनक योग क्रियाक संग फसलचक्र देखबैत बजला-

“आइ अठारह नवम्बर छी, धानक उपज नइ भेल मुदा समयपर गहुमक खेती तँ पकड़िये लेलौं। गहुमक पछाइत खेरही हएत , खेरहीक पछाइत आगू सालक धान हएत।”

फसलचक्रक योग नजैरपर पड़िते समदर्शी बाबा अवाक भऽ गेला।

समदर्शी बाबाकेँ अवाक होइते योगी बाबा ठहाका मारि हँसला।



शब्द संख्या : 2010, तिथि : 22 नवम्बर 2019

काजक रोप

जिनगीक तीन हीस उमेरमे दू हीस जखन बीत चुकल तखन मनमे कनी होश आएल। होशो ओहिना नइ आएल, आएल एना जे जहिना पहाड़क ऊपरसँ ओंघराएल कोनो पाथरक टुकड़ा धरती छुबैसँ पहिनहि कोनो गाछक जड़िमे अड़ैक जाइए जइसँ निच्चाँ गुड़कब तँ बन्न भऽ जाइ छै मुदा अपन स्थानसँ तेतेक निच्चाँ गुड़ैक गेल रहैए जे अपन रंग-रूप बेदरंग भऽ गेल रहै छइ। होश अबिते जहिना दुरघटनासँ अचेत दुरच रीकेँ होश अबै छै आ अपन दशा-दिशा देखि अपन अधमरू शक्तिकेँ अपने जगबए लगैए; तहिना अपन होशकेँ जगबए लगलौं। होशकेँ जगिते बाबा मोन पड़ला। ओना, जेते आयु पूर्व जिनगीक होइए तइमे एक चौथाइ जिनगी बाँकीए रहैन; तइ बिच्चेमे बाबा मरि गेला, मुदा से मुइला दुरघटनामे। बसक यात्रा करैत रहैथ, धारक पुलपर जखन बस चढ़ल कि पुले टुटि गेलै आ बस धारमे खसि पड़ल। बरसाती धार, कोणे-कानी भरले छल, तीन दिनक पछाइत बसकेँ ऊपर कएल गेल जइमे बाबो रहैथ। बाबा मोन पड़ैक कारण ई भेल जे जहिना मृत्युक रस्ता पकड़निहार मृत्युभुवन दिस बढ़ैत जाइए जइसँ मृत्युक देवी-देवताकेँ दर्शन ढहल-ढुहल मन्दिर सभमे हुअ लगै छैन तहिना बाबा सेहो मोन पड़ला। बाबा मोन पड़िते जेना मन चनकल। चनकल ई जे जेतेक दिन बाबाक ऊपरमे परिवारक भार रहलैन तेतेक दिनक जिनगी।

पढ़ल-लिखल–स्कूली शिक्षा–कम रहितो बाबा बेवहारिक जिनगीमे सम्पन्न छला। मोन पड़िते दोसर मन धक्का देलक जे परिवार तँ वएह छी,

बीचमे पिताजीक जे पारिवारिक जीवन रहलैन तइमे बाबाक जीवनक किछु जीवित-अंश रहबो केलैन आ किछु नष्टो भेलैन। तहिना किछु मृत्यु-अंश सेहो परिवारमे घुसल। घुसबो सोभाविक छेलैहे, किए तँ सामाजिक परिवेशमे समाजक प्रभाव बाल-बोधसँ लऽ कऽ सियान-चेतनपर पड़िते अछि। तैसंग ईहो छेलैन जे खानदानी बन्धन–बान्ह–सेहो जीवनकेँ घेरनहि छेलैन। खानदानी बन्धनक माने भेल जे आइ धरिक जे अपना ऐठामक (दुनियाँक नहि) जीवन रहल ओ पराधीन रहल जइसँ स्वतंत्र-सोच, स्वतंत्र उद्यम आ स्वतंत्र विचार व्यक्त करैक अवसरे नहि भेटल अछि। सीमाबन्ध जीवनक बीच लोक अपन जीवन धारण करैत आबि रहल छैथ।

देशक आजादीक झण्डा लालकिलापर लहराइते देशक माटि-पानिसँ लऽ कऽ मनुखक सोच-विचारक संग चालि-ढालिमे सेहो लहरा उठल। जइसँ किछु कौलेज, स्कूलसँ लऽ कऽ अस्पताल होइत सरकारी बेवस्था-ले संस्था सभ जागि उठल। स्कूल-कौलेज बढ़ने हमहूँ बी.ए. पास कऽ लेलौं। जइ दिन बी.ए. पास केलौं तइसँ पहिने मात्र तीन गोरे गाममे बी.ए. पास केने छला। चारिम अपने भेलौं। बुधि -बले कि विचार-बले आकि सामाजिक हवाक बले अपने मन जागैत कहलक-

"हाइ स्कूलक मैट्रिक होउ आकि कौलेजक बी.ए.-एम.ए.; जहिना किलास पहिलसँ पाँचम स्थान धरिक विद्यार्थी अपनाकेँ प्रथम श्रेणीक बुझिते अछि तहिना समाजमे हमहूँ चारिमे स्थानक भेलौं किने , तखन किए ने शीर्षक योग्य अपनाकेँ मानब।"

मनक विचार जिनगीक कथा पढ़ब शुरू केलक। जाबे तक हाइ स्कूलक आठमा किलास तकमे पढ़ैत रही ताबे माता-पिताक अढ़ौल काज बुझि मनसँ पढ़ैत रहलौं। तँए कहब जे दुर्गापूजामे सिंगहारक फूल बीछए भोरमे नइ जाइ आकि आमक गाछीसँ टिकुला बीछ-बीछ आमील-ले नइ आनी आकि पाकल आमपर गोलबाहि नइ करी; से बात नहि, से सभ

करिते रही। तेतबे नहि, जुड़शीतल दिन बेरुपहर शिकार खेलैले संगी-तुरीयाक संग जेबे करी। से मोटा-मोटी नढ़िया-खिखिरक...।

नौमा किलासमे अबिते स्कूलक सिलेवशो आगू बढ़ल। नव-नव विषय सभसँ सेहो भेँट भेल आ ओहनो विषय सभसँ भेँट भेल जेहेन लोअर प्राइमरी स्कूलमे मास्टर साहैब पढ़बै छला। मन मानि गेल जे अखन जँ पढ़ाइ छोड़ि केतौ नोकरी करए जाएब तँ लोअर प्राइमरी स्कूलमे शिक्षकक रूपमे नोकरी हेबे करत। मन हँसैत बाजल-

“किताबो देखि कऽ छोट-छोट बच्चाकेँ पढ़ा सकै छी, मुदा अपन गात–शरीरक विकसित रूप–तँ तेहेन अखन अछि जे ने कियो मोजर देत आ ने गुदानत। तहूमे तेहेन नवकातूरक धिया-पुता सभ जुन्ना जकाँ ऐंठल भऽ गेल अछि जे उनटा कऽ मारिये करए लगत।”

मनक विचारसँ मने-मन विचारने मनमे नव विचार जगल। नव विचार ई जगल जे पानिमे जेतेक चीनी घोरब तेतेक बेसी ने मीठ हएत। नोकरी करैक एते अगुताइये कथीक अछि। मैट्रिक पास कऽ लेब तखन मिड्ल स्कूल तकक शिक्षक बनैक योग्यता भऽ जाएत; ई तँ आरो ने आगू बढ़ब भेल।

मैट्रिक पास केलाक पछाइत पढ़ैक विचारमे आरो जिज्ञासा जगल। कौलेजमे नाओं लिखेलौं। नीक रिजल्ट रहने शिक्षको –प्रोफेसर साहैबक नजैरमे–आ विद्यार्थियोक बीच आदर रहबे कएल। ऑनर्सक विद्यार्थी रहबे करी। दुनियाँ दिस नजैर सेहो बढ़ल। अखन तकक जे ज्ञान यात्रा रहल ओ एक सीमापर आनि कऽ ठाढ़ कऽ देलक। ऑनर्सक संग बी.ए. पास केलौं।

बेरोजगारीक दौड़मे–बेरोजगारीक माने ऐठाम सिर्फ शिक्षा विभागक नोकरीसँ अछि–चारि साल गुजैर गेल। अखन तक जे मनमे छल जे हाइ स्कूलक शिक्षक बनि जीवन बिताएब, ओइपर पानि हेरा

गेल। मन टुटि गेल जे शिक्षक नहि बनि पाएब। पढ़ल-लिखलसँ लऽ कऽ बिनु पढ़लो-लिखल शहर-बजार दिस भागिये रहल अछि। अपनो मन शहर दिस भगबाक विचार दऽ देलक।

शिक्षा विभागमे नोकरी नइ भेने मन हतास् भइये गेल छल। अखन तक किसान परिवारसँ जुड़ल रहलौं , मुदा किसानी काजक कोनो लूरि नइ भेल। सामाजिक परिवेश ओहन बनि गेल अछि जे परोछमे अहाँ कोनो काज किए ने करी मुदा सोझहामे एते तँ निमाहए पड़ैए जे खेती बिनु पढ़ल-लिखल लोकक काज छी। हर केना जोतब..! कोदारि केना पाड़ब..!! समाजोक लोक ताना मारिते अछि। अही सबहक बीच जिनगीक दू हीस समय बीत गेल।

बाबा आ बाबाक जिनगीक संगतुरिया दिस नजैर उठल। एक तँ गामक जानकारियो कमे अछि, किए तँ देखिते छी एक दिस पित्तीकेँ भातीज 'फल्लामा' आ दोसर दिस भातीजकेँ पित्ती 'फल्लाँ बौआ' कहैए। अपने एते बुझै नइ छी जे बुझब समाजक सम्बन्ध केना बनल अछि। मोन पड़ला ज्ञानचन काका।

ज्ञानचन काकाकेँ बेसीकाल बाबाक संग देखै छेलिऐन। बच्चा उमेरक बात छी तँए बेसी नहियेँ बुझल अछि जे कोन तरहक सम्बन्ध दुनू गोरेक बीच रहैन। मनमे जेना उत्साह जगल। उत्साह ई जगल जे जहिना किताब डुप्लीकेट होइए तहिना ने समाजक लोको डुप्लीकेट अछिए, मुदा तेही बीच ने ऑरिजनल–मौलीक–सेहो अछिए..! ज्ञानचन काकापर नजैर नाचए लगल। गाममे सभसँ नमहर संयुक्त परिवार अखन हुनकेटा छैन। परिवारक बीच सभकेँ सभसँ अनन्य सिनेह आ अनन्य प्रेमो छैन्हे। एक-दोसराक बीच जहिना आदर-भाव छैन तहिना बेवहारो छैन्हे। ओना, रौदी कि दाहीसँ जहिना सौंसे गामक किसान प्रभावित होइ ए तहिना ज्ञानचन काका सेहो प्रभावित होइते छैथ मुदा अप्पन सोच-विचार आ क्रिया-कलाप रहने अनका जकाँ छाती पीट-पीट कानै तँ नहियेँ छैथ। सदिकाल

अपनो आ अपन परिवारोजनकेँ क्रियाशील रखनहि रहै छैथ, जइसँ अनकासँ भिन्न पारिवारिक जीवन ज्ञानचन कक्काक छैन।

मने-मन विचार केलौं जे अनेरे जे अखन तक अपन पुस्तैनी काज छोड़ि वौआइत रहलौं ओ बहुत भारी चूक भेल। समाजमे सभ कि हमरे जकाँ पढ़ल-लिखल अछि; तखन ओ सभ केना अपन परिवारक निमरजना करैत चलि रहला अछि। बच्चा सभकेँ पढ़ैबते छैथ, बिआह-दानक संग अपनो जीवन-यापन कइये रहल छैथ...। मनमे ईहो हुअए जे जे काज आइ धरिक पूर्वज करैत एला आ परिवार चलबैत एला, ओकरा नहि पकैड़ अनेरे नोकरी-चाकरी करैक मन बनेलौं..!

मनमे नीको विचार उठल आ अधलो विचार उठिये रहल छल। तहीकाल पत्नीकेँ देखलयैन जे माझिल बेटापर जोर-जोरसँ आँगनमे बिगैड़ रहल छैथ। यत्र-कुत्र बाजि रहल छैथ। ज्ञानचन बाबाक बातपर सँ धियान परिवारपर चलि आएल।

आँगन पहुँच पत्नीकेँ कहलयैन-

"अनेरे किए एते आगि-अङोरा भेल छी?"

बच्चापर बिगड़ब छोड़ि पत्नी उनटे खौंझाइत बजली-

"सभटाकेँ दुइर अहाँ केलिऐ आ हमरे कहै छी जे आगि-अङोरा भेल छी..!"

ओना, तामसमे पत्नी जइ रूपमे बाजल होथि मुदा माथमे कोनो भारी चोट लगने जहिना माथा झनझना उठैए आ चेतनाक लोप सेहो हुअ लगै छै; तेना नइ भेल मुदा बातक चोट तेहेन लागल जे मन तिलमिला गेल, अखन तक जे पारिवारिक धारा रहल, जे पिताजी तक बहैत आबि रहल छल, ओ हमरा लग आबि एना किए लड़खड़ा गेल जे जइ पारिवारिमे हम बी.ए. पास केलौं, पिताजीक समयमे तँ पढ़ै-लिखैक बेवस्थे कम छल तँए ओ स्कूल-कौलेजक शिक्षा नहि पेब सकला, मुदा

घरपर जे बाबा पढ़ौने रहैन ओते शिक्षा तँ छेलैन्हे, जइसँ ओ नीक जकाँ परिवार चलबैत एला, मुदा आइ ओइ परिवारमे बच्चाकेँ स्कूल जाइले माएकेँ बिगड़ए पड़ि रहल छैन...। ओना, अपने डपैट कऽ किछु कहैक साहस ने पत्नियेँकेँ आ ने बच्चेपर भऽ रहल छल किए तँए जहिना पत्नीकेँ तहिना धियो-पुतो सभकेँ रंग-रंगक खगताक पूर्ति नहि केने परिवारक सभ झुट्ठा बुझिये रहल अछि; तँए किए ओ हमरा बातक बिसवासे करत आकि बातकेँ मोजरे दैत...। सोझामे सभ किछु देखि रहल छेलौं मुदा किछु बजैक साहसे ने भऽ रहल छल। ओना, अपने ऐ बात सभकेँ बुझिये रहल छी जे कियो निहत्था कइये की सकैए। भेल तँ छी निहत्था सन। अपनापर ग्लानियोँ हुअए जे एहेन हट्ठा-कट्ठा देह रखि कोढ़ि भेल जिनगी बीता रहल छी। मुदा से पहिने नइ बुझै छेलौं , जहियासँ दुनियाँक ठोकर खा जिनगीक हरणसँ हारल अपनाकेँ बुझए लगलौं तहियासँ होशमे कने-मने सुधार भेल अछि मुदा ओहो अखन तेतेक कमजोर अछि जे अनकर कोन बात; अपनो सभ विचारपर नजैर नहियेँ जा रहल अछि।

ओना, पत्नी किछु बाजि नहि रहल छेली मुदा हुनकर नजैर देखि अपना बुझि पड़ि रहल छल जे जँ ओ बाघ आकि सिंह रहितैथ तँ सोझे चीबा कऽ खा जइतैथ। मुदा कइये की सकै छी। हारल नटुआकेँ झुटका बीछब छोड़ि दुनियाँमे रहिये की जाइए। पूर्व जन्मक–जिनगीक पूर्व अवस्थाक– कमाइक भोग तँ लोककेँ भोगए पड़ै छै, से सोचि मनकेँ थतमारि रखने रही...। कनैत बेटाकेँ पुछलिऐ- “बौआ, स्कूल किए ने जाइ छह जे माए एते बिगड़ै छथुन..!”

ओना, कानब छोड़ि सुशील हम्मर बात सुनए लगल मुदा बात अन्त होइते पुनः कानए लगल। दोहरा कऽ पुछलिऐ- “कनिते रहबह तखन तोहर दुख-बेथा केना बुझबह?”

दू-तीन हिचकी मारि कानब बन्न करैत सुशील बाजल- “फीस समयपर नइ देलिऐ तँए मास्टर साहैब कहलैन जे काल्हिसँ इस्कूल नइ

अबिहेँ।”

सुशीलक बात सुनि छाती थर-थराए लगल, देहमे कम्पन्न आबए लगल मुदा किछु बजैक साहस नहि भेल। एक दिस बेटाक पक्ष लऽ कऽ जँ पत्नीपर बजितौं तँ ओ चोटे उन्टा अपन जिनगी भरिक इतिहासक पन्ना उन्टा चौंसैठोअना दोखी बना दइतैथ। एकाएक जागल मनमे जेना सदिकाल जाग होइत रहैए तहिना भेल। मनमे उठल; जहिना पोखैरमे सीढ़ीनुमा घाट हो आकि घरक (मकानक) सीढ़ीनुमा बाट होइ, ओ तँ डेगे-डेग चलए पड़ैए, जइसँ घाटो आ घरक बाटोक नापक संग अपनो नाप भइये जाइए। मुदा सपाट धरतीपर दिन-राति चललाक पछातियो कोनो नाप नहि अछि। तहिना ने जिनगियोक बाट अछि। एक भेल उपार्जन सूत्र, दोसर भेल सदुपयोग सूत्र। अप्पन जिनगी जेना अपने मनक ऐनामे झलकए लगल तहिना बुझि पड़ल। जहिना जीवनक घटना जीवनकेँ संकल्पित बनबैए तहिना सम्मिलित–पत्नियोँ आ बेटोकेँ– उत्तर दैत बजलौं-

“अहाँ, पतिक रूपमे जे अखन तक देखैत एलौं अछि से नइ निमाहने हम दोखी छी, मुदा ओहन दोखी नइ छी जे अहाँकेँ कष्ट देलौं आ अपने मौज केलौं। ओ बिसैर जाउ। बौआ, पिताक रूपमे जे हमरासँ नहि पूर्ति भेल हुअ, ओ अभावे नहि भेलह, मुदा तोरा संग हमरा प्रेम-भाव नहि अछि से बात नहि। काल्हि तोरा इस्कूलक फीसक पाइ देबह।”

बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं, मुदा लगले फेर अपन मन कहलक जे बेटाकेँ तुष्टि भलेँ भेट गेल हो, मुदा पत्नीकेँ से थोड़े भेटल हेतैन। प्रश्नो तँ प्रश्न छी। चौबिसो घन्टाक दिन-रातिमे पति-पत्नीक रूपमे गप-सप्प करैत बितैबते छी मुदा जीवनक दशा-दिशा कि अछि ओ दुनियाँक संग केना संग-संग चलत, परिवारक पहचान केना बनत तइ बुझै-करैमे केतेक समय लगबै छी? जाबे तक परिवारक पहचान नहि बनत; ताबे तक समाजक पहचान केना बनि सकत। मुदा परिवारक जे रूप-रेखा बनि

चुकल अछि ओ तँ सोल्होअना समाजक संग घटित भइये रहल अछि जे मुण्डे-मुण्डे विचारक भिन्नता बढ़ि रहल अछि। परिवारक पहचान तँ परिवारक विचारधाराक संग चलैए, तैठाम पति-पत्नीक बीच सेहो एतेक दूरी बनि गेल अछि जे हर काज (पारिवारिक) मे दुनूक बीच बाधा ठाढ़ होइते अछि। एक गोरे 'हँ' कहबै दोसर 'नहि।' एहेन परिस्थितिमे केना चलि पाएब...। जखन कि बिआहक समय सासुर जेबाकाल–माने विदा होइ काल–एक दिस माता-पितासँ लऽ कऽ समाजोक लोक राम बना मिथिलाक गीत गबैत जनकपुर (सासुर) विदा करै छैथ; तँ दोसर दिस जनकपुरक–माने सासुरक–सासु-ससुरक संग समाजोक दाइ-माइक संग गणमान्य–ऋृषि-मुनी–लोकनिक आसिरवचन सेहो भेटते अछि जे 'सीता-राम' बनि दुनू जीवन बास करत ...।

वौआइत मनकेँ; जहिना कृष्ण पाँचो घोड़ाक मुखारी एक्केबेर काबूमे करैत, खिंचलैन तहिना अपनो वौआइत मनकेँ खिंचैत दोसर मन कहलक-

"बुड़िवान कहीं-के! एतबो ने होश भेलैन अछि जे विचारसँ पत्नीकेँ काबूमे रखता।"

एकाएक मन बदैल गेल। जहिना बेंटछुट्ट खुरपी हँसुआ वा कोनो औजारेक (अस्त्रक) कोनो मोल माने काजक आगू नहि रहि जाइत अछि; तहिना ने अपनो भेल छी। जखन पहिल-पहिल बेर दुनू परानीक भेँट सासुरमे भेल तखन अपरिचित रहितो, मनमे एक-दोसरक जिनगीक प्रति केते सिनेह जागल छल, जीवनक चक्रमे ओ जेमहर भँसि गेल हुअए, मुदा अपरिचितक संग केते सिनेह आ जीवनक प्रति आकर्षण बढ़ि गेल छल; मुदा आइ ओ सभ जेना विर्ड़ोक भौकमे उधिया गेल। ने पत्नीक ओ रूप-रंग रहल आ ने चेहरा सोझमे रहल आ ने ओ सिनेह-भाव रहल। आइ जँ ओ सिनेह आ सिनेहिल कर्तव्य ओहन पेने रहितौं तखन ने से होइत, से तँ भेल नहि..! पानि मिलल मक्खन जकाँ मन घोर-घोर भइये रहल छल।

मुदा एते तँ होश आबिये गेल जे सिनेहसँ जहिना दुनियाँ सिनेहिल बनैए तहिना कुसिनेहसँ दुनियाँ दूर सेहो हटिते अछि। मन बेकाबू जकाँ उधियाए लगल; मुदा दोसर जे होशगर मन छल ओ उधियाएल मनकेँ काबू करैत अपन आइसँ नव जीवनक नाओं लैत बाजल-

"जखने जागी तखने परात होइए। नाओं लैत, जे समय बीत गेल; ओ बीत गेल, मुदा जे बँचल अछि ओकरा हम सभ किए ने संगी बनि माने विचारो आ काजोमे संग भऽ अपन परिवारो आ अपनो परिचय दुनियाँकेँ दिऐ।"

पत्नीक भीतरक मन भलेँ जरल किए ने होनु मुदा तत्काल ओ सहमली। सहैमते बजली-

"ऐमे माने विचारो आ काजोमे हम थोड़े कहियो बाधक भेलौं अछि। जहिना अहाँ बुझै छी जे नीक मनुख बनि जीबी तहिना ने हमरो इच्छा अछि।"

ओना, ने पत्नीए आकि अपने अखन धरि बुझि पेने छेलौं जे सोल्होअना अपने दोखटा नहि अछि, समाजो आ परिवेशोक दोख अछि। जे होश जगिते बुझए लगलौं। मुदा जखन कनी-मनी बुझए लगलौं तइसँ पहिने जिनगी ए ससैर कऽ तेतेक निच्चाँ उतैर गेल जे अपनो बुझि पड़ि रहल अछि; मनुखक गति नहि रहल...।

कौल्हुका फीसक आशा सुनि बेटो ससैर गेल छल आ भानस-भात पछुएने पत्नियोँ अकछा रहल छेली। बजलौं -

"जे भेल से भेल, आगू एहेन नइ हुअए तैपर अखनेसँ धियान रखू।"

बजैक क्रममे बाजि गेलौं, मुदा लगले मनमे उठल जे अधला-सँ-अधला काज किए ने हुअए; मुदा केनिहार ओकरा थोड़े अधला बुझि करैए। ओ तँ नीक बुझि करैए, भलेँ फल किए ने अधला होउ। ओ तँ

विचार स्रोतपर–माने जैठामसँ विचारधारा निकलैए तैपर–निर्भर करैए जे हम्मर विचारधाराक स्रोत की अछि। एकमुखी अछि कि पँचमुखी आकि गोमुखी अछि। जहिना रूद्राक्ष होइए तहिना ने मनुखोक अछि। तखन? तखन तँ यएह ने सुगम-सरल आ सुचित्य सुकर्मक दिशा हएत जे एक-दोसराक पूर्ण जिनगीपर पूर्ण रूपेँण दृष्टिपात करैत चली। अपन विचारमे पुन: विचार जोड़ैत बजलौं -

“जहिना धिया-पुता माने अप्पन बाल-बच्चा माने बेटा-बेटी, सम्मिलित सम्पैत अछि, तहिना ने परिवारक सेरो-सम्पैत सेहो अछिए, यएह ने भेल दुनू गोरेक जीवनक मिश्रित रूप। तँए एक दोसरपर सदिकाल धियान राखब सिर्फ जरूरिये नहि अनिवार्य सेहो अछिए, तँए अखनेसँ तत्पर भऽ कऽ धियान रखैक अछि।”

ओना, पहिलुका गप-सप्पक क्रम जे दुनू गोरेक माने पति -पत्नीक बीचक रहल तइसँ जेना नव बात पत्नीकेँ भेटल होनि तहिना मने-मन सुहकारि, मुस्कुराइत बजली-

“भेल तँ अहाँ बाहरसँ घर धरि सम्हारू; हम घरसँ परिवार धरि सम्हारै छी। अपना तँ खेतो-पथार अछि, जेकरा नइ छै, ओ केना हँसैत परिवार चलबैए।”

पत्नीक विचार सुनि अपनो मन कनी जिराएल। बजलौं -

“अहाँ दुनू माए-बेटाक झमेलमे बरदा गेलौं। ज्ञानचन काकासँ भेँट करए विदा भेल रही।”

पत्नी बजली-

“आबे की भेल अछि जाउ, भेँट केने अबियौन।”

आन दिन जेना केतौ विदा होइ छेलौं माने घरसँ बाहर , आ मनमे जे विचार चलै छल ओ प्रवाहित जकाँ नहि छल, किए तँ कोनो वस्तुए आकि विचारे किए ने हौ; मनमे बेर-बेर उठैत रहै छल जे जेकरा-ले वस्तु

कीनब वा आनब ओ मनसँ खुश हएत कि नइ हएत। मुदा आइ से नहि भऽ रहल अछि। जहिना खढ़क एक-एक टुकड़िये किए ने हुअए, मुदा जँ बेकतीगतो जीवनमे आ परिवारोमे अबैत रहत तँ ओ बेक्तियो आ परिवारो समपन्नता दिस बढ़बे करत।

घरसँ निकैलते जेना जबदाह परिवारसँ, अवकास भेट गेल हुअए तहिना मन परपित हुअ लगल। ज्ञानचन कक्काक परिवार मनमे नाचि उठल। केतेक सुन्दर परिवार ज्ञानचन कक्काक छैन। जहिना धाराप्रवाह जकाँ विद्या–सरस्वती–बहि रहल छैन तहिना ने सेर-सम्पैतिक लक्ष्मियोँ छैन। परिवारमे ने किनको करवनो मन मलिन होइ छैन, आ ने करवनो रक्का-टोकी।

ज्ञानचन कक्काक दरबज्जाक आगू पहुँचते देखलौं जे केतौसँ आबि ज्ञानचन काका कुरता निकालि ओसारक चौकीपर रखि रहला अछि। मनमे खुशी भेल जे भने कनी पछुआइये कऽ एलौं। दरबज्जाक लग पहुँचते प्रणाम करैत बजलौं -

“काका, गोड़ लगै छी।”

आँखि उठा कऽ ज्ञानचन काका तकलैन तँ बुझि पड़ल जे काजक बोझसँ भरिसक तड़-बत्तर भेल छैथ। चेहरा उदास मुदा मुँहक रूप हँसमुखे...।

हमरा देखिते ज्ञानचन काका चिन्ह गेला जे जोगिनदर छी। असिरवाद दैत बजला-

“नीके रहह जोगी..!”

असिरवाद सुनि एक मनमे भेल जे अप्पन जीवनक बात पुछिऐन, मुदा अप्पन बात कहैसँ पहिने जँ दोसराक बात सुनी आ पछाइत अपन बात बाजी तँ ओ बेसी प्रभावशाली होइए। तँए चुपे रहलौं।

ज्ञानचन काका बजला-

“जोगी, तेहेन विर्ड़ो स्कूल-कौलेजमे उठि गेल अछि जे एक तँ पनरह-सोलह बर्खसँ दुनू बेटा कौलेजमे पेट बान्हि काज करै छल ; ओहो बन्ने भऽ गेल। तीन दिनसँ दुनू बेकार भेल दरबज्जापर बैसल अछि। ओकरे सभ-ले काज रोपैक जोगारमे गेल छेलौं।”



शब्द संख्या : 2679, तिथि : 21 दिसम्बर 2019

खटसमाद

भिनसरू पहरक चाह रंगलाल काका पीबियो रहल छला आ मने-मन भोरू पहरक, ब्रह्ममुहूर्तक; समीक्षांकण सेहो कऽ रहल छला। अहीक्रममे रंगलाल कक्काक नजैर अपनो आ समाजो दिस दौड़लैन कि रामायणिक हिजरा (किन्नर) पर पड़ि गेलैन। मोन पड़िते प्रश्न उठलैन जे जे हिजरा रामक संग अयोध्यासँ विदा भेला आ गंगापार भेला पछाइत; जखन राम गौआँ-समाजकेँ धुमेलैन, ओही समयसँ ने हिजरो सभ अपन मान-सम्मान रखैत अड़ि कऽ ठाढ़ रहला; जे जखन हमरा सबहक सम्बोधन राम नइ केलैन से अपमान भेल की नहि; जइसँ जखन राम लंका विजय कऽ घुमला तखनो ओइ हिजरा सभकेँ ओहिना ठाढ़ देखलैन; जेना जेबाकाल देखने रहैथ...। आब कनी विचारियौ जे ओ हिजरा सभ रामसँ कम तपस्या अपन मान-सम्मान-ले बितौलैन? ई दीगर बात जे अखनो समाजमे नर्तक-नर्तकीक रूपमे किए ने ओ एक स्वस्थ मनुखसँ अधिक श्रम करैत हुअए...। तही बीच रंगलाल काकाकेँ पोता आबि कहलकैन-

“बाबा, सुखलाल काकाकेँ परमोशन भेलैन, आब कौलेजसँ युनिवर्सिटीक काज-भार सम्हारता..!”

रंगलाल काका धियानसँ रामलखन–पोता–क बात सुनलैन मुदा बजला किछु ने। ओना, बाबाक प्रश्नक प्रतीक्षामे रामलखन थोड़ेकाल ठाढ़ रहल जे किछु दोसर बात पुछता तँ सेहो कहबैन; मुदा जेना चिचोर-

केशौरक पन्ना भेटने खुननिहार निचेन हुअ लगैए जे अही पन्नाकेँ पकड़ने फड़ तक पहुँच जाएब; तहिना रंगलाल काकाकेँ सेहो भेलैन। कथा-उपन्यास हुअ आकि कविता-महाकाव्य; पढ़निहारक नजैर शीर्षक पेबिते जहिना विषय-वस्तु दिस दौड़ पड़ैए, गजेरी जहिना भरल चीलममे दम मारि ओकरा रसकेँ–माने धुआँकेँ–मुँहमे गुलगुलबए लगैए; तहिना रंगलाल काका अपन पोता-मुँहक विचारकेँ सुनि मने-मन गुलगुलबए लगला।

रंगलाल काका अपने समाचार-पत्र नइ पढ़ै छैथ; मुदा रामलखन एक नहि, अनेको अखबार प्रति दिन पढ़ैए। अनका जकाँ नहि जे बेपारी अखबार कीनलौं आ भरि दिन बनि याँ-बेकालक रंग-बिरंगक विज्ञापन देखैत रहलौं...। रामलखनक नियमबद्ध कार्यक्रम अछि जे रंगलाल काकाकेँ चाह पीबैकाल; खास कए अपना समाजक जँ कोनो समाचार अखबारमे रहल तँ ओ प्रतिदिन बाबाकेँ जानकारी दैत रहल। जइ दिन कोनो समाचार नहि रहल; तइ दिन ओहिना आबि रामलखन बाबाक आगूमे ठाढ़ भऽ जाइए जइसँ रंगलाल काका बुझि जाइ छैथ जे सुनै-जोग कोनो समाचार नइ अछि।

सुखलालक समाचार सुनि रंगलाल काका अपन मनेमे तहिया कऽ रखि अपन विचार दिस बढ़ला कि पुन: हिजरा सभपर मनक नजैर चलि गेलैन। मुदा गेलैन दोसर रूपमे। दोसर रूप ई जे बेकतीगत जीवनमे सेहो आ सामाजिक जीवनमे सेहो; एना होइते अछि जे गतिहीन भेने बेक्तियो आ समाजो ओहिना हिजरा जकाँ भऽ जाइए। बी.ए. पास केलौं, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति सबहक जीवनमे अबिते अछि, जेकरा जीवनक मुख्य आधार सेहो कहले जा सकैए। तँए कारण जे होउ, मुदा पढ़ाइ छोड़ला पछाइत जँ ओ ने एको पाइक पोथी कीनत आ ने एको घन्टा पढ़त; तखन ओ बी.ए.क डिग्रीधारी हिजरा जाएत कि नहि? तहिना समाज सेहो अछिए। जे गाम जेते दूर तक साए बर्ख पूर्व वा पचास बर्ख पूर्व धरि आबि गेल अछि आ पछाइत गतिहीन भऽ गेल; तखन ओ

समाज गंगाकातक हिजरा जकाँ बनत कि नहि?

अपन विचार जेना रंगलाल कक्काक मोड़ लेलकैन तहिना मोड़ाइत नजैर पुन: सुखलालपर गेलैन। सुखलाल गामक ओहन लोक छैथ जे कौलेजमे नोकरी करै छैथ। नीक दरमाहा सेहो पबै छैथ आ गामक वृद्धजन; माने हुनकासँ उमेरगर, 'पण्डित' कहै छैन, संगतुरिया सभ 'पण्डित भाय' कहै छैन आ कम उमेरबला कियो 'पण्डित काका' तँ कियो 'पण्डित बाबा' सेहो कहिते छैन।

स्कूली शिक्षा, माने स्कूलमे नाओं लिखा नियमित आबि -जाए पढ़ब; तँ सुखलालक मिडिले स्कूल तक रहलैन, मुदा डिग्री पी.एच-डी. तकक अर्जन कइये नेने छैथ। जइसँ कौलेजमे प्रोफेसरी भेलैन। डिग्री हाँसिल करैमे सुखलालक ससुरक नीक योगदान रहलैन। खाएर जे रहलैन, सुखलाल बापक असगरुआ बेटा; तहूमे चारि बेटीक बीचक सन्तान रहने ने माते-पिता पढ़ै-लिखै दिस झुकौलकैन आ ने सुखलालेकेँ अनकर देखसी लागल। अनकर देखसीक माने भेल समाजक आन-आन संगतुरियाक स्कूल जाइक देखौंस।

सुखलाल जखन एगारह बर्खक भेल आ बिआह करै-जोकर हुअ लगल; तखन समाजक चलैन देख–माने समाजमे जे पढ़ल-लिखल लड़काक अभाव रहने मांगो नीक रहल आ लेनो-देन नीक रहल–बेपारीक बुधि मातो-पितामे आ सुखलालोमे जगलैन। ओना, लाभक बुधि रहनौं दुनू बापूतक विचार दू दिस बढ़ल। सुखलालक विचार बढ़ल जे ; जे हवा-पानि, माने पढ़ल-लिखल आ बिनु पढ़ल-लिखल लड़काक बीचक तेहेन भऽ गेल अछि जे जहिना बिआह नइ भेने केते लोक स्थान सबहक महंथ भेल तहिना भरिसक ने भऽ जाए। तँए नीक हएत जे पान साल बिलम्मे सही, जखन स्कूलमे नाओं लिखा पढ़ए लगब; तखन पढ़ुआ बुझि बिआहो हएत आ नीक लेनो-देन आ नीक कनियोँ भेटबे करत। सुखलालक माता-पिताक विचार दहेज दिस बढ़लैन। किए तँ देखा-देखी

ने दुनियाँ चलैए; जे पढ़ल-लिखल अछि ओकरा लाखक-लाख नगदो आ वस्तुओ-जात तेतेक भेटैए जे घर भरि जाइ छइ। मुदा दोसर दिस अहूपर नजैर पड़ैन जे एहनो लोक सभ तँ अछिए; जेकरा उन्टे–माने लड़केबलाकेँ लड़की प्रति नगद-नारायण दिअ पड़ैए। से की कोनो एक-जाति आकि एक वर्ग-समूह टा मे अछि। ओ तँ सहरगंजा अछि; सभ जातिमे अछि, सभ वर्गमे अछि। मनक विचार माने सुखलालक माता-पिताक विचार; अहीठाम आबि अँटैक गेलैन। जइसँ अन्तो-अन्त विचार केलैन जे सुखलालकेँ स्कूलमे नाओं लिखा पढ़ाएब।

संयोग बनल, मातो-पिताक विचार आ सुखलालोक विचार भेल जे पढ़ै-लिखैक की कोनो उमेर देखल जाइए; तखन तँ बच्चामे ऐ दुआरे नाओं लिखा स्कूलमे पढ़ौल जाइए जे अखनेसँ माने बच्चेसँ जँ ज्ञानक दिशा पकड़ौल जाएत तँ समैयोक आ अपन विचारोक संग आगू बढ़ैत, एक दिस ग्यानियोँ बनत आ दोसर दिस ज्ञानबला जिनगी सेहो जीत। जखने लोक ज्ञानी बनि ज्ञानक बाट पकैड़ चलत; तँ वएह ने सज्ञानी भेल जे मनुखक मुक्तिक मार्ग पकैड़ मुक्त हएत।

ओना, लोअर प्राइमरी स्कूलमे सभसँ नमगर-छड़गर सुखलाले छल तँए जहिना सिपाही-चौकीदारकेँ देहक लम्बाइ-चौड़ाइ नापि बहाली होइए; तहिना सुखलालोक बहाली स्कूलक मुनीटरमे भऽ गेल। जइसँ स्कूलमे सुखलालक दब-दबा सेहो बढ़िये गेलइ। अपनो सुखलाल बिआहक लोभे आकि बुधिक लोभे, खुब मनसँ पढ़ै पाछू मेहनत करए लगल जइसँ तेज-विद्यार्थीक रूपमे गणना हुअ लगलै।

मिडिल पास करैत-करैत सुखलाल धुरझाड़ किताब पढ़ौ लगल आ लिखौ लगल। हिसाब-बारी सेहो धुरझाड़ जोड़ए-घटबए लगल। जेकरा देखि केते लोककेँ धोखो-होइ जे सुखलाल मिडिले नहि; आइ.एस-सी. पास जरूर अछि। धोखो-धोखीक प्रचारक अपन रस्ता अछिए। कौलेजक विद्यार्थी कहि सुखलालक प्रचार बिआह-जगतमे पसैर गेल।

जेकरा कम्मो आए-उपाए अछि ओहो अपन बेटीक बिआह नीक लड़काक (पढ़ल-लिखल) संग करैये चाहैए। जे सुखलाल बिआहक बजारमे सस्ता माल (सौदा) छल ओ महग माल बनि गेल।

तेसलिया ऐतचार–तीन सालक अतिचार–अबैक ऐगला लगन–बिआहक–पड़ि रहल छल, जइसँ अगुआएल-पछुआएल बर-कन्यॉक माने लड़का-लड़कीक माता-पिता–माए-बापक विचारमे हड़विड़ो उठल जे जँ लगन हुसि जाएत तँ समाजमे बदनाम हेबाक सम्भावना बढ़ि जाएत।

दिनानाथकेँ सेहो ओहन बेटी भऽ गेलैन जे दू सालसँ बिआहक विचार करैत आबि रहल छला मुदा गर नइ लगने पछुआएल छेलैन। दिनानाथ विश्वविद्यालयक जवाबदेह अफसर छैथ। अपना ने लड़का चिन्हैक लूरि छैन आ ने ओते पलखैत छैन जे ऐ पाछू पड़ता। बुझले अछि जे जैठाम गाए-बरद-महींस गाम-गामक खुट्टापर अछि तैठाम जँ कीनए जाएब तँ सत्तरह गाम घुमब तखन गोटे पसीन हएत आ कीनब; तहिना लड़कोक अछिए। मनुख तँ सहजे मनुख छी, सत्तरहक जगह एकाबनो गाम घुमए पड़ि सकैए। ओना, दिनानाथक आमदनी तेहेन छैन जे एको क्षण छोड़ब; लक्ष्मीसँ बिमुख हएब हेतैन।

अतिचारक हवा बहने घटक सबहक अभाव सेहो भइये गेल अछि, किए तँ संख्यामे कम मुदा काजमे बढ़ोत्तरी भइये गेल अछि। जइसँ दरवारी घटकक अभाव सेहो बेसियाएले जा रहल छल।

जाबे धरि दिनानाथ ऑफिसमे रहै छला; ताबे धरि लक्ष्मी-सरस्वतीक बीच खेलाइत रहै छला, जइसँ बेटीक बिआह मनसँ (धियानसँ) हेरा जाइ छेलैन, मुदा जखन डेरा अबै छला आ पत्नीक हकिमानीक चाबुक लगै छेलैन आ बेटीकेँ सोझहामे ठाढ़ देखै छला; तखन छाती सिहरए लगै छेलैन। मुदा मन-धियान काजसँ हटने; ओहिना

सरपट भऽ जाइ छेलैन जेना बेटी-बिआहक कोनो चिन्ते ने छैन। ओना, पाइ-कौड़ीक कमी नहियोँ रहने सेहो बेटी-बिआहक लेल डेग नहि उठि पेब रहल छेलैन। जखने लोक अपन काज दोसरक सिरे करए चाहैए तखने किछु-ने-किछु बेवधान उपस्थित होइते अछि।

सालक अन्तिम लगनमे दिनानाथ; अनके देखल-सुनल लड़काक विचार मानि प्रभातक बिआह सुखलालक संग तँइ कऽ लेलैन।

बिआहक पण्डालमे सुखलालकेँ दिनानाथ हिया कऽ देखलैन तँ नीके बुझि पड़लैन। खुशी-खुशीसँ बरियातीक स्वागत केलैन।

बरियाती वापस भेल। परिवारमे आएल पाहुन-परक सभ रहबे करैन। जइसँ हो-हा भरि दिन चलबे कएल। साँझू पहर जखन सभ निचेन भेला तखन दिनानाथ सुखलालक परिचय अपने मुहेँ अपने काने सुनए चाहलैन। यएह सोचि दिनानाथ सुखलालकेँ दरबज्जापर बजा पुछलखिन-

“शैक्षणिक योग्यता की अछि?”

सुखलालक मन मस्त छेलैहे; किए तँ बिआह भइये गेल छेलै। भेल बिआह मोर करबह की; मनमे छेलैहिये। निर्भिक होइत बाजल-

“मिडिल पास छी..!”

दिनानाथक मन तत्काल जमाइक मुँहक बात मानैसँ इन्कार केलकैन। इनकारक कारण भेलैन जे एक दिस चेहराक रूप-रंग देखैथ आ दोसर दिस शैक्षणिक योग्यता; तँ झुझुआन बुझि पड़लैन।

दोहरा कऽ पुछलखिन-

“अपन प्रधानाचार्यक परिचय दिअ तँ..?”

मनमे ई रोपि दिनानाथ बाजल छला जे सिलसिलेवार बजने जानकारी भइये जाएत। तैसंग मन ईहो गबाही देलकैन जे आब कि पुरना विचार समाजमे अछि जे जमाए मुँह दाबि कऽ बजता। आब तँ गछल

वौस नइ देबैन तँ मुँहेँपर थूको फेकता आ गरियेबो करता।

प्रधानाचार्यक नाओं सुनि सुखलाल अपन मिडिले स्कूलक भूमिका तेना बन्हलक जे दिनानाथकेँ बुझि पड़लैन जे घन्टो भरिमे मिडिल स्कूलसँ आगूक विचार औत कि नहि औत। यज्ञ काजक आँगन छी; तैपर आगूक सिरादार अपने छी, तँए अनेको रंगक काज सिरपर सवार अछिए। विचारकेँ आगू बढ़ैसँ रोकैत दिनानाथ बिच्चेमे बजला-

“अहाँकेँ बुझल हुअए वा नहि; मुदा हम युनिभर्सिटीक जवाबदेह अफसर छी, अखन अपना हाथमे कौलेज-सँ-युनिवर्सिटी धरिक काज अछि। लगले सिरे केतौ बैसा देब।”

सुखलाल बाजल-

“अपने तँ पितातुल्य छी; झूठ किए बाजब।”

जमाइक बात सुनि दिनानाथ मानि गेला जे मिडिले पास छैथ। जइसँ माथमे जहिना फुलही थारीमे कोनो भारी चीज खसने झनाक-दे उठैए; तहिना दिनानाथक मनमे उठलैन। मुदा आब उपाइये की अछि। जे कपारमे विधाता लिख देलैन ओ लोकक कोन बात जे विधाता खुदो अपने नहि बदैल सकै छैथ। ओना, दिनानाथक मन अधमरू साँप जकाँ बेसी नहि छटपटेलैन; किए तँ शासनक ऐगला-पैछला दुनू डोरक बात बुझले छैन। बहन्नो भेटिये गेलैन जे जँ कियो बुझबो करता जे जमाए बेरोजगार भेल छैथ; केतौ गर लगा दियौन। कहबैन जे जमाएकेँ केना कहबैन जे नोकरी करू।

निर्णायक दौड़मे पहुँच दिनानाथ विचार केलैन जे जमाएकेँ मिडिलसँ एक्केबेर मध्यमाक सर्टिफिकेट पहिने उपलब्ध करा देबैन। पछाइत एगलो किलास सभमे तहिना करब जइसँ जमाइक उमेरोक भरपाइ भऽ जेतैन आ आठ-दस बर्ख बीतैत-बीतैत पी.एच-डी.क डिग्री सेहो उपलब्ध करा देबैन। पछाइत कोनो कौलेजमे धड़ा देबैन। रहल

तैबीचक काज; तेकर जोगार करैक अछि।

दिनानाथक मन सेहो थीर भऽ गेलैन जे अखन अपनो बारह-तेरह बर्ख नोकरी अछिए। एहनो तँ भइये सकैए जे गोटे परमोशन आरो जँ भेल तखन तँ आरो असान काज हेबे करत।

दिनानाथ बजला-

"आब अपनेकेँ एक नव परिवारक बीच आगमन भऽ गेल; तँए जीवनमे पैछला किछु क्रिया छोड़ौ पड़त आ ऐगला किछु क्रिया पकड़ौ पड़त।"

स्वीकार करैत सुखलाल बाजल-

"हँ से तँ हेबे करत। जे समैयक मांग होइए ओ तँ लोक कोनो धरानी पुरैबते अछि।"

सुखलालक बात सुनि दिनानाथक मनमे तुष्टिक आगमन भेलैन। आगमनो केना ने होइतैन; जँ बेटा आ जमाए माता-पिता वा सासु-ससुरक विचारानुकूल चलब स्वीकारि लिअए तँ ओइसँ आशा कएले जा सकैए। दुनियाँ भलेँ प्रतिकूल किए ने हुअए वा प्रतिकूलक हवा किए ने पसारैत हुअए; मुदा माता-पिता आ सासु-ससुर तँ अन्तो-अन्त अनुकूल रहिते छैथ। जे अनुकूल भेल वएह ने आशो भेल। ओना, प्रतिकूलोकेँ जीबठगर लोक अनुकूल बनाइये लइ छैथ, मुदा तइले तेहेन जीबठता वा जीबठपन चाही। सम-विषम परिस्थितिक बीच दिनानाथ पड़ि गेला। मुदा संजोग बनल जे तही बीच सुकन्याँ आबि कहलकैन-

"दोसर साँझ चढ़ि गेल आ अखन तक अहाँ राम-कथामे लगल छी। छोड़ू आब गप-सप्प। साँझ-मंगलक समय उनैह रहल अछि, गीतिहारि सभ सेहो बैसल छैथ।"

पत्नीक आदेश जेते दिनानाथकेँ नइ उसकौलकैन तइसँ बेसी अपन मन उसकलैन जे असगरे एकान्तमे बैस जमाइक विचार नीक जकाँ करब

बेसी कारगर हएत। एते तँ बिसवास भइये गेल अछि जे जमाए बजै-भुकैमे फरकोर छैथ।

दिनानाथ तँ दरबज्जापर बैसले रहला; मुदा जमाए सासुक संग आँगन विदा भऽ गेलैथ। सुकन्याँक मन काल्हिये; जखनसँ जमाइक हाड़-काठ देखलैन, तखनेसँ तर-ऊपर हुअ लगलैन जइसँ मनमे खुशीक भरमार लगले छेलैन।

पत्नीकेँ आँगन दिस विदा होइत पाछूसँ दिनानाथ बजला-

“एक गिलास कॉफी आ दूटा बिस्कुटक संग जल नेने आएब।”

काजक आँगन; तँए सभ कथुक ओरियान रहबे करैन, जमाएकेँ गीतिहारिक बीच पहुँचा, सुकन्याँ सभ किछु नेने दरबज्जापर पहुँचली।

असगरमे पत्नीकेँ देखि दिनानाथक मनमे उठलैन जे अखन जँ अपन पतिपन नइ राखब, माने जमाइक परिचय; तँ जिनगी भरिक दोखी बनल रहब, तँए अपन जे जानकारी भेल ओ कहि दिऐन। यएह सोचि दिनानाथ बजला-

“जाबे खाइ-पीबै छी, ताबे ठाढ़ रहू। बीचमे एकटा विचारो कहब।”

पतिक बात सुनि सुकन्याँ ठमकली। मुदा मनमे आँगन-घरक काज तेतेक रहैन जे पतिक विचारकेँ काटैत बिच्चेमे बजली-

“अँगनामे दुनियाँ भरिक धुमसाही काज पसरल अछि; आ अहाँ गप-सप्प करए कहै छी..!”

पत्नीक बात सुनि दिनानाथक मनमे उठलैन जे तत्काल इशारोमे किछु कहि दिऐन। मुदा फेर लगले भेलैन जे पत्नी अखन चौचंग छैथ, किछु कहबे करबैन आ सुनबे ने करती; तखन कहनाइये की भेल। चुपेचाप बैसल दिनानाथ एक-एक घोंट-के कॉफियो पीबैथ आ जमाइयक एक-एक घाटक बाटो ताकए लगला। तैबीच सुकन्याँ ससैर गेली।

पान खेला पछाइत जखन पान मुँहमे फुलेलैन; तखन दिनानाथक मनमे रंग-बिरंगक घाट सभ घटा जकाँ उमड़ए लगलैन। मन कहलकैन-नारीक (नब्जक) एते गतिक जानकारी तँ भइये गेल जे जहिना जमाए हड़गर-कटगर छैथ तहिना बजै-भुकैमे सेहो फरकोर छथिए। गुणक खान भइये गेला, खाली गुणक गुणा-भाग बुझबैक जरूरत अछि।

आशा पेब दिनानाथक मन प्रफुल्लित भेलैन। मुदा घटल घटा जकाँ मन जहाँ मुड़लैन कि अपन समाजक–माने पढ़ल-लिखल समाजक–विचार मनमे उमैड़ पड़लैन। उमैड़ ई पड़लैन जे जे कियो मिडिल पास जमाइक बात सुनता ओ सोझहामे भलेँ नइ किछु बाजैथ; मुदा परोछमे बेकुफ कहता की नहि? काटल रस्ता लग पहुँचल बटोही जकाँ दिनानाथ हिया कऽ आगू तकलैन।

एक दिस बेटी-जमाइक उग-डुम करैत भविस देखैथ; तँ दोसर दिस अपन शक्ति अजमा कऽ देखैथ जे जेहेन योग्यता जमाइयक अछि, ओ तँ चपरासियोमे धक्कमे-धुक्का करैबला अछि। हवा तेहेन बनि गेल अछि जे मिडिल पास चपरासीक बहालीमे सेहो एम.ए.; पी.एच-डी. तकक मुड़ खसैए...।

धोबिघाट जहिना अनका-ले गन्दगीसँ भरल घाट किए ने हुअए मुदा धोबीक लेल तँ वएह गंगा घाट छी; जैपर ओकर जीवन ठाढ़ छइ। दिनानाथ तँ सहजे अपनो ओहने घाटक आचरणक जिनगी बनौने छैथ, तँए ओ घाट किए ने गंगाघाट बुझि पड़ितैन।

अनुकूल जीवनक घाटपर बैस दिनानाथ जमाइक विषयमे सोचए लगला। कहब जे तुलसी दासक चित्रकूट घाट किए ने मोन पड़लैन? रामायण भलेँ दिनानाथ नहियेँ पढ़ैत होथि मुदा रेडियो स्टेशनसँ रामायण पाठ सभ दिन सुनिते छैथ...। एकाएक दिनानाथ निर्णायक मोड़ लग पहुँच गेला।

निर्णायक मोड़मे प्रवेश करिते दिनानाथक मनमे सक्कत विचार उठलैन जे सिंह दरबज्जा छोड़ि किए ने पैछले दरबज्जाक पछुआरसँ बेटी-जमाइक जीवनकेँ प्रवेश करौल जाए, दुनूकेँ संगे-संग सर्टिफिकेट उपार्जित करौल जाए। जुग की कोनो सद्धत्तिक रहल, ओ तँ कागजी बनि गेल अछि। सभसँ पहिने जमाएकेँ खटसमादी बना दिऐन।

खटसमादी भेल- छबो दर्शनक संवादक जानकारी।

दिनानाथक मन मानि गेलैन जे जखने जमाए खटसमादी बनि समाजमे पहुँचता तखने विशाल जनसमूह भेटबे करतैन। आ अपने इम्हर युनिवर्सिटीक लिंक लगा देबैन। पाँचोटा जँ सर्टिफिकेट कीनिनिहार प्रति दिनक हिसाबसँ भेटैत गेलैन तँ नीक कुरसीक जे दरमाहा अछि, तेते कमाइ भइये जेतैन। तीस बर्खसँ हवा बहले अछि जे दस लाख शिक्षकक बहाली अछि, तँए बजारक रूखि सेहो अनुकूले अछि...।

माटिक तरक लाल आकि कोयला तरक हीरा भेटने जेना मन खुशी होइ छै तहिना दिनानाथक मनमे सेहो भेलैन। जमाएसँ भोरमे निचेनसँ गप-सप्प करैक विचार जागि गेलैन। जहिना कोनो काजक रूप-रेखा मनमे कुश-कल्पित भेने चेहरामे हरितपन आबि जाइए तहिना दिनानाथकेँ भेलैन।

भिनसुरका चाह पीबैकाल दिनानाथ सुखलाल–जमाए–केँ संग चाहो पीबैक आ गपो-सप्प करैक विचार मनमे रोपि नेने छला। यएह सोचि भोरमे चाहे पीबैकाल सुखलालकेँ बजौलैन। ओना, सुखलाल बेड-टी पीब नेने छल मुदा चाहो तँ चाह छी। जखन लोक चाह नइ पीबै छला; तखन पुस्त-दर-पुस्त नइ पीलैन मुदा जखन पीबए लगला तखन घर-घराइन पीबे करै छैथ। जइसँ बेठेकान भइये गेल छैन। बेठेकान ई जे केते बेर चाहो बनत आ केते बेर पीबो करब। पानियोँसँ बेसी लोक चाहे पीबए लगल छैथ। ओना, पानि तँ ठेकानि कऽ लोक पीबै छैथ; मुदा चाहक तँ

कोनो ठेकाने ने रहल छैन। चाह बिस्कुटक संग सुकन्यौं दिनानाथ लग पहुँचली आ पाछूसँ सुखलालो पहुँचल।

ससुर-जमाएकेँ एकठाम देखि सुकन्योंक मनमे भेलैन जे किए ने किछु काल बिलैम दुनू गोरेक मुँहक बात सुनी , तँए अँटैक गेली। पत्नीकेँ लगमे ठाढ़ देखि दिनानाथक मनमे खौंझ उठलैन। खौंझ ऐ दुआरे उठलैन जे काल्हि साँझमे जखन विचार करैक समय छल तखन कहलो पछाइत नइ रूकली मुदा अखन ओ बेर निकैल गेल तँ अपने मने सुनए चाहि रहली अछि...। खौंझो तँ उचिते छेलैन; किए तँ कोनो काज करैसँ पहिने जँ निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि ओइ काजकेँ निहारि लेने करैमे सुगमता हेबे करैए। से तँ भेलैन नहि।

दिनानाथ बजला-

“एते दिन अहाँ-हमरा बीच (माने बिआहसँ पूर्व) कोनो सम्बन्ध नहि छल, मुदा आब तँ अहाँ पुत्र तुल्य भेलौं, तँए अपन जे जीवनानुभव अछि; ओइमे अहूँक जीवनक कल्याण निहित अछिए।”

मुड़ी डोलबैत सुखलाल बाजल-

“हँ, से तँ अछिए।”

दिनानाथ-

“मानि गेलौं जे अहाँ मिडिले पास छी, मुदा पढ़ल-लिखल होइ वा नइ होइ, पढ़लो-लिखलमे कम पढ़ल होइ आकि बेसी पढ़ल होइ, मुदा जीवनक जे अढ़ाइ-साँङ्गि अछि ओ तँ सबहक कपारपर अछिए।”

सुखलाल-

“हँ, से तँ अछिए।”

दिनानाथ-

“अहाँकेँ एकबद्दू भेने काज बाधित हएत माने जँ नोकरिये करब

आ सर्टिफिकेट उपार्जन नहि करब तखन तँ जिनगी एतै अँटैक जाएत, तँए अहाँकेँ दुबटिया चालि पकैड़ चलए पड़त। ”

दिनानाथक किछु विचार सुखलाल बुझबो केलक आ किछु नहियोँ बुझलक। मुदा मुड़ी डोलबैत बाजल-

“अपने तँ पितेतुल्य टा नहि, गुरुतुल्य सेहो छीहे। तँए जे किछु विचार अपने देब ओकरा सिरोधार्य करैत आगू बढ़ैक परियास करबे ने हम्मर भविस निर्धारित करत।”

विचार मंथनसँ सोझहे जीवनमे उतैर दिनानाथ बजला-

“अहाँकेँ मिडिलेक प्रमाणिक योग्यता अछि, अही बेर मध्यमाक रजिष्ट्रेशन करा फार्म भरि दियौ। पास करबे करब , तैसंग जीवनक चारि बर्खक बचाउ सेहो हएत।”

एक दिस मैट्रिकक समकक्षता आ दोसर दिस जिनगीक चारि बर्खक टपान देखि सुखलालक मन बिहुसि गेल। बिहुसिते बाजल-

“जेना-जेना अपने आदेश देब; तेना-तेना हमहूँ करैले तैयार छी।”

एकटा सहयोगी भेटने जहिना केतेको पुरुष महापुरुष बनला; तहिना सुखलालक जिनगीक उठाइन होइक सम्भावना बनल।

दिनानाथ बजला-

“आठ-नअ बर्खमे पी.एच-डी. तकक डिग्री आ जेते एक अफसरक दरमाहा छैन, ओते अहाँक कमाइ सेहो हएत।”

दिनानाथक बात सुनि सुखलालक मन भदवरियाक ओइ धार जकाँ जे सालक अधिकांश मास सुखाएल रहैए, आ बर्खाक पानि पीबिते उधिया जाइए; तहिना भेल। बाजल-

“रास्ता?”

दिनानाथ- “अखन बारह-तेरह बर्ख नोकरी अपन शेष अछि। तइ

बिच्चेमे अहाँकेँ हम अपना-जोकर बना देब। भेल तँ गीताक एकटा श्लोक रटि लेब आ रामायणिक एकटा दोहा, एकरे जँ ढंगसँ खटसमाद करब सीख लेब तँ जिनगीक उद्धार हेबे करत।"

सुखलालकेँ कौलेजक प्रोफेसरीसँ युनिवर्सिटीमे परमोशन भेल, यएह समाचार रामलखन रंगलाल काकाकेँ सुनौने छेलैन। समाचार सुनि रंगलाल कक्काक मन सुखलालपर नाचि उठलैन। नचिते आत्म-स्वरमे आवाज निकललैन- 'वाह रे मनुखक जीवन..!'



शब्द संख्या : 2909, तिथि : 27 दिसम्बर 2019

जीबठपन

दुनियाँमे एलौं तँ जीबए पड़त..! भगवानक बाढ़िसँ आक्रान्त गामक बशिन्दा तुष्टलाल कक्काक मन सत्तैर बरख बितौल धरतीपर एक दिस अपन शेष दिनक जिनगी देखि रहल छेलैन तँ दोसर दिस बाबाक लगौल कलम-बागमे बम्बइ, गुलाबखाससँ लऽ कऽ मालदह-कलकतिया, राइर-फैजली आमपर सेहो नाचि रहल छेलैन। नासी बाढ़ि सभकेँ नास कइये देलक..! गाछी-कलम जीरो डिग्री बैलेन्समे पहुँच गेल अछि..!

गाछी-कलमसँ तुष्टलाल कक्काक मन उचटए लगलैन। मुदा लगले उचटल मनकेँ रोकि सुचटल मन कहलकैन-

“यएह छी जीवनक जीबठपन जे जीवनेसँ हारि मानि लेब तखन बाँकीए कथी रहत। जखन किछु बाँकीए ने रहत तखन जीवने की..! हारिये-जीतक बीच ने जीवनो अपन जिद्दपनक संग हारल जिनगियो अछि। जेकरा देखि एक नहि हजारो बेर लोक जीतक आशाक संग उठि-उठि ठाढ़ होइए... ।”

लगले तुष्टलाल कक्काक सुचटल मन आगू बढ़ि अपन हारपनक पनिपत पकैड़ जड़ि दिस बढ़लैन तँ देखलैन जे हम हारल कहाँ छी, मारल छी। हारल तँ ओ भेल जे लड़ैत-लड़ैत–संघर्ष करैत-करैत–हारैए, हमरा संग तँ से नहि भेल। हमरे कि सौंसे गामेक, सौंसे गामेक कि सौंसे इलाकेक यएह दशा भेल अछि।

ओना, तुष्टलाल काका जीवनक सत्तैर बर्खक बीच केतेको बेर एहेन-एहेन परिस्थितिसँ गुजैर चुकल छला। कहियो मनमे हारब नहि

आएल छेलैन। प्रकृति-प्रकोप कहियौ कि ईश्वरीय सत्ता कहियौ आकि शक्ति-सरूप शक्ति कहियौ; ओकरे अंश ने जीवनो-जगत छी, तखन हार-जीतक प्रश्न केतए अछि। सर्वविदित अछि जे दैवीय शक्तिक आगू जीव-जगत तुच्छ अछि।

तुष्टलाल कक्काक मनमे जे बाढ़िक बेरबादीक चलैत हारब पकैड़ नेने छेलैन; ओ मनसँ निरमूल निकैल गेलैन जइसँ हारबक जे विचार तरे-तर विचड़न करैत रहैन ओ कतबाहि पकैड़ लेलकैन।

हार-जीतक बीच तुष्टलाल कक्काक जीवन ओहिना ठाढ़ भऽ गेलैन जेना कनियोँ मन-मलानि छैन्हे नहि। पोखरिक शान्त-असथिर पानि जकाँ अपनो मनक विचार असथिर भेलैन। असथिर होइते जहाँ जीवन दिस तकला कि जहिना शान्त पानिमे छोट-सँ-छोटो ढेप फेंकने ऊपरका पानिमे गति आबि प्रवाहित हुअ लगैए तहिना तुष्टलाल कक्काक मनमे सेहो एलैन। अबिते अपन बालपनक विचार प्रवाहित भेलैन। प्रवाहित होइते मोन पड़लैन सिनेमाक ओ गीत; जइमे कहल गेल- 'दुनियाँमे एलौं, तँ जीबए पड़त।' भलेँ जेहेन जीवन बना जीबी...।

तुष्टलाल काकाकेँ ओ सिनेमो देखल छेलैन्हे, तँए गीतक पाँतिक संग विचार आगू बढ़लैन। ओहो गीत तँ कोनो जीवनेक संग गौल गीत ने अछि...। आदिसँ अन्त धरिक सिनेमाक दृश्यपर मन नाचि गेलैन। जइसँ मनमे नव योजनाक संग नव जिनगीक विचार प्रवल होइत उठलैन। जन्म आ मृत्यु जीवधारीक अनिवार्य अंग छी। जखने मनुख वा कोनो देहधारीक जन्म होइए तखनेसँ ओकर जीवन दुनियाँमे चलए लगैए; जेकर अन्त मृत्युमे होइ छइ। ऐठाम एकटा बात आरो अछि। ओ अछि, शरीरक (देहक) अन्त भेने चेतनहीन शरीर बनि जाइए जइसँ ओकर जीवनक गति-विधि समाप्त भऽ जाइ छइ। तैसंग ईहो तँ अछिए जे जीवित शरीरमे लोक केतेको बेर अपन विचारसँ पलैट जाइए, ओ भेल ओकर वैचारिक मृत्यु। जे बिरले लोक निमाहि पबै छैथ; बाँकी सहरगंजा

अछि जे सिर-गंजा केने जीवनक लहासकेँ ढोइत चलै छैथ; आ तेसर भेल शरीरक चेतन क्रिया; जेकरा शरीरसँ निकलने मृत्यु होइए। शरीरक चेतने शक्ति ने आत्म-शक्तिक रूपमे देहधारीमे अबैए आ निकलैए। जे पंचतत्वमे विलीन होइत अपन जीवनी शक्तिकेँ जीवित रखैए। खाएर जे अछि।

सत्तैर बरख बितौल जीवनमे तुष्टलाल काकाकेँ जीवनक अनेको बाट-घाट मनमे जागए लगलैन। जइ घाटपर लोक नहाइले जाइए; तैठाम पानिक कारणे पीच्छड़ सेहो रहिते अछि। ओइठाम जेबाकाल लोक पिछैड़ियो कऽ खसिते अछि। मुदा ओहन पीच्छड़बक चिन्ता मनमे ओतेक ऐ दुआरे नइ अबैए जे नहाइले एलौं हेन , खसलापर जे थाल-कादो लगबो करत तँ धो लेब। मुदा नहेला पछाइत जे पीछैड़ कऽ खसै छैथ; हुनका संग तँ समस्या बदैलिये जाइ छैन। तँए, एते तँ नहेनिहारकेँ अपने मनमे अराधि लिअ पड़ैए किने जे खसी नहि।

जखन जीबै छी, जीवन अछि तखन गतिशील दुनियाँक संग अपनो गतिमान बनै पड़त। मुदा गतियो-गतिक तँ अपन-अपन दशा दिशा अछि। ओ अछि भय-अभयक जिनगी। जे बिना दोसरक भयसँ जीवन बना चली वा भयक संग जीवन जीबी। भय-अभयक बीचक घाटपर तुष्टलाल कक्काक मन अँटैक गेलैन।

दुनियाँ तँ सघन वन सदृश्य अछि। जइमे रंग-बिरंगक चलायमान जीवनक संग स्थावर आ जंगमक वन सेहो अछिए। जे गतिशील जीवनक बाधा-रूकाबट छीहे आ करिते अछि। ओना, जँ बिना किछु करैत-धड़ैत बाधा-रूकाबट रहैत तँ ओते बाधा-रूकाबट नइ होइत जेते आगूसँ घेर बनल रूकाबट भेने बाधा होइए। एहेन बाधा-रूकाबटक बीच डेग उठाएब कठिन तँ अछिए। ओना, कठिनोक अपन-अपन रूप-रंग सेहो अछिए। जहिना एक्के रंगक कठिनाइ एक-गोरेकेँ सुगम बाट बनबैए तँ दोसरकेँ तेना घेर दइए जे एको डेग आगू नहि बढ़ए दइए, मुदा तँए कि

सबहक जिनगी घेरा जाइए सेहो बात नहियेँ अछि। एहनो तँ जीवन अछिए जे ओइ घेराकेँ या तँ तोड़ि कऽ आगू बढ़ि जाइए या कुदि कऽ टपि जाइए या ओकरा धकलैत आगू सेहो बढ़िते अछि...।

तीनू रस्ता देखि तुष्टलाल कक्काक मन कने संयमित भेलैन। संयमित होइते तीनू रस्तापर नजैर दौड़लैन। रस्तापर नजैर दौड़िते देखलैन जे एहनो तँ होइते अछि जेकरा अहाँ कोनो कष्ट-बाधा नइ दइ छिऐ ओहो दुश्मन जकाँ हथियार नेने आगूमे ठाढ़ होइते अछि। तहूमे जेना-जेना जीवन आगू बढ़ि समृद्धता दिस बढ़ैए; तेना-तेना समृद्धशाली दुश्मन सेहो रोकिते अछि। ऐठाम तँ ओकरा परखब कठिन अछिए जे दोस्त बनि ठाढ़ अछि आकि दुश्मन बनि। दुश्मनक छाँह तँ तखन मनमे अबैए जखन आगूसँ किछु दुश्मनी भेल रहल। मुदा जैठाम आगूसँ किछु दुश्मनी नहि केने रहलिऐ, आ आगूमे अस्त्रक हाथे दुश्मनकेँ ठाढ़ भेल देखै छिऐ तँ मन कनी असमंजसमे पड़िये जाइए जे सहयोगी–दोस्त–बुझि बेवहार करी तँ केहेन सहयोगी बुझि बेवहार करी, नहि जँ दुश्मन बुझि बेवहार करी तँ केहेन दुश्मन बुझि बेवहार करी ..?

विचारक बोनमे बिचड़न करैत तुष्टलाल कक्काक मन घोर-मट्ठा हुअ लगलैन। ओही घोर-मट्ठा विचारमे जगलैन जे घोर ने पानि सदृश्य अछि मुदा मट्ठा तँ से नहि अछि, ओइसँ तँ पानिक जगह पानिसन घी निकलैए...।

जहिना घनघोर अन्हारमे छोट-छीन इजोतक गति होइ छै तहिना दुनियाँक विशाल बनमे तुष्टलाल कक्काक मन बिचड़न करए लगलैन।

पशु-जगतसँ आगू बढ़ि तुष्टलाल कक्काक मन रूकलैन। पाछू उनैट तकला तँ देखलैन जे पशु जगतमे कामधेनु सन लक्ष्मी सेहो अछि आ बाघ-सिंह सन जीव भक्षधारी सेहो अछि। तँए ऐ जगतमे–माने पशु जगतमे–अहिंसा-हिंसा जगतक सोभाविक गुण छी, मुदा मनुष्य-भूमि तँ

से नहि छी। विवेकशील जीव मनुख छी, जे पशु जगत नइ छी। अनुकूल स्थिति तुष्टलाल कक्काक मनमे एलैन। हिंसक तँ अपन विवेक बुधिसँ अहिंसको बनियेँ सकै छैथ...।

जीबै-जोकर जगत देखि तुष्टलाल कक्काक मन गहबरक भगत जकाँ भगताइ दिस बढ़िये रहल छेलैन, कि जहिना कोनो गहबरमे गोसाँइ खेलैत भगत रस्तामे अबैत गुहरियाकेँ माने कहालीकेँ देखि अपने फुरने बकए लगैत- 'एकरा भूत लागल छै, तँ एकरा चुड़ीन लागल छै, एकरा ब्रह्म पिशाँच धेने छै, तँ एकरा किछु ने छुने छै; ई भग्गल केने भगताकेँ जँचैले आएल अछि..!' तहिना भेलैन।

गुहरियाकेँ देखि जहिना भगतक मनमे उठैए तहिना तुष्टलाल कक्काक मनमे सेहो उठलैन। उठिते मुहसँ खसलैन-

"दुनियाँमे खाली पशु-हिंसके नहि अछि; व्रतीकेँ व्रत तोड़निहार व्रत-हिंसक लुच्चो-लम्पट तँ अछिए।"

लुच्चापर तँ कनी कम मन अँटकलैन मुदा लम्पटपर आबि तुष्टलाल काका विशेष रूपेँ अँटकला। अँटैकते मनमे उठलैन जे बेचारी अनसूइयाक कोन दोख रहै जे हुनक पतिव्रत-जिनगीकेँ भंग करैले ब्रह्मा, विष्णु, महादेव एते ढोंग रचलैन..?

भेल ई जे अनसूइयाक पतिव्रत देख, पतिव्रत नारी पेब जहिना पुरुख अभय बनि अभयदान करैक शक्तिवान भऽ जाइए तहिना पतिघात नारी पेब भयसँ भयांकुर सेहो बनिते अछि। जहिना व्रह्मणि, तहिना लक्ष्मी आ तहिना पार्वती सेहो ओहने नारी सोभावक अनुकूल अनसूइयासँ डाह करए लगली। जे बात अपन पतिकेँ सेहो तीनू कहलैन।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश; तीनू ऊपरा-ऊपरी मौगमेहरा छथिए; पत्नीक विचारकेँ पुरुख जकाँ नइ विचारलैन। आँखि मुनि तीनू अनसूइयाक पतिव्रत धर्म नष्ट करैले तैयार भऽ गेला। तीनू संगे दत्तात्रेय ऐठाम,

दत्तात्रेयक पत्नी अनसूइया छेली, साधकक रूपमे भिक्षाटन करए गेला। अनसूइयाक पतिव्रत देखि भीख मंगैसँ पहिने वचनवद्धता स्वीकार करा लेलैन। माने ई जे जे मांगब से देब कि नहि। ओना, अनसूइया तीनूकेँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश नहि बुझि साधक बुझली। साधनारत् साधककेँ साधनमे सहयोग करब पैघ धर्म मानले जाइए। मानले नहि जाइए; अनिवार्य सेहो अछिए। जँ से नहि रहत तखन पर-उपकार भेल की?

ब्रह्माकेँ अनसूइया पुछली- "अपने की चाहै छी?"

ब्रह्मा-

"चाहैसँ पहिने, अहाँ कहू जे देब या नहि?"

अनसूइया-

"जरूर देब, बशर्त्ते जे अपना हुअए।"

नारी व्रत तोड़ैक मांग केलैन।

ब्रह्माक बात सुनि अनसूइया पतिकेँ पुछलैन। दत्तात्रेय असमंजसमे पड़ि गेला। असमंजसक कारण भेलैन जे जहिना पत्नीकेँ पतिक सेवा पूर करब धर्म अछि, तहिना ने पत्नीक सेवाकेँ पूर करब पतिक धर्म बनिते अछि। ओना, दत्तात्रेय अपन जीवनमे एक नहि बाइस गुरुक शिष्य बनल छैथ तँए नीक-अधलाक विचार करैक शक्ति आबिये गेल छैन। एकाएक मन रामक पूर्वज रघुवंशपर सेहो पड़लैन। जे अपन पत्नीकेँ अपना विचारे दान केने रहैथ।

अनसूइयाक विचार सुनि दत्तात्रेय निर्भय भऽ विचार देलैन-

"अहाँकेँ जे मनमे आबए से करू।"

दत्तात्रेयकेँ कोनो दोसर विकल्प नहि छेलैन, किए तँ एक दिस साधकक शर्त्त, दोसर दिस पत्नीक वचनवद्धता छेलैन...।

पतिक आदेश पेब अनसूइया अपन पतिव्रत संकल्प निमाहैत तीनूकेँ बाल-बोध जकाँ अबोध बना, निर्वस्त्र भऽ खेलबए लगली।

दोसर दिस जहिना ब्रह्माक पत्नी- ब्रह्माणी, तहिना विष्णुक लक्ष्मी आ तहिना महेशक पार्वतीकेँ अपन-अपन पतिक जिज्ञासा भेलैन। तीनूकेँ बुझल रहबे करैन जे अनसूइया ऐठाम गेल छैथ। तीनू अपन-अपन पतिकेँ भँजियबैत अनसूइया ऐठाम पहुँचली तँ तीनू अपन-अपन पतिकेँ बच्चा सदृश्य देखलैन। देखिते तीनूक मन ग्लानिसँ भरि गेलैन। मुदा अपन हारल, बहुक मारल बजबे के करैए जे तीनूमे सँ कियो बजती।

दत्ता-त्रेय–त्रेय माने तीन। ब्रह्मा, विष्णु, महेशक जेठामसँ पैदाइस (निर्माण) भेल अछि। माने तीनूक समन्वित रूप दत्तात्रेय छैथ। ओही समन्वित रूपसँ तीनू रूपक सृजन भेल अछि। जहिना भगवान–गुरु आ शिष्य–बनि जीवन यात्रा शुरू करैए तहिना दत्तात्रेयसँ तीनू आगू बढ़ल क्रम छी।

तुष्टलाल कक्काक मन अपन मथन करए लगलैन। दुनियाँ दिस नजैर बढ़िते स्थिर-चित्त मनकेँ कहलकैन-

“दुनियाँ तँ ओहन दुनियाँ छी जइमे बिनु निर्भये एको डेग आगू नहि चलि सकै छी। जहिना लुच्चा-लम्पटसँ दुनियाँ भरल अछि, जे अकारणो लोकक इज्जत-आवरूक संग खेलबाड़ करिते अछि। तहिना चोर-चहार, झूठा-फूसासँ सेहो अछिए। जीवनक कोनो बाट एहेन शेष नहि अछि। जेना गुप्तजी ‘साकेत’मे कहलैन- ‘तेरे घर के द्वार बहुत है, किन द्वारो से आऊँ मैं, हर द्वारो में भीड़ बहुत है, भीतर कैसे जाऊँ मैं।”

दुनियाँक बजारक भाव देखि तुष्टलाल कक्काक नजैर मनुखक ओइ अवस्था दिस बढ़ए लगलैन जइ अवस्थामे जानवरे जकाँ एकाकी जीवन मनुक्खोक छल। नर-नारीक तँ आंगिक भेद छल; मुदा जीवनक आन कोनो अंगक नहि छल। एक-दोसराक बीच मनुखपनाक सम्बन्ध नहि छल। पछाइत शादी-बिआहसँ, एकठाम रहबसँ ‘परिवार-समाज’ बनल। तइले तँ एक-दोसराक बीच बिसवासक सम्बन्ध सेहो चाही। ‘असगर

बरस्पैतियो फुसि।' एक-दोसराक बीचक सम्बन्धपर सँ तुष्टलाल कक्काक नजैर स्त्री-पुरुखक सम्बन्धपर गेलैन। नजैर नीक जकाँ पहुँचलो ने छेलैन कि भरथरी मनमे नाचि उठलैन। बेचारा घर-परिवार छोड़ि बेरागी–बीतरागी–भऽ गेला। बीतरागीक माने असगरे दुनियाँमे दौड़ैत चलब। कहू जे एहनो होइ; भरथरी सन लोकक घरवाली एहेन चारि साए बीस हुअए..!

असमंजसमे पड़ल तुष्टलाल कक्काक मनमे बिजलोका जकाँ चमकलैन। जहिना बिजलोका अनेक रंगक सामूहिक रंग छिटकबैए तहिना तुष्टलाल कक्काक नजैरमे सेहो छिटकलैन। अनेक रंगमे एक रंग ईहो पेलैन जे बिसवास तँ सेवाक बीच निहित अछि; जे सेवाक क्रममे प्रस्फुटित होइत रहैए। जेहेन सेवा तेहेन बिसवास पैदा करैए। मुदा से रंग कनी क्षीण रूपमे छेलैन, तँए तुष्टलाल कक्काक नजैर भरथरिये दिस पुन: बहि गेलैन।

भेल ई जे राजा भरथरीकेँ एकटा योगी दरबारमे आबि एकटा अमृतफल–आम्र–दैत कहलकैन- 'ऐ फलमे ई गुण अछि जे जे कियो खेता ओ अजर-अमर जकाँ सभ दिन जुआनीए धेने रहता।'

अमृत फल देखि भरथरीक मनमे उठलैन जे दुनियाँमे सभसँ नजदीक–लग–तँ पत्नियेँ छैथ; किए तँ जँ अगुआ कऽ मरब तँ करोड़ो-अरबो नारीक बीच हुनका छोड़ि–माने पत्नीकेँ छोड़ि–कियो एहेन उपकारी नारी थोड़े हेती जे हुनकर बदला विधवा हेती। विधवा तँ वएह टा ने हेती; एहेन जे जीवनक गाँठ अछि, तैठाम जँ बिसवास नइ करी तँ बिसवास करी केतए...। अही सोचक क्रियाक प्रक्रियामे भेलैन जे दुनू परानी अखन एक उमेरिया छी। अपने जँ फल खा लेब आ पत्नीकेँ नइ दिऐन तखन तँ अगहनी धान जहिना खेतमे पाकि झुना कऽ टुर जकाँ खसए लगैए तहिना ने पत्नियोंकेँ हेतैन, जे आँखिक आगूमे देखल जाएत..? मुदा ई बात नजैरपर चढ़बे ने केलैन जे घरवालीकेँ जँ चकचकौआ रूप बनल

रहत आ अपने सुखा-सुखा, टुटि-टुटि झड़ैत रहब आकि खैकक थारीमे माछी जकाँ सोहरल दुनियाँमे लम्पट सभकेँ निष्क्रिय–माने बुढ़ापासँ निष्क्रिय–भेल हाथसँ रोमल हएत? खाएर जे से...।

घरवालीकेँ हाथमे फल दैत भरथरी बिहुसैत बजला-

“ई अमरफल छी, बरहमसिया फूल जकाँ ने कहियो जाड़-ठाड़ रोकत आ ने कहियो रौद-बसात; सभ दिन एक्के उपे फुलाइत रहब।”

जाधैर पत्नी–पिंगला–क हाथ फल नइ आएल छेलैन ताधैर अपन पतिव्रताक रूप जगबैत भरथरीक आगूमे ठाढ़ छेली। मुदा हाथमे फल एने मनक विचारमे संक्रमण हुअ लगलैन। संक्रमणक कारण भेलैन जे पतिक रूपमे तँ भरथरी जरूर छैथ, मुदा अपन मनक प्रेम तँ द्वारपालक संग अछि। किए ने ओकरे, द्वारपालेकेँ बरहमसिया फूल बना भौंरा जकाँ सभदिन रस पीब रसलीन भऽ रसभर बनैत रहब।

कथाकेँ वृहत्त नहि खिंच, विराम दइ छी। ओ अमर फल हाथे-हाथ आगू घुसकैत पुन: भरथरीक हाथ एलैन। फल देखि भरथरी विस्मित भऽ गेला जे ई तँ अजीव घटना अछि। भाय, दुनियाँक ओझरी छी किने, भरथरीकेँ किछु फुरिये ने रहल छेलैन..! जहिना धारमे भँसैत फूल जकाँ केतौ-सँ-केतौ दहेला पछातियो फेकनिहारक हाथमे चलि आबए, तहिना भरथरीक मनमे भेलैन। छानवीन शुरू करैसँ पहिने विचारलैन जे अपन हाथमे आएल फल अपने हाथे ने पत्नीकेँ देने छेलिऐन, किए ने उड़ल कौआक पाछू दौड़ब छोड़ि अपने वौस पर नजैर दी। सएह केलैन। पत्नीकेँ बजा, फल देखबैत पुछलखिन-

“ऐ फलकेँ चिन्हू तँ।”

फल देखि पिंगला चुप भऽ गेली। अपन हाथसँ द्वारापालकेँ देल फल मनमे नाचि उठलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जेकरा जीवन देलिऐ, ओकरा अपना हाथे मृत्यु करबसँ नीक अपन मृत्यु। प्रेमो तँ प्रेम

छी। एक दोसर-ले जखन सिनेमोक कलाकार थूक उठा-उठा चटैए, तखन दोसराक कोन बात। मुदा से भरथरीकेँ नहि भेलैन। अचेत दुनियाँ देखि सचेत जकाँ चेत उठलैन।

पत्नीकेँ साधल चुप्पी देखि भरथरी पिंगलाक सभ दोष अपन सिर मढ़ैत घरसँ निकलैक विचार मनमे रोपए लगला। तही बीच मनमे ईहो उठलैन जे जीवनक बीच एक जीवनक विसरजन भऽ रहल अछि तँए अन्तिम विदाइ किए ने लऽ ली। मुदा लगले ईहो भेलैन जे जे पत्नी जीवनक संग बिसवासघात केली तिनकासँ अन्तिम विदाइ तँ ओही दिन भेट गेल जइ दिन बिसवासघात केली। अनेरे कोन मौगी-मेहरिक भाँजमे पड़ब, बिना केकरो किछु कहने भरथरी घरसँ विदा भऽ गेला।

एक तँ ओहिना तुष्टलाल कक्काक मन अपन टुटल जिनगी देखि मनमे विषाद छेलैन तैपर दत्तात्रेय-अनसूइया आ भरथरी-पिंगलाक दशा-दिशा मनकेँ आरो छिन्न-भिन्न करए लगलैन। मुदा अपन सत्तैर बर्खक साधल जिनगीकेँ पुन: ओही साधसँ साधैक विचार जगौलैन। मनकेँ जगिते भेलैन जे जखन जीबै छी तखन यएह ने जीवन भेल; जखन जीवन अछिए तखन जीबठपन केना मेटा जाएत जे सत्तैर बर्खक श्रमशील मनक फूल-फल छी। अपन आत्मशक्तिक उत्साह जगलैन।

उत्साह जगिते जहिना शिकारी अपन हथियारक संग वनमे शिकार खेलए जाइ छैथ आ झाड़-बोनसँ जेना-जेना सघन बोन दिस बढ़ै छैथ तहिना-तहिना ने खून-मांस भक्षी जानवर सभसँ भेँट सेहो होइते छैन, तहिना अपन जीवनक वनमे तुष्टलाल काकाकेँ सेहो भेटलैन। भेटते बुदबुद मन फुटलैन- "जखने भोग अछि तखने रोग हेबे करत, तहूमे मनुखक देह तँ आरो रोगक खाने छी। मुदा तेकर निमरजना केना करब से तँ अपने ने देखैक अछि।"

जहिना समुद्रमे आकि रेगिस्तान–मरूभूमि–मे, एकठाम ठाढ़ भेने केतौ-सँ-केतौ लोक देखैए तहिना तुष्टलाल काका सेहो देखलैन। भरथरी

ने पत्नियोँकेँ छोड़ि चलि गेला मुदा अपने तँ परिवारमे छी। भलेँ परिवारजनसँ मोह नहि हुअए मुदा ममता तँ अछिए। तँए परिवार बढ़ने अनका जे वियोग हौ मुदा अपनो मन तँ अपन मालिक अछिए। धनक लोभमे नइ पड़ब मुदा मनुखधन छोड़बो तँ उचित नहियेँ हएत। मौन धारणकेँ आन जे नीक बुझह मुदा जगह पेब जँ अपनो सएह करब तखन ज्ञानक सभ गुर ज्ञान गोबर भऽ जाएत। हमरे ने लोक मुँहचोर कहत। जखन शास्त्र अछि तखन जँ ओकरा शास्त्रार्थ केने बिना वाद-विवादक डरसँ किछु ने बाजी; सेहो उचित थोड़े हएत। जन्म-मृत्यु जीवनक ओर-छोर छी, एकटा आएब भेल आ दोसर जाएब भेल; जइ बीचक जिनगी जीवन धार भेल। अही धारमे ने धारदार बनि जलधार करैक अछि।

ओना, तुष्टलाल काकाकेँ छठिहारीक राति जीबठपन देखि दाइ-माइ लोकैन जीबठा नाओं रखलकैन। जीबठा नाओं ऐ दुआरे रखलकैन जे पुष्ट बच्चा अछि। रौद-बसात सहैक शक्ति देहक रंगे कहै छइ। जहिना गाइयक चमड़ी देखि किसान दुधगरक परिचय पबैए तहिना पेलैन।

जेना-जेना जीबठा बढ़ैत गेला तेना-तेना नाम बदलैत जवान होइत-होइत जीबठलालपर पहुँच गेला। माने अपन जीबठपनक बले तुष्टलाल काका अपन जवानीएमे तुष्ट होइत तुष्टलालक नाओंमे बदैल गेला।

आइ अपन सत्तैर बर्खक जीवनकेँ तुष्टलाल काका ओहिना स्मरण केलैन जेना भगत सभ गहबरमे अपन देवकेँ स्मरण करै छैथ। स्मरण करैत तुष्टलाल काका काल्हिक काल्हि देखैक विचार मनमे रोपि आगूक जिनगी जीबैले साधल डेग उठौलैन।



शब्द संख्या : 2577, तिथि : 02 जनवरी 2020

गोटी लाल

आइये नहि, सभ दिनसँ मिथिलांचलमे जहिना बाढ़ि-रौदीक संग सुभ्यस्तो समय रहल तहिना अखनो अछि। कहब जे सभ किछु परिवर्तनशील अछि तँए पहिने किछु रहल हएत आ अखन किछु अछि। मुदा से नहि, ऐठाम परिवर्तनक क्रम देखए पड़त। एक दिस जहिना सालक बारहो मासक मौसममे किछु परिवर्तन देखि पड़ैए तहिना दोसर दिस ईहो तँ होइते अछि जे साल बितला पछाइत पुन: वएह मासो आ मासक दिनो-राति ओहने रूप धारण केने अबैए जेना पैछला सालक छल।

चैत-बैशाखमे गरमीक प्रकोप जहिना बढ़ैत-बढ़ैत जेठमे उग्र भऽ जाइए आ अखाढ़ एलापर पानिक फुहारक संग सघन बरखो आ पाथरोक (वर्फक) आगमन मेघसँ भेने उमेरगर लोक जकाँ शान्तचित्त सेहो भइये जाइए तहिना ने धरतियोकेँ होइए। बैशाख-जेठक जे रौद धरतीक सुन्दरताकेँ नष्ट करैमे अपन जी-जान लगौने छल वएह रौद-बसात पानिक आसरा पेब धरतीकेँ शृंगार करैले सेहो जी-जान लगैबते अछि। यएह गति बारहो मासक अछि, जइसँ सालक बारहो मास अपन-अपन आवृत साले-साले एकरंगाह देखिते अछि। गणनाक हिसाबसँ भलेँ लोक ओकरा एक सालक अन्त आ दोसर सालक जिनगीए किए ने बुझए...।

दुनियाँक निर्माणमे जहिना पानि तहिना माटि, हवा, आगि आ अकासोक महत्त अछिए। जे एक-दोसराक सृजनो करैए आ संहारो तँ करिते अछि। अही बीच ने गाछ-वृक्षक संग जीवो-जन्तु, सभ दिनसँ

धरतीपर बास करैत आबि रहल अछि आ अनवरत आगूओ करिते चलिते रहत।

दुनियाँक वस्तुगत प्रकृति सृजन आ जीव-जन्तुक संग मानव जातिक जीवगत सृजनमे अन्तर अछि। जन्मक पछाइत जहिना कोनो जीव-जन्तुकेँ आ तहिना मनुखोकेँ, जीवनक आगमन होइए; मुदा ओ काँच सुत जकाँ कहियौ आकि काँच माटिक बरतन जकाँ कहियौ, करवनौं टुटि सकैए आ करवनौं फुटियो सकिते अछि। मुदा से एतबे नइ अछि, साए-साए बरख मनुखो जीबैए आ आनो जीव-जन्तु सेहो जीविते अछि। तही बीच अनेको रोगो-वियाधि माने दुख दइबला सेहो चलिते अछि आ आगूओ दिन चलबे करत। यएह छी मनुखक जीवन। अही बीच मानव महामानवो बनै छैथ आ दानवक संग महादानवो बनिते छैथ।

दू सालसँ बाढ़िक झमार तेना पड़ल जे जीवने विकृत्त भऽ गेल। जहिना जीवन विकृत्त भेल तहिना मनो विकृत्त हुअ लगल। मन मानि गेल जे जीवनमे आब तरवन सुदृढ़ता आबि सकैए जरवन गाम छोड़ि चलि जाइ। प्रतिष्ठित लोककेँ ने गाम छोड़ैमे मनहानि होइ छैन मुदा हमरा सन हँसुआ-फरोस किसानकेँ कथीक मनहानि हेतैन। ओहुना तँ साले-साल बोइन-बुत्ता करए आनो गाम जाइते छी। जइ गामक अन्न खा जीवन ठाढ़ रारवब तइ गाममे घरे बना परिवारक संग रहब तँ कोन बड़ भारी मनहानिक बात हएत। देखे-देखी ने दुनियाँ चलैए, अपने गामक कोन बात परोपट्टाक आनो-आन गामबला सभकेँ सेहो देखिते छिऐन जे अपन परिवारक संग आन-गामक कोन बात जे आन-आन राज्योक शहर आ आन-आन देशो जा जा बसिये रहला अछि...।

लगले सूरे मनमे उठि गेल जे जँ सएह भेल तरवन पुर्खोक देल आ अपनो जन्मभूमि-कर्मभूमि की भेल? मात्र गीतक स्वरे टा ने रहल...।

अगदिगमे मन तेना ओझरा गेल जे आगू ताकी तैयो अन्हारे देखि

पड़ए आ पाछू तकने तँ सहजे भुतियाएल अन्हार देखबे करी। जइ अन्हारमे भूत नइ रहैए तइ अन्हारमे आ जइमे भूत रहैए तइमे अन्तर तँ आबिये जाइए। से खाली अन्हारेटा मे नहि बल्कि जीवनक आनो-आन घाटपर सेहो तहिना अछिए।

एकाएक मनक एक खण्डमे उठल जे जैठाम अपन बुधि हेरा जाइए तैठाम तँ दोसरेक बुइधिक बले ने लोक अपन जीवन धार पार करए चाहैए। जानि कऽ कियो थोड़े डुमए चाहैए जे हमहीं चाहब। मनक खण्डक एक प्रखण्डसँ विचार उठि बाजल-

"जहिना रंग-बिरंगक खेत-पथार, गाछ-बिरीछ, पोखैर-इनार आ धार-धुरक संग बोरिंग-चापाकल इत्यादि-इत्यादिसँ गाम बनल अछि तहिना ने रंग-बिरंगक बुधियो-अकील लोकक बीच अछिए। तँए किए ने आनो-आनसँ अपन जिनगीक विकृतता दरसबैत अपन दिशा-बाट बुझि आगू बढ़ी... ।"

खण्डित मनक विचार सौंसे मन मस्तिष्ककेँ जेना शान्त केलक। शान्त होइते पुन: मनमे जगल जे जे समय बीत गेल ओ दुखे बीतल आकि सुखे बीतल; मुदा ओ तँ बीत गेल तँए ओकर चिन्ता अनेरे मनमे रखने छी। अनेरे मनक कोठीकेँ सड़ल-घुनाएल अन्नसँ भरि कऽ रखने छी। बस एतबे मोन रखैक अछि जे पाछूक समैयक जे अपन लीला आ लीलाधाम छल, जैपर आजुक लीला चलि रहल अछि आ औझुके लीलापर ने काल्हिक लीला हएत...। फेर लगले मन आगू ससैर गेल। ससरैत मनक दोसर टुकड़ी जगि बाजल-

"गामो तँ गाम छी आ गामक बुधियारो तँ गमैया बुधियार छीहे; तैठाम सौंसे गामसँ पुछि कऽ अपन जिनगी देखब आकि एक्के गोरेसँ रंग-बिरंगक जिनगी बुझि अपनो जिनगीक धारकेँ देखब?"

एक मनक विचार दोसर मनक आगूमे ठाढ़ भेल। हिया कऽ गाम

दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे हमरे ज काँ सोलहअना तँ नहि मुदा पनरहअना लोक जड़ाएल-मराएल चिड़ै जकाँ फड़फड़ा रहल छैथ।

दरबज्जापर सँ उठि रस्ता पकैड़ अन्ना-गाहींस गाम दिस विदा भेलौं। विदा होइते मनमे उठल जे जे पहिने भेटता तिनका आगूएसँ, खाड़ी अनुसार–माने सम्बन्धक अनुसार–अभिवादन करैत हाल-चाल जखने पुछबैन तखने ने ओहो अभिवादनक उत्तर दैत अपनो हाल-चाल पुछता...।

जहिना एक बाध रहितो खेत-खेतक माटि एकरंगाहो रहैए आ बहुरंगाह नहि रहैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए सेहो रहिते अछि; तहिना परिवार-परिवारक बात सेहो अछिए। दू परिवारक बीच एक्को रंगक समस्या अछि आ दोसरो रंगक समस्या अछिए। तैठाम तँ यएह ने नीक हएत जे दू गोरेक बीचक जे एक रंगाह समस्या अछि, पहिने ओकरा दुनू गोरे अपन-अपन परिवारक तरजूपर तौल ली।

थोड़बे आगू बढ़लौं कि जगरनाथ भाय आ दुखहरण भायकेँ देखलयैन जे दरबज्जापर बैसल ठहाका मारि हँसि रहल छला। दुनू गोरेक ठहाका सुनि अपन मन संकोचमे पड़ि गेल। संकोचमे ई पड़ल जे दुनियाँक एहने ने रीत बनि गेल अछि जे एक मनुखक पेसोपेस जीवन देखि दोसर ठहाका मारि हँसिते अछि। तँए, कनी मनमे शंको जगबे कएल जे हमरे देखि ने दुनू गोरे ठहाका मारि हँसि रहला अछि..! मुदा अपन धृतकेँ जगबैत जगरनाथो भाय आ दुखमोचनो भाइक बीच पहुँच , जेना गप-सप्पक बीच इशारेसँ अभिवादन होइए तहिना अभिवादन करैत बैसलौं। तैबीच जगरनाथ भायकेँ दुखहरण भाय कहलखिन-

“जगरनाथ, तोहर गोटी लाल भऽ गेलह..!”

‘लाल गोटी’ सुनि आगू बिना किछु बजने जगरनाथ भाय ठहाका मारि हँसल छला। अपने बैसल-बैसल सोचैत रही जे बात किछु बुझि

नहि पेब रहल छी आ दुनू गोरे खुशीक चौदहम पटरीपर हरमुनिया जकाँ सूर भरि रहला अछि। ई तँ भेल पानि महक माछ जकाँ; जे भैयारीमे टुकड़ी-टुकड़ी बँटा गेल मुदा माछ अछि पानियेँमे..!

मनकेँ सनजेतने ऐ आशामे बैसल रहलौं जे गप-सप्पक क्रममे जँ केतौ कोनो सूत (सूत्र) भेट जाएत तँ ओकरे सुतियबैत ने पूरा जाल भँजिया लेब। तइले धड़फड़ाइक कोन धड़फड़ी अछि। मनकेँ थतमारि दुनू गोरेक मुँह दिस देखैत रही। ओना , मनमे ईहो हुअए जे बाल-बोध जकाँ दोसरक हँसी देखि तेसरो हँसबे करैए, मुदा लगले ईहो हुअए जे 'केदैन हँसल किदैन देख!' तेना ने कहीं भऽ जाए...।

तैबीच दुखहरण भाइक बात सुनि जगरनाथ भाय बजला-

"हमर गोटी लाल भेल से तँ अहाँ बुझि गेलिऐ भाय; मुदा अपन गोटी की भेल से बजबे ने केलौं।"

दुखहरण भाय आ जगरनाथ भाय एकउमेरिया छैथ। मात्र तीन मासक जेठाइ-छोटाइ दुनू गोरेक बीच उम्रमे छैन। घर दुनू गोरेक एक्के गाममे छैन, छैन मुदा दू टोलमे। ओना, एको टोल आ गामक सभ टोलमे सेहो परिवारो-परिवार आ जातियो-जातिक बीच बेवहारोगत आ कर्मोगतमे किछु-ने-किछु भिन्नता अछिए। से अछि जाति-जातिक कर्मगत बँटबारासँ सेहो आ बेवहारगतसँ सेहो। कर्मगत भेल जे एक्के गामक एक्के टोलमे बसल किए ने हुअए मुदा जातिक विभाजित काज रहने ओकर सभ किछु अलग भऽ जाइ छइ। जेना एक घर बरही अछि आ एक घर धोबी। एकक काज लोहा-लकड़ीक भेल आ दोसरक भेल वस्त्र-जातक धुआइ-सफाइक। जैठाम बरहीकेँ लोहाक औजारो आ आगियोक जरूरत पड़ैए, तैठाम धोबीकेँ लकड़ीक घाट आ पानिक जरूरत पड़ैए। सबहक जरूरतकेँ देखैत ने गामक निर्माण होइए। तइमे दुनू बात अछि, सुविधा रहने किछु जातिक बास सुगम होइ छैन आ

सुविधा नइ रहने थोड़े दुर्गमो तँ भइये जाइ छैन, जइसँ जिनगीक गाड़ी ताबे धरि ढकर-ढकर चलैत रहै छैन जाबे धरि दुर्गम बाट सुगम नइ बनै छैन।

जहिना कर्मगत विभाजित गाम अछि तहिना बेवहारगत सेहो अछिए। ओना, कर्मेकेँ बेवहार सेहो कहल जाइए मुदा ऐठाम बेवहारक माने भावनासँ अछि। जाति-जातिक बीच, घरक पूजनीय देवी-देवताक विभाजन सेहो अछिए। फलस्वरूप सबहक अपन-अपन किछु-ने-किछु अलग-अलग बेवहारो भइये जाइ छैन। तहिना पाबैन-तिहारक सेहो अछिए। किछु जातिक बीच कोनो पाबैन होइए तँ कोनो जाइतिक बीच कोनो पाबैन। ओना, ई दीगर भेल जे जिनका पाबैन होइ छैन ओ अपन पवनोट हुनको दइ छथिन जिनका नइ होइ छैन। जहिना नीक विद्यार्थी अपन नोट संगी-साथीकेँ दैत सहयोग करैए तहिना ने समाजोक बीच समाज सेहो अछिए। तैसंग जेकरा संस्कार कहै छिऐ ओहूमे चलैनगत अन्तर सेहो अछिए। पेशागत कहियौ कि बेवसायगत कहियौ आकि जीवनगत कहियौ, दुनू किसान छैथ। किसानी दुनूक जीवन छिऐ न। मध्यम श्रेणीक दुनू किसान छैथ। ओना , गज-फीतासँ नापल दुनू गोरेक खेत-पथार एकरंग नहियेँ छैन, मुदा एक हरक जोत जहिना दुखहरण भायकेँ छैन तहिना जगरनाथो भायकेँ छैन। परिवारोमे तीन-चारि गोरेक अन्तर दुनूमे सेहो छैन्हे। दुखहरण भाइक परिवार चौदह गोरेक छैन आ जगरनाथ भाइक परिवार दस गोरेक छैन। संख्याक हिसाबसँ दुखहरण भाइक परिवार नमहर छैन; मुदा काजक हिसाबसँ माने पारिवारिक काजक हिसाबसँ जगरनाथ भाइक परिवारमे बेसी काज छैन। तेकर कारण दुनूक विचारो आ बेवहारोमे अन्तर छैन्हे।

अखनो धरि दुखहरण भाय अपन पूर्वजेक जे खेती करैक पद्धति छेलैन, वएह पकड़ने चलि रहला अछि मुदा से जगरनाथ भायमे नहि छैन। ओ बिकछा कऽ बुझै छैथ जे जइ गाममे जेहेन जिनीसक उपजाक

जमीन अछि; तइ गाममे तेहेन जिनीसक खेती हएत। तँए जहिना अन्नक अछि तहिना आनो-आन वस्तुक सेहो अछिए। जइ गामक जमीन बेसी पनिगर अछि ओइ गाममे पाइनिक उपज बेसी हेबे करत...।

ओना, दुखहरण भाइक खेती-बाड़ीक पद्धति ई छैन जे जहिना पूर्वज धानक बीआकेँ निरोग बुझि जेठसँ खेती करै छला तहिना दुखहरण भाय सेहो जेठेमे सभ साल बीआ पाड़ै छैथ। ओना, जेठुआ बीआक अनिसचितता अछिए। ओ अछि जे जैठाम पानिक कृत्रिम बेवस्था (नमहर, बोरिंग) नहि अछि, जे लिलसा रावणोकेँ मृत्यु धरि लगले रहि गेलैन जे किसानक हाथमे पानि देब। गर्मीक आगमनसँ खेतक नमी (हाल) धीरे-धीरे तेते निच्चाँ उतैर जाइए जे उपजक परत निहाल भऽ जाइ छै जइसँ बीआमे अंकुरन नहि औत; तँए मौसमक बरखा भरोसे रहने काजमे बेवधान भइये जाइए। ओना, एकरा दैवीय प्रकोप कहै छिऐ मुदा प्रकोपक निमरजना नइ भऽ सकैए, सेहो नहियेँ कहल जाएत।

अपन गोटी सुनि शतरंजक मरल गोटी जकाँ गनैत दुखहरण भाय बजला-

"जगरनाथ! अपने गाम टा मे नहि, आनो-आन गाममे बाढ़ि आएल, दहार भेल। केते गाछियो-कलम उपटल आ खेतो गहिरिया गेल; जइसँ पानिक अँटकाव गाम-गाममे भइये गेल। पानिक बाढ़िसँ धानक उपज अपने गाम टा मे नहि बल्कि आनो-आन गाममे सेहो नहियेँ भेल। ओना, किसान अठगोड़बा जकाँ तेहेन कठजीब होइ छैथ जे एक बेरक रग्गड़केँ थोड़े ओ किछु बुझै छैथ। पुस्तैनी अभ्यास सेहो तेहेन बनल छैन जे एकफसिला बाढ़ियो आ रौदियोक मानि थोड़े दइ छथिन। किसानक साल तीनरूपिया अछि। तीनरूपिये किए, बहुरूपिया सेहो अछि। मुदा अधिकांश तीनरूपिये अछि। एक-रूप रौदीक भेल जे एकसलिया, दूसलिया, तीनसलिया, पनसलियाक संग बरहबर्खा सेहो अछिए। मिथिला नरेश जनकजी बारहम बर्खक रौदीमे हर पकड़लैन। जइसँ सीतो

भेटलैन आ बरखा भेने रौदियो मेटा गेल। दोसर भेल बाढ़िक दहार। जे सालमे सातो बेर अबैए आ किछु गाममे सात साल नहियोँ अबैए। मुदा किछु गाम एहनो तँ अछिए; जइमे साले-साल सेहो अबिते अछि। तेसर भेल, समगम समय। समगमोक दू रूप अछि, एक अछि गोटे साल बर्खाक (पानिक) पलड़ा भारी भऽ जाइए तँ गोटे साल सुखारक पलड़ा भारी भऽ जाइए। जहिना थीसिस, एन्टी थीसिसक बीच सिनथीसिस होइए तहिना समयो, मौसमो आ समय-मौसमक संग चलनिहार किसानोक होइते छैन।"

दुखहरण भाइक विचार सुनि अपन नजैर रतनपुर गामक बनावटपर पहुँचल। रतनपुर आठ साए बीघा जमीनक गाम। छह साए घरक बस्ती। अनेको जाति, अनेको वृत्ति, अनेको देवी-देवता माननिहार तँए अनेको रंगक अपन प्रतीक चिह्नक संग देव स्थान सभ सेहो अछिए। तँए कहब जे खाली देवीए-देवतासँ गाम भरल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। हुनकर वाहक आ संवाहक सेहो छथिए। देवशक्तिसँ सम्पन्न गाम भलेँ हुअ, जे देवगामियेटा किए ने बुझैत होथु; मुदा तँए कि गामक वाहन सभ अपन देवी-देवताकेँ कमजोर (अब्बल) बुझै छैथ, सेहो बात तँ नहियेँ अछि। देखैमे भलेँ आबए जे कोनो स्थान (देवस्थान) संगमरमरसँ मेढ़ौल तीन मंजिला किए ने हुअए, तँए गाममे मात्र बाँसटा गाड़ि, बिनु पताकाक धूजा नइ अछि वा कोनो गाछमे लाल-कारी कपड़ा बान्हि धूजा रूपमे पूजनीय नहि अछि; सेहो बात तँ नहियेँ अछि, सेहो अछिए। खाएर जे अछि, गाम कि कोनो एक्के गोरेक होइए जे रतनपुर कोनो एक्के गोरेक रहत। सभ जातिक लोक, सभ सम्प्रदायिक लोकक बास गाममे आइये नहि, अदौसँ रहल अछि। जहिया आठ साए इस्वीमे दू गोरे आबि बसला आ गामक नाम 'रतनपुर' रखलैन; तहियो दुनू अपनाकेँ दू जाति मानि , दूटा देवस्थानो आ दू रंगक खेतियो-बाड़ी शुरू करबे केलैन।

जाबे कोसी-बान्ह आ कमला-छहर नहि बनल छल, आन-आन

धारक तँ पछाइत भेल, तहियो हथिया ओहिना झटकै छल, माने हथिया नक्षत्रमे ओहिना बरखा होइ छल आ तहिना अखनो होइते अछि। जहिना अखन बाढ़ि अबैए तहिना तहियो अबै छल। एबो केना ने करैत, गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानक उत्तर-सँ-दच्छिन ढलान बनल अछि। जे उत्तर दिस पहाड़सँ लऽ कऽ मैदानी इलाकाक बर्खाक बहावक संग बर्फक पघिलल पानि बहबे कएल। धार-धुर आइये नहि सभ दिने अछि। कोसी-बान्ह बनैसँ पहिने जे बाढ़ि अबै छल ओ बिना बान्ह-छेकक छल, तँए अबै छल, दू चारि दिनमे आगू बढ़ि जाइ छल। अदौक कहबी अछि जे केहनो अजोध चढ़न्त बाढ़ि किए ने हुअए, अढ़ाइ दिनक पछाइत निच्चाँ-मुहेँ भइये जाइए। जइसँ नोकसान नइ होइ छल, से बात नहियेँ अछि, सेहो होइ छल, मुदा बन्हुआ पानि जे मासक मास बन्हाएल रहैए; तइ अनुकूल कम तँ होइते छल।

रतनपुर गामक नक्शो बदलल आ आने गाम जकाँ चेहरो-मोहरा तँ बदलबे कएल। गाममे सड़को बनल, पानिक घेर-घार सेहो भेल। ओना, परिवारक हिसाबसँ बारहअना माने पचहत्तैर प्रतिशत लोक परदेश चलि गेल छैथ। तइमे अधासँ बेसी अपन बाल-बच्चाक संग चलि गेल छैथ आ अधाक बाल-बच्चाक संग माता-पिता रतनपुर गाममे रहै छैन। एक तँ ओहिना मिथिलाक माटि, पानि, हवाक एहन गुण अछि जे नीक-निकुत भोजन आ नीक-सँ-नीक जकाँ अराम करैक शक्ति सदिकाल जगौनहि रहैए। एकर माने ई नइ बुझब जे मिथिलावासी चूरा-दही विशेष पसिन करै छैथ आ कोढ़ि भेल दरबज्जापर पड़ल-पड़ल झूठ-फूसकेँ भरि दिन फूसि-फासि करैत रहै छैथ। एक-सँ-एक रत्न ओहिना नहि रतनपुर पैदा केलक अछि। एक-सँ-एक संयमी साधक बनि अमूल्य रत्न सन साधन सेहो करिते आबि रहल छैथ। अखनो करै छैथ।

छह साए बीघा रतनपुरक जोत जमीन अछि; बाँकी दू साए बीघामे बाससँ लऽ कऽ अगबास धरि अछि। ओना, गामक चारूकातक बाध

तीन खाड़ीक–खाड़ीक माने भेल ऊपर-निच्चाँ–अछि मुदा बाढ़िक विभिषिका दू खाड़ी तकक जमीनकेँ बेसी दहबैत आबि रहल अछि।

दुखहरण भाइक जमीन पूवरिया बाधमे छैन आ जगरनाथ भाइक उतरबरिया बाधमे छैन। सभ साल दुखहरण भाय दू बीघा गहुमक खेती करैत आबि रहला अछि। अहूबेर केलैन अछि। समयकेँ देखैत, समयकेँ देखबक माने भेल जे खेतेक उपजा जहिना गहुम तहिना आनो-आन जिनीस छीहे। तइमे नीक-सँ-नीक आ बेसी-सँ-बेसी जे उपजत से बेसी नीक भेल। लगतोक हिसाबसँ धनिया खेती असान अछि आ धनियाक मूल्यक हिसाबसँ सेहो ओइमे केतेको गुणा बढ़बारि आबि गेल अछि। माने जे धनिया पचास-साठि रुपैये किलो बिकाइ छल, ओ दू साए रुपैये किलो भऽ गेल अछि। जइ अढ़ाइयो बीघामे जगरनाथ भाय गहुमक खेती करैत आबि रहल छला, ऐबेर ओ धनिये केलैन। बीत-बीत भरिक गाछ भऽ गेल, तेते घनगर अछि जे अधा जँ बाँछि कऽ सग्गा बेचल जाए तँ नीक उपजक उगाही हेबे करत। धनियाक सएह खेती देखि जगरनाथ भायकेँ दुखहरण भाय कहने छेलखिन जे 'जगरनाथ, तोहर गोटी लाल भेलह..!'



शब्द संख्या : 2364, तिथि : 06 जनवरी 2020

अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह

करखानाक कार्यालयसँ डेरा पहुँचते अतीतानन्दक मुहसँ खसलैन-

“ह-ह-ह, जान बँचल..!”

पहिल साँझक समय, करीब साढ़े छह बजैत; डेरामे कियो दोसर नहियेँ छल जे अतीतानन्दक बात सुनैत। असगरे अतीतानन्द डेरामे छला। लीखिया– अतीतानन्दक पत्नी–चुल्हि-चौकाक ओरियानमे बजार गेल छेली। छोटका तीनू बेटा-बेटी खेलाइले गेल छल, जेठका बंगलोरमे नोकरी करै छैन आ अपने दिल्लीमे अपन पचास फीट जमीनमे तीन मंजिला घर बना रहै छैथ।

असगरमे जहिना आनो-आन जे अपन जिनगीक सभ ओरियान करैत अपने नोकर-सँ-मालिक धरि होइ छैथ; तहिना अखन अतीतानन्द सेहो डेरामे छला। ओना, ऑफिसेमे खुशीक फूलक कोढ़ी-बाती मनमे पनैप गेल छेलैन, मुदा ऑफिसक गेट पार होइते भकरार भऽ कऽ फुला गेलैन, जइसँ अपनो-ले रंग-रंगक कपड़ो-लत्ता आ भोजनक नीक-नीक विन्यासो आ परिवारोजन ले कीनि कऽ अनने छला। कहैकाल तँ सभ कहै छिऐ जे ‘हँसी-खुशीसँ जीवन बिताबी’ मुदा से शब्दे-वाण टा सँ नइ ने चलैए। ओइमे तँ ओकर जीवनो जुड़ल छै आ जीवनक संग जीवन लीलो जुड़ले छइ।

अतीतानन्द अपन कोठरीमे सभ समान रखि, देहक कपड़ा उतारि, लुंगी-जंघिया पहीरने नलपर पहुँच नहाइक ओरियान कइये रहल छला कि

पत्नी डेरा पहुँच; सोझहे अतीतानन्दक कोठरीमे आबि पतिकेँ ताकए लगली। ओना, देहक कपड़ा देखि बुझि गेली जे या तँ नहाइले बाथरूम गेल हेता नहि तँ पैखाना करए गेल हेता...।

कोठरीसँ निकैल लीखिया अपन झोरा-झपटा कीचेनमे रखि देहक वस्त्र बदलैक ओरियानो कऽ रहल छेली आ तरे-तर मन तर-ऊपर सेहो होइत रहैन। पलंगपर राखल बैग आ भरल डोलची देखि मनमे एतेक बिसवास तँ जनैमिये गेल छेलैन जे अपन काजसँ पति सन्तुष्ट भऽ हँसी-खुशीसँ डेरा एला अछि। जहिना सेवा-निवृत्ति भेलापर अनेको रंगक धएल-धड़ल, जमा-जिगिर एक संग भेटने परिवारक आमदनीमे बाढ़ि अबैए तहिना एकतीस मार्चकेँ सालक सभ हिसाब-वारी भेने सेहो नोकरियाकेँ होइते अछि। ई बात लीखियाकेँ साल-सालक अनुभव रहबे करैन जइसँ मार्चक शुरूहेसँ मनमे नचैत रहैन जे पैछले साल जकाँ पति पुछबे करता- 'की लेबाक इच्छा अछि बाजू..!'

मार्चक पहिले दिनसँ लीखियाक मनमे साल-सालक रोपल फलक इच्छा मनमे नाचि रहल छेलैन; तँए पतिकेँ दिठा-दृश्य देखैक इच्छा प्रवल भइये गेल रहैन जइसँ अपन कोनो काज करैमे मन तेना भऽ कऽ नहियेँ जमै छेलैन जेना जमक चाही।

संजोग बनल; लीखिया कोठरीक गेटेपर ठाढ़ भऽ पतिक प्रतीक्षा कए रहल छेली। अतीतानन्द वाथ रूमसँ निकैल अपन कोठरी दिस बढ़ला, तैबीच पत्नीपर नजैर पड़िते मुहसँ खसलैन-

"जे आशा नइ छल से भेल..!"

पतिक बात सुनिते लीखियाक मनक विचार जेना मन छोड़ि अकासमे उड़ि गेलैन तहिना भेलैन; जइसँ अवाक जकाँ मुँह तँ बन्ने रहलैन मुदा विचारमे उठलैन जे एना किए बजला..?

फेर जखन उनैट कऽ पतिक विचारपर नजैर देली कि दू तरहक

विचार मनमे उठलैन। उठबो केना ने करितैन एक जे आशा नहि छेलैन से भेल। मन घुड़मौड़ लेलकैन। घुड़मौड़ ई लेलकैन जे आशा तँ बीचमे भेल, जेकर दुनू कात तँ खाधि बनले अछि। एक नीकक खाधि अछि; दोसर अधलोक खाधि अछिए। भेल तँ आशाक विपरीत बात बजला अछि वा आशाक बात बजला अछि।

केतबो तारतम लीखिया मने-मन केली मुदा भाँजपर बात नहियेँ चढ़लैन। आन-आन लग जे बेवहार होइत हो, माने कियो एकतरफा बजैत गेल आ दोसर कान पाथि एकतरफा सुनैत गेल, मुदा पति-पत्नीक बीच तँ एना नइ होइए। पति पत्नीक बीच तँ सबालो-जवाब आ विचारो-विमर्श होइत चलैए। बजैकाल भलेँ पतियो बजैत जे 'शिष्य जकाँ पत्नी छैथ' आ पत्नियोँ बजैत जे 'गुरु जकाँ पति छैथ', मुदा जइ दिन दुनूक बिआह होइए तइ दिन संगीक रूपमे सम्बन्ध कायम होइए आकि गुरु-शिष्यक रूपमे? ई दीगर भेल जे पति नीक पढ़ल-गुनल सुयोग होथि आ पत्नी तेहेन नहि होथि; जइसँ समय पेब जँ पति-पत्नीकेँ शिष्य जकाँ भलेँ किए ने पढ़बैत-गुनबैत होइन। खाएर...।

लीखिया बजली-

"से की?"

जहिना, दुखाएल मनमे ने भूखो-पियास मेटा जाइए मुदा सुखाएल (सुख-आएल) मनमे तँ रंग-रंगक भूख-पियास जगिते अछि; तहिना अतीतानन्दकेँ सेहो भेलैन। एक तँ खाली देह, मात्र लुंगी-जंघिया टा पहिरने छला, दोसर पत्नियोँ तँ बजारसँ आएले रहथिन। दुनूकेँ सामंजस करैत अतीतानन्द बजला-

"गप-सप्प पछाइत करब; पहिने किछु खाइ-पीबैक बन्दोवस्त करू। ओना, हमहूँ बजारसँ अननै छी मुदा खोलला पछाइत ने निकालब, तइ बीच...।"

अधडरेरेपर अतीतानन्दक बात रूकि गेलैन। लीखिया सेहो बुझि गेली जे पति अखन भुखाएल छैन तँए पहिने सएह बन्दोवस्त करब नीक हएत। तैबीच अपनो वस्त्रधारी भऽ जेता आ अपनो ओरियान भऽ जाएत। अनेरे सभ बातमे रक्का-टोकी केने समैयेक मौगैत होइए।

आइ बीस दिनसँ अतीतानन्दक कार्यालयमे ऑडिट चलि रहल अछि। रंग-बिरंगक ऑडिटर सबहक टीम, रंग-बिरंगक काजक ऑडिट करैले पाँच सालक पछाइत आएल छल। ओना, आमद-खर्चक ऑडिट साले-साल मार्चमे होइए मुदा काजक ऑडिट सभ साल नहियेँ होइए, जे पानसालक पछाइत भेल अछि। जहिये ऑडिटरक टीम पहुँचल आ सभ तरहक ऑडिट करबाक बात अतीतानन्द सुनलैन; तहियेसँ प्राणक पानि सुखए लगलैन। सुखबो केना ने करितैन, करखानाक कार्यालयक उप प्रमुख हेबाक कारणे जवाब तँ हिनके देब छेलैन।

अतीतानन्दक मनमे बीसो दिनक काज नाचिये रहल छेलैन कि पत्नी जलखैक प्लेट आ पानिक गिलास टेबुलपर रखि चाह बनबए चलि गेली।

निराश सुखल अतीतानन्दक मन आस भरल समैयक बीच तेना लटैक गेल छेलैन जे भोज्य-विन्यासक सुआद नीक जकाँ नहियेँ पेब रहल छला; तथापि अपन अँटकारसँ जलखै केलाक पछाइत पानि पीबए लगला कि लीखिया दू कप चाह तस्तरीमे नेने कोठरीमे पहुँच टेबुलपर रखि सामनेक कुरसीपर बैस पतिक हाथमे चाहक कप पकड़बैत अपनो कप उठा चाह पीबए लगली। दुनू, एक-दोसराक चेहरापर नजैरियो दौड़ा रहल छला आ चाहो पीब रहल छला। तहीकाल तीनू बेटा-बेटी खेला कऽ सेहो आएल। अबिते तीनू माता-पिताक सोझमे तीनू बच्चा अपन-अपन खेलक चर्च करैत एक-दोसराक प्रशंसो आ निन्दो करए लगल।

तैबीच चाह पीब अतीतानन्द सिगरेटक पहिल कश लऽ चुकल

छला, जइसँ मन हलकेने मनमे आगूक विचार पोनगए लगलैन। जहिना कोनो मुड़ी टुटल वा मुड़ी काटल गाछमे एकसंग अनेको कनोजरिक रूपमे मुड़ी निकलैए तहिना अतीतानन्दक मनमे अनेको विचार उठलैन। उठलैन अपन पूर्वक परिवार; माने पिताक अमलदारी तकक वंश...।

अतीतानन्दक मनमे अपन पूर्वक परिवार उठैक कारण भेलैन जे जखन दू दिन कारखानामे ऑडि ट चललैन कि गामसँ पितियौत भाए फोनमे कहलकैन- 'अतीत, पिताजी मरि गेलखुन तँए जेतेक जल्दी हुअ तेते जल्दी पहुँचह।'

एक दिस पिताक मृत्यु, जेकर मुँखाग्नि देबाक अधिकारो आ कर्तव्यो पुत्रक छीहे, सुनि, दोसर दिस अतीतानन्द अपन जीवनक आधार कारखानाकेँ देखलैन जे लेखा-जोखा चलि रहल अछि। कहिया तक हएत तेकर कोनो ठीक नहियेँ अछि। जीवन आ जीवनधारक बीच अतीतानन्द उगडुम करए लगला। जइसँ मनक संग विचारो फाटि गेलैन। फटैक कारण भेलैन जे दुनूमे सँ केकरा छोड़ब आ केकरा करब ? एक समयमे एक्केटा हएत। ओना, दुनूक परिस्थिति सेहो दू रंग अछिए। पिताक मुखाग्नि नहियोँ दऽ पेबैन आ श्राद्ध-कर्ममे पहुँचलोपर निमाहि तँ सकिते छी। मृत्युक दस दिनक पछाइत ने श्राद्ध-कर्म हएत, अँटावेशक तँ रस्ता अछिए। ऐठाम कारखानामे बन्हाएल छी, कोनो तरहक जँ दोसर विचार ऑडिटरक सामने राखब तँ ओ सोझे बुझि जाएत जे जरूर गोल-माल भेल अछि आ पुलिसक हाथ धड़ा जहल पठा देत, जइसँ एकक बदला दुनूक नोकसान हएत...।

पितियौत भाइक आवाज सुनि कनेकाल अतीतानन्दक मन ओइ मोड़पर जरूर अँटकलैन जे भैयारीमे असगरे छी, दोसर जँ रहैत तँ कहियो दैतिऐन जे अखुनका काज (मुखाग्नि) अहाँ अगुआ कऽ सम्हारू, पाछूसँ हम आबि रहल छी, मुदा सेहो ने अछि।

अतीतानन्दक मरियाएल विचारमे गाम–समाज–क जगियाएल विचार पनपलैन। पनपलैन ई जे अखनो गामक चलैनिक परम्परामे मृत्युजनकेँ मुखाग्नि आ दाह-क्रियाकेँ धर्मक उच्च कोटिक श्रेणीमे समाज रखनहि छैथ। हिन्दू हुअ कि मुसलमान, मृत्युक समाचार आनो-आनक सुनि दाह-क्रिया वा मटियबैले बिनु कहनौं समाजक समूह आगू भऽ कऽ तैयार होइते छैथ।

अतीतानन्द पिताक दाह-क्रियामे शामिल नहि भऽ सकला। परसू श्राद्ध-क्रियाक समय सेहो बीत गेल। तँए पिताक दृश्य सामनेमे नाचि रहल छेलैन, दोसर विचार पत्नीपर पहुँचते अँटैक गेलैन जे जखन पति-पत्नी अर्द्धनारीश्वरक रूपमे छी, तखन पत्नियोँकेँ तँ पठा सकैत रही मुदा...।

काजक धुमसाही मनक विचारकेँ तेना धुमसाहि देलकैन जे सोचै-विचारैक दरबज्जे बन्न भऽ गेलैन...।

पितापर सँ अतीतानन्दक विचारक नजैर निच्चाँ ससैर धिया-पुताक हल्लापर पहुँचलैन। सभ तँ अपने ताले बेताल अछि। तँए नीक हएत जे ऐठामसँ सभकेँ बहटारि अपने शान्तिक साँस ली। अपन डोलचियो आ बैगो पत्नीकेँ समुझबैत बजला-

“दुनू नेने जाउ। सभले खेलौनो, कपड़ो-लत्ता आ मिठाइयो-फल अनने छी। सभकेँ बाँटि देबइ।”

ओना, लीखियाक मन सेहो अपन पैछले साल जकाँ एकतीस मार्चपर अँटकले रहैन। अँटकबो केना ने करितैन। करोड़ोक करखानाक आमदनीक जवाबदेह पतिक ने पत्नी छैथ। लीखिया बजली किछु ने मुदा मन जेना गुम्हरलैन। परिवार चाहे किछु हुअए मुदा मन तँ सबहक अपन-अपन अछिए।

अपन मनक मुरादक संग पत्नी आ बेटा-बेटीक मुराद देखि अतीतानन्दकेँ आगूक बाट बोनाह बुझि पड़लैन। अपन रस्ता काटैत

पत्नीकेँ पुन: कहलैन- "डोलचीमे खेबा-पीबाक वौस अछि आ बैगमे कपड़ा-लत्ता, अपन कोठरी लऽ जा सभकेँ बाँटि दियौ, हमर मन असकताएल जकाँ अछि तँए कनी लोट-पोट करब... ।"

लीखियो एतेक धृत बान्हिये लेलैन जे बेरे-बेरी ने किछु लेब। आकि एक्के बेर सभटा हँसोथि लेब। ने अपने घर छोड़ि पड़ाएल जाइ छी जे तेकर धड़फड़ी रहत आ ने अपने केतौ पड़ाएल जाइ छैथ।

बैगो आ डोलचियो नेने लीखिया अपन कोठरी पहुँच बेटा-बेटीकेँ पहिने मिठाइ देलैन। जाबे ओ सभ मिठाइ खेलक ताबे खले-खल सबहक लत्ता-कपड़ा सेहो सहिआरि लेलैन। पतिक कपड़ा एकभाग रखि अपन कपड़ा निग्हारि-निग्हारि देखए लगली। आगूमे रंग-रंगक कपड़ा देखि तीनू बच्चा हाँइ-हाँइ कऽ मिठाइ खा बिनु हाथ-मुँह धोनहि अपन-अपन कपड़ा तीनू हथियौलक।

अतीतानन्दक कपड़ा नेने लीखिया कोठरीमे पहुँचली तँ देखलैन जे चीतगरे पति दुनू आँखिपर दुनू बाँहि समेट कऽ राखि पड़ल छैथ आ दुनू आँखिसँ नोरक धार टघैर रहल छैन। बिना किछु बजने लीखिया ठाढ़े-ठाढ़ मने-मन विचारए लगली। दुनू बाँहिसँ दुनू आँखि झाँपल तँए अतीतानन्द पत्नीकेँ नहि देखलैन। किछु काल ठाढ़ भेला पछाइत लीखिया मुहसँ तँ किछु ने बजली, मुदा खखास ऐ रूपेँ केली जे पतिक आँखि खुजलैन। बाँहि आँखिपर सँ हटैबते अतीतानन्द देखलैन जे पत्नीक हाथमे वस्त्र छैन।

खखास सुनि अतीतानन्द हाँइ-हाँइ कऽ अपन दुनू आँखिक नोरक टघारकेँ हाथक तरहत्थीसँ पोछि अश्रुधारकेँ मेटौलैन। पत्नीक जिज्ञासु आँखिमे अतीतानन्दक एकाग्र आँखि तेना सटि गेलैन जे जीवनक एक नव रंग-रूप ठहकए लगलैन। यएह छी वंश आ वंशगत परिवार।

जइ समय गाममे दुर्दिनावस्था छल , ने पानि पीबैक भरपूर साधन

छल आ पेट भरैक निसचित आधार, तहू समैयक लोक अपन वंशक लोचन बनि, आगूओ देखै छला आ पाछूओ देखै छला। देखै छला जे परिवारक मध्य हम ठाढ़ छी, आगू बाल-बच्चा अछि आ पाछू माता-पिताक संग समाज सेहो अछि। सभ तरहक जिनगी–माने सभ उमेरक मनुखक जिनगी–एकसंग अछि। तँए जिनगीक कसौटीपर जखन अपनाकेँ रखै छी तखन यएह ने देखै छी जे जिनगी ठाढ़ केना रहत आ ठाढ़े-ठाढ़ गतिशील केना हएत। तँए मनुखक पहिल आवश्यकता भेल जिनगीकेँ ठाढ़ राखब। जहिना बाल-बच्चा नि:सहाय होइए जेकरा दोसरक सहायताक जरूरत अछि, जइसँ अपन प्राणपण जीवनकेँ प्रणमय बनबैत जुआनी-बुढ़ापा दिस बढ़त; तहिना वृद्ध माता-पिता सेहो नि:सहाय भइये जाइ छैथ, ओना बच्चाक नि:सहायक कारण अलग ढंगक अछि, मुदा शरीरे ने दुनूक मूल भेल। बच्चाक खिच्चा शरीर आ बुढ़ापाक सकसँ असक भेल शरीर, जेकर रक्षा तँ तखने ने हएत जखन दुनूकेँ भरपूर सहायता भेटतैन।

ऐठाम माने एहेन विचार लग अबैत-अबैत अतीतानन्दक छाती दहैल गेलैन। दहलाइत मन तरैस उठलैन-

“यएह छी जिनगी।”

पतिक मुँहक बात ‘यएह छी जिनगी’ सुनि लीखिया मने-मन लड़ी-मे-कड़ी जोड़ैत बजली-

“अहीले ने दुनियाँ हेरान अछि।”

ओना, अतीतानन्दक विचारक पाछू लीखियाक अपन विचार रहैन, मुदा सोझमे पत्नीक विचार सुनि अतीतानन्द अपन पहिल विचारकेँ तह दैत बजला- “हँ, से तँ अछिए। मुदा कियो हनुमान जकाँ समुद्र कुदि जाइए आ कियो गुँह-डाबरमे गुड़-गुड़ा मरैए।”

लीखियाक विचार जेना अपने मनक विचारमे फँसि टकरेलैन

तहिना भेलैन। अपन पाशा बदलैत, किए तँ एकतीस मार्चक ने दोसर साँझ छी, लीखिया बजली-

“आइ अहाँक मन एना विरहाएल-वौआएल किए अछि?”

एक दिस जहिना लीखिया पतिकेँ अपना दिस झुकबए चाहि रहल छेली तहिना दोसर दिस पितृ रूपमे पिता अतीतानन्दक नजैरिक सोझमे आबि कहि रहल छेलैन जे ‘बौआ, तूँ बच्चा नहि छह जे छोड़ल जा सकैए, तूँ वंशेक आशाटा नहि हमरो आशा छेलह। मरलौं , पंच तत्त्वमे विलीन भेलौं, दुनियाँक रीतिमे रीतियेलौं। मुदा जखन असोथकित भ ऽ मरि रहल छेलौं तखन तूँ हमर आशा रहलह?

पिताक विचार अतीतानन्दक मनकेँ तेना मेमिया देलकैन जे अनायास मुहसँ निकलैन-

“नहि, हम नहि रहलौं। ऐठाम कियो आन नइ अछि जे अपन इमान गमाएब।”

पतिक मुँहक बात सुनि लीखिया चोन्हिया गेली जे की कहलयैन आ की बुझि उत्तर देला..! लीखिया बजली-

“अहाँक विचार वन-तनमे ने तँ वौआ रहल अछि?”

जहिना लीखियाक प्रश्न छोट छेलैन तहिना एक्के शब्दमे अतीतानन्द बजला-

“हँ।”

एक तँ ओहिना लीखिया चोन्हियाएल छेली तैपर सँ पतिक बात ‘हँ’ सुनि आरो भोतिया गेली। आगू-पाछूक भयावह दृश्य देखि लीखियाक मनमे भेलैन जे शान्त भऽ आदेश आदेशधार धारक पत्नी जकाँ चुप-चाप आगूमे ठाढ़े रहब नीक हएत। यएह सोचि लीखिया चुप-चाप आगूमे ठाढ़ भऽ पतिक आँखिमे अपन आँखि गाड़ि देली।

पत्नीकेँ एकटक ठाढ़ देखि अतीतानन्द बजला-

"पिताजी, आँखिक सोझमे आबि ठाढ़ भऽ अपनो जिनगीक हिसाब दऽ रहला अछि आ हमरो हिसाब पुछि रहला अछि।"

पतिक बात सुनि लीखिया चारू दिस आँखि उठा ताकए लगली तँ केतौ ने किनको देखलैन। अपने मनमे उठलैन जे किए ने हिनकेसँ पुछि लिऐन। बजली-

"की हिसाब?"

पत्नीक बात सुनि अतीतानन्दक मन जेना शान्त-चित्तवन दिस विदा हुअ लगलैन। मुदा एकाएक मनकेँ रोकि विचारलैन जे जिनगी अनन्त अछि तँए आगू-पाछूकेँ अखन मनसँ हटा मात्र बीतल बीस दिनक सुकाल-कुकालक बीचक बात सुना किए ने हुनको विचार बुझि ली। विचारेक लेब-देब सँ ने दुनियाँक विचारधारो बनैए आ ओइमे प्रवाहो अनैए, जे प्रवाहित होइत या तँ भुतही-बलान बनैए या भुतही-कमला बनैए। तँए कहब जे गंगा कि महागंगा आकि अकास गंगा नहि बनि बहैए, सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो तँ अछिए। हृदय खोलि अतीतानन्द संगिनी लीखियाकेँ कहलैन-

"मनक बात आइ जिनगीक पहिल दिन कहै छी।"

पतिक बात सुनि लीखियाक मनमे भेलैन जे भरिसक मनुखदेवा ने ते छुबि-तुबि लेलकैन अछि। मुदा ओ तँ कोनो धाइमे वा भगतेसँ परिचयो हएत आ मेटेबो करत। एहनो तँ भइये सकैए जे पतिक दशा देखि अपने मन वौआए लगल हुअए।

मनकेँ मोड़ैत मुस्की दैत लीखिया बजली-

"अहाँ ते अपने मुहेँ बजै छी जे हम मन-मोहिया पति नहि मन-चोरिया छी।"

पत्नीक बात सुनि अतीतानन्द गम्भीर होइत बजला- "अठारहम

दिन पितियौत भाय फोनसँ कहलैन जे अतीत, पिताजी मरि गेलखुन तँए जेतेक जल्दी हुअ गाम आबह..!"

कहि अपराधी जकाँ अतीतानन्दक छातीमे विचारक हिलकोर मारलकैन, जइसँ सौंसे देह सिहैर बोलती बन्न भऽ गेलैन।

पति दिस हिया-हिया लीखिया देखए-सुनए चाहै छेली, जे आगू बजै की छैथ आ करए की चाहै छैथ।

पत्नीक प्रतीक्षित मन देखि अतीतानन्द बजला-

"जइ दिन जे हेबाक रहै छै ओ तँ हेबे करैए। ओ कि हमरा रोकने रोकाएत। मुदा..?"

'मुदा' कहि अतीतानन्द चुप भऽ गेला। लीखियाकेँ पतिक विचारक कोनो भाँजे ने लगलैन जे की मनमे छैन आ की बाजि रहला अछि। फेर लीखिया बजली-

"से की?"

पैछला सभ विचारकेँ मटियबैत अतीतानन्द बजला-

"जइ दिन पिताक आश्रयसँ दिल्ली विदा भेल रही तही दिन गामक सीमान तक अड़ियाइत पिताजी कहने रहैथ- 'बौआ, अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह। मुदा..!"

विस्मित होइत लीखिया बजली-

"मुदा की?"

अतीतमे औनाइत अतीतानन्द बजला-

"ओइ दिन पिताजीक बातक अर्थ; माने विचारक अर्थ एतबे बुझलौं जे अपन गौं आँ-घरूआकेँ चिन्हैत चलब। मुदा सेहो कहाँ निमाहि पेलौं। ने सएह निमाहि पेलौं आ ने अपन...।"

अधबोलिया बोली सुनि लीखिया बजली- "की अप्पन?"

नमहर साँस छोड़ैत अतीतानन्द बजला-

“पिताजीक ओ विचार जे ‘अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह’क अर्थ आइ बुझै छी जे जेते अपनाकेँ चिन्हैत चलब ओते दुनियाँकेँ देखैत भ्रमित होइत भ्रमणो करब। मुदा..!”

लीखिया-

“मुदा की?”

अतीतानन्द-

“किछु ने।”



शब्द संख्या : 2361, तिथि : 11 जनवरी 2020

दहेज

एक पनरैहियासँ आने गाम जकाँ सुदर्शनपुरमे सेहो गलगुल चलि रहल छल मुदा तैपर सुदिष्ट काका मिसियो भरि धियान नइ दइ छला। जेहेन जहिया वा जखुनका समय हुअ (रहै) तखन तइ रूपेँ ओइपर धियान देबे ने जिनगीक गतिकेँ चिन्हब-जानब भेल। यएह सोच सुदिष्ट कक्काक मनमे घर केने छैन; तँए अपन पूस-माघक जाड़क समय बितेबाक ओरियानमे लगल छैथ। ओछाइनपर नीन टुटिते, उठि कऽ ठाढ़ होइसँ पहिने अपन अबैबला दिनक माने आजुक हिसाब जोड़ि मने-मन उपायक गर बैसा लइ छैथ जे आइ की सभ करक अछि, तइले कोन-कोन वस्तु अपने अछि आ कोन-कोन वस्तुक ओरियान करैक अछि। जहिना गरमी मासमे पानिक खरचा बेसी होइए तँए पाइनिक ओरियान पहिल भेल तहिना जाड़क मासमे जाड़क हिसाबसँ अगियासीक जरूरत सेहो बेसियाइये जाइए तँए जाड़क मासमे अगियासीक बेवस्था करब पहिल काज भऽ जाइए। अहिना सुदिष्ट काका अपन जिनगीकेँ ओरिया कऽ चलबैत आबि रहला अछि।

एक पनरैहियासँ जे गाममे गलगुल चलि रहल छल ओ पाँच दिनसँ बेसी जोर पकड़लक अछि। गामक हबे जखन तेज गतिमे आबि गेल अछि आ लोकक देहमे नइ लगै, सेहो बिसवसनीय बात नहियेँ भेल। सुदिष्ट कक्काक मनमे सेहो हवा लगलैन। एते दिन माने पाँच दिन पूर्वसँ पनरहम दिन तक, सुदिष्ट काका गलगुलकेँ ताशक चटसार परक गप बुझै

छला, किए तँ जइ ताशमे चरि-चरिटा बादशाह-बीबी अछि, तइमे जँ कियो दुनू आँखिबला अछि तँ कोनो एको आँखिबला तँ अछिए। सएह बुझै छला सुदिष्ट काका, मुदा पाँच दिनसँ जे हल-चल गाममे बढ़ल तइसँ अधा-छिधा बुझिमे एलैन जे दहेजक आन्दोलन 'मानव शृंखला'क रूपमे एक गामक नहि बल्कि एक राज्यक मुद्दा बनल अछि। दहेज लेब कानूनी अपराध छी, तँए आन्दोलन भऽ रहल अछि।

ओछाइन छोड़ि सुदिष्ट काका रस्ता दिस हिया कऽ तकलैन जे जँ कियो भेटता तँ नीक जकाँ विचारकेँ बुझब।

सून-मसान जकाँ रस्ता तँए कियो केतौ नहि देखि पड़लैन। भाय! गामो-घरक रस्ता जोरगर बरखा होइकाल, झाँट-बिहाड़ि वा बेसी रौद वा बेसी शीतलहर भेने एक गामक कोन बात जे गाम-गामक रस्ता सून-मसान भइये जाइए। मनमे उठलैन, जखन बेसी रौद होइए तखनो तँ घैलमे पानि भरि गिलास-लोटा नेने रस्ताकातक गाछ लग बैसल पानि पीऔनिहारकेँ पियासल भेटिये जाइ छै, जइसँ आशा पूर भइये जाइ छइ। तहिना जँ अपनो अखन घूर पजारि ली तँ आगि तपैले कियो-ने-कियो पहुँचबे करता, अपने तँ गामक दल-मलीक सभ भाँज लगि जाएत। अही आशाक संग सुदिष्ट काका रस्ताकातक ओसारपर घूर पजारि बैस गेला। घूर नीक जकाँ पजरलो ने छल कि गामेक एकटा परिचायिका धमैक खसलैन। जाड़सँ सिरसिराइत परिचायिका घूर लग अबिते बाजल-

"काका, बड़ धरम हेतैन! एकटा मरैत जानमे प्राण बँचा लेलैन, नइ तँ आइ मरि जइतौं।"

सुदिष्ट काका बजला- "से की?"

परिचायिका- "चारि बजे भोरेसँ गाममे घुमि-घुमि सभकेँ शृंखलामे भागीदार बनैले जानकारी दइ छिऐन।"

सुदिष्ट काका बजला- "कथीक शृंखला छी?"

तैबीच आगिक ताउ पेब परिचायिकाक मन सेहो थोड़ेक गरमा कऽ नरमा गेल। बाजल-

"काका, दहेज कानूनी अपराध छी तँए ओकरे आन्दोलन मानव शृंखलाक रूपमे हएत।"

ओना, परिचायिकाक बात सुनि सुदिष्ट कक्काक भीतुरका मन थोड़ेक ठहकलैन। मुदा तेकरा भीतरेमे रखलैन। ठहकलैन ई जे ई आन्दोलन तँ ओकर भेल जेकर मुद्दा छी। माने जेकरा ऊपर दहेजक भार अछि। अपने तँ ऐ मुद्दासँ बहरा गेल छी। किए तँ बेटा-बेटीक बिआहक प्रक्रियाक विषय दहेज भेल। अपने तँ पाँचो बेटा-बेटीक बिआह बिना दहेजक केनहि छी, तखन अपन मुद्दा किए हएत। मनक खुशीकेँ मनेमे रोकैत सुदिष्ट काका बजला-

"दहेज जखन कानूनी अपराध छी तखन तँ कानूनी मुद्दा भेल, तइले ते कोट-कचहरी आ थाना-पुलिस अछिए। कानूनकेँ जन-जन अपना हाथमे लिअए एहेन तँ बेवस्था नहियेँ अछि।"

बाल-बोध परिचायिका, बाल-बोधक माने भेल बोध ओकर बच्चा छै उम्र तँ बीस सालसँ ऊपरे छइ। जेते बात प्रचार करैले आदेश भेटल छेलै, तेतबे बुझै छल। बीचमे घूर धधकने परिचायिका टनैक सेहो गेल, जइसँ मन काजपर नाचए लगलै। ठाढ़ होइत बाजल-

"काका, तीन दिन आउरो एहेन तबाही अछि, चारिम दिनसँ ते फेर निचेने-निचेन रहब।"

बाल-बोध परिचायिकाकेँ सुदिष्ट काका की कहितैथ तँए मुस्कुराइत बजला-

"बुच्ची, अपना सबहक पूर्वज जे रिसी-मुनी छेला ओ माघक जाड़केँ केना पछाड़ने रहथिन से बुझल छह?"

सुदिष्ट कक्काक अभ्यंतर मनमे छेलैन जे थोड़ेकाल जँ आरो घूर लग बैसत तँ जाड़सँ लड़ैक आरो खोराक भेट जेतै, जे नीकोमे आर नीके ने हएत।

बाल-बोध परिचायिका बाजल-

"नइ! नहि।"

सुदिष्ट काका बजला-

"बुच्ची, आब बैसबह कथीले, ठाढ़े-ठाढ़ सुनि लएह। भने घूरो धधकले अछि।"

विचारक जिज्ञासा कि आगिक आकर्षण आकि काजक खानापुरी परिचायिकाक मनमे की उठल से तँ वएह जानत मुदा सुदिष्ट कक्काक मन कहलकैन जे विचारकेँ तेना ओझरा कऽ बाजब जे पनरह मिनट ओकरा सोझरा कऽ बुझैयेमे परिचायिकाकेँ लगतै, तही बीचमे टनगरो भऽ जाएत।

ने धधकल घूर परिचायिकाकेँ छोड़ए चाहै छल आ ने परिचायिका अपनाकेँ छोड़ा पेब रहल छल। संयोगक लाभ उठबैत परिचायिका बाजल-

"काका, अहाँक जे बात-विचार आ बेवहार अछि; ओ गामक केते लोकमे अछि। भरि दिन वौआइ छी तखन कहुना-कहुना कऽ घरक निमरजना होइए। तहूमे जुआन-जहान भेलौं, ने असगर चलब बनैए आ ने बिना चलने काज चलैए।"

परिचायिकाक मनक विवसता देखि सुदिष्ट कक्काक अपने मन गवाही दैत कहलकैन, अपन साधक बात तँ नहियेँ अछि मुदा विचार करैबला तँ अछिए। बजला-

"बुच्ची, अपन पुरखा सभ–माने महिला जगत, कन्हापर लग्गी नेने असगरे बोने-बोन सुखल जारैन तोड़ि कऽ अनै छेली, जइसँ भानसो करै

छेली आ पूस माघक शीतलहरी सन समैयोसँ मुकाबला करै छेली।”

जेना केकरो नव बात वा नव विचार वा नव घटना कानमे पड़िते कान ठाढ़ होइए तहिना परिचायिकाक कान ठाढ़ भेल। परिचायिकाक चेहरा देखि सुदिष्ट काका आँकि लेलैन जे जे बात कहलिऐ ओकर असर भरिसक परिचायिकाक मनमे भऽ रहल छइ। मुदा मुहसँ किछु निकैल नहि रहल छेलइ। तँए, खोरियबैत सुदिष्ट काका बजला-

“बुझलह कि नहि?”

“कनी-मनी।”

परिचायिकाक ‘कनी-मनी’ बुझबसँ सुदिष्ट काका अपन विचारकेँ संचरित करैत पूर्ण-मणि दिस धकेलैत बजला-

“बुच्ची, बोने-बोन जे पूर्वज कन्हापर लग्गी नेने नरभक्षी बोनैया जानवरो आ बोनैया मनुखोसँ अपन रक्षा करैत जखन जीवन निमाहलैन तखन अपना सभ तँ एकैसमी शदीक लोक भेलौं किने। ”

सुदिष्ट कक्काक विचारकेँ परिचायिका कोन रूपेँ केते बुझलक से तँ वएह बुझत; मुदा विचारक प्रवाहमे बाजल-

“से तँ भेबे केलौं।”

बाल-मन आ एकान्त मन ओहन मन होइए जइमे दुनि याँक हवो-पानि प्रवेश नहि कऽ पबैए, मुदा जँ प्रवेश करैए तँ ओ मन मणि बनि जीवन भरि चमकैत रहैए। अनुकूल परिस्थिति देखि सुदिष्ट काका अपन बोनैया विचारसँ आगू ससरैत घरैया बनि बजला-

“बुच्ची! पूस-माघक समय छी, अखन ओकरा छोड़ि दोसर-तेसर दिस समय गमाएब जिनगी गमाएब भेल। तँए अखन जे समय अछि से बुझि लएह।”

सुदिष्ट कक्काक विचार जेना परिचायिकाक मनकेँ जोतल-

चौकियाएल चौमास जकाँ जे बीआक मांग करैत रहैए तहिना परिचायिकाक मन सेहो विचारवान बनैक बीजक मांग करए लागल। बाजल-

“की बुझैले कहलौं काका?”

परिचायिकाक जिज्ञासासँ भरल प्रश्न सुनि सुदिष्ट काका बजला-

“अपन पूर्वज माघ सन समयकेँ धैर्जक संग तेना मुकाबला करै छला जे एक दिन खटियेने बिसवासक संग बजै छला जे ‘गेल माघ उनतीस दिन बाँकी।”

‘गेल माघ उनतीस दिन बाँकी’ सुनि परिचायिका अक-बका चारू दिस ताकए लगल, ई की भेल..! तीस दिनक मास (महीना) होइए तइमे एक दिन बीतने सोल्होअना माघ केना खेप गेल जे शीतलहरीसँ लोक बँचि जाएत।

ओना सुदिष्ट काका मने-मन मानि गेला जे जेतेकाल परिचायिकाकेँ अँटका पूर्णरूपेँण ओकरा ऐगला काज करै-जोकर बनबए चाहै छेलौं से तँ बनि गेल। किए तँ जैठाम अपन विचार पनरह मिनट अँटका घूर तपबैक छल, तैठाम बीस मिनटसँ बेसीए भऽ गेल...।

सुदिष्ट कक्काक विचारमे मोड़ एलैन। मोड़ अबैक कारण भेलैन जे कम्मो वेतनक नोकरी वेचारीक किए ने हौ; मुदा जँ कियो ऊपरबला आगि लग बैस गप-सप्प करैत देखत तँ अनेरो बेचारीकेँ फज्झैत करतै, तइसँ नीक जे अपने विचारकेँ किए ने समेट ली। बजला-

“बुच्ची, अनसोहाँत जकाँ विचार जरूर अछि जे एक दिन बीतने महिना केना मानल जाए, आब कि कोनो रिनिया-महाजनक जुग रहल जे एको दिन बीतने भरि मासक सुइद लैत। बैंकोबला सभ पनरहे दिन मानने अछि। तीस दिन छोड़ि पनरहे दिनक सुइद लइए। अपन पूर्वज अपना सभकेँ एक दिनक महत ऐ रूपेँ कहने छैथ जे जेकरा एक दिन माघ

सन जाड़ माने गरुगर समय काटैक लूरि भऽ गेल ओ एक माघकेँ के कहए जे जिनगीक सइयो माघ काटि सकैए।”

सुदिष्ट कक्काक विचार सुनि परिचायिकाक चैन जेना चमैक उठल तहिना रोमांचित भऽ गेल। सुदिष्ट काका बिना किछु बजने ने परिचायिकाकेँ जाइले कहलखिन आ ने आगूक कोनो विचार सुनैले कहलखिन; मुदा आँखिक नोरकेँ नजैरिक पानि जरूर बुझलखिन। परिचायिको जेना उन्मत भऽ गेल हुअए तहिना बिना किछु बजने आगू बढ़ि गेल।

असगरे सुदिष्ट काका घूर लग बैसल दहेजक ‘मानव शृंखला’ पर विचार करए लगला। मुदा विचारक जे पहिल पन्ना होइए जइ पन्नामे चिचोरो आ केशौरोक फड़ होइए, तैठाम पहुँच मने-मन मानव शृंखला बनौनिहारकेँ धन्यवाद देलैन। धन्यवादक पवित्र पात्र भेटलैन तुलसी बाबाक लेखनीमे, जे लिखने छैथ, ‘जानत है सब कोइ पर मानत न कोइ है।’ सौंसे बिहारक लोक शृंखलामे अपन भागीदारी देखौता मुदा ओ तँ ईहो कहता ने जे बिहारक कोन क्षेत्र वा कोन समुदाय एहेन अछि जइमे दहेजक चलैन दौड़ैत नहि चलि रहल अछि, ओ लेबैया के छी आ देबैया के छी? के केकर विरोधी भेल आ के केकर पक्षधर? ऐठाम समुदायक दोसर अर्थ अछि। समुदायक अर्थ जाति विशेषसँ अछि, किछु समुदाय अखनो धरि घोषणा करै छैथ जे हमर समुदाय दहेजसँ बँचल अछि, मुदा चोर-नुकबा की सभ भऽ रहल अछि सेहो तँ हुनके मुहसँ ने निकलतैन?

..गजपट विचार मनमे उठिते सुदिष्ट कक्काक एक विचारक प्रवाहकेँ दोसर विचार रोकैत कहलकैन- ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल, अखन एकान्तमे बैसल छी आ विचार भऽ रहल अछि सबजाना। सबजानामे ने दस रंगक विचार दस दिससँ उठैए आ घंघौज होइए, एकान्तमे से किए हएत। भरिसक अपने मन वौआ गेल।

मनकेँ एकचित्त करैत सुदिष्ट काका दहेजक पहिल पन्नाकेँ उनटौलैन। समाजमे दहेजक चलैन नहि छल। ओना, लोकक संस्कारमे ई विचार जरूर छेलै जे रामायणो आ आरो-आरो पौराणिक साहित्यमे बर-कन्याँकेँ विदाइ स्वरूप कन्याँगत–माए-बाप–गाड़ीक-गाड़ी वस्तु-जात दइ छला। जेना जनकजी सेहो राम-सीताकेँ देने रहथिन।

जातिमे विभाजित समाजक नैतिक बल ओतेक मजगूत छेलैन जे बेटाक प्रति दहेजकेँ बेटा बेचब बुझै छला। जइसँ दहेजकेँ पाप मानि वर्जित केने छला। वएह आइ शासकीय भाषामे, कानूनी भाषामे अपराध भेल आ ओइले जहल-जुर्माना सभ अछिए, तैयो जन-आन्दोलनक जरूरत पड़ि गेल अछि। जाति विभाजित समाजमे की सभ जाति पोखैरमे खसल महजाल जकाँ एक्के बेर दहेजकेँ मानि चलैनमे लऽ अनलैन आकि जाति-विशेषसँ शुरू भेल..?

तहीकाल गोपीलाल सिरसिराइत आबि घूर लग बैसल। गोपीलालकेँ सिरसिराइत देखि सुदिष्ट काका दूटा सुखलका खुहरी घूरमे लगा फूकि कऽ धधकौलैन। ओना, कक्काक मनमे उठैत रहैन जे गोपीलालकेँ पुछिऐ जे भोरे-भोर शीताएल नढ़िया जकाँ ओसमे केतए-सँ एलह अछि। मुदा शीतक मारि सुदिष्ट काकाकेँ अपनो बुझल रहैन। बुझल ई रहैन जे बारह बजे रातियेसँ महींस बों -बाँ करए लगल। अहिना माघ मास रहइ। तेते बों-बाँ करैत रहए जे नीन अबैये ने देलक। केतबो सुतैक ओरियान केलौं मुदा नीन नहि भेल। जइसँ मन करूआ गेल। ओही करूएलहापर तीन बजे भोरेमे महींसकेँ नेने पारा ताकए विदा भेलौं। अपना गाममे पारा रहबे ने करए, दोसर गाम गेलौं, ओइ गामक लोक कहलक अखने पूबरिया गाम गेल। अहिना किरिण उगैत सात गाम घुमलौं। तेहेन ठंढा लागल जे तीन मास दवाइ खाए पड़ल।

पान-सात मिनट धरि ने सुदिष्टे काका किछु बजला आ ने गोपियेलाल किछु बजला। ओना, सुदिष्ट काका टनटनाएले रहैथ,

गोपियोलाल टनटनेला। टनटनाइते गोपीलाल बजला- “ऐ बेरक शृंखला दुनियाँमे गदमिशान करत।”

अनभुआर जकाँ सुदिष्ट काका बजला- “नइ बुझि पेलौं, गोपी।”

जे समाजक काजमे ऐगला वाहन होइ छैथ, उचितवक्ता सेहो होइते छैथ। बजैक क्रममे की बजलौं आकि नइ बजलौं ई दीगर भेल , मुदा टटका सबाल तँ उठैबते छैथ। उनटा उठबै छैथ आकि सुनटा, से तँ जेहेन सुननिहार तेहने ने बुझता। गोपीलाल बजला-

“सुदिष्ट भाय, ऐ बेरक शृंखलामे साहित्यकारो सबहक भरपूर सहयोग छैन।”

साहित्यकारक सहयोग सुनि सुदिष्ट काका बजला-

“वाह!”

‘वाह’ तँ मुहसँ निकैल गेलैन मुदा साहित्यकारक नाओं सुनि दोसर विचार मनमे उठि गेलैन। विचार उठिते सुदिष्ट कक्काक मन बुदबुदेलैन-

“लंकेश्वर छी हम निर्भिक फेर गबै छी गौले गीत।”

आइसँ चालीस-पचास बर्ख पूर्व जे साहित्य निर्माण भेल ओइमे ‘बिआह आ दहेज प्रथा’ मुख्य विषय छल। समाजक रूप दहेजक आधारपर एकसँ शुरू भेल आ पनचानबेपर पहुँच गेल अछि। जे निनानबे गोरे दहेजकेँ निकृष्ट बुझि परहेज केने छला ओ समाज आ आइ पनचानबे गोरे जे इज्जत-आबरू मानि दहेज लऽ रहला अछि, अही बीचमे ने दहेज धुर-झाड़ दौड़ रहल अछि। तही विरोधमे ने ‘मानव शृंखला’ जन-जनकेँ जगबैक पाछू बेहाल भऽ रहल अछि। मुदा फेर लगले मनमे भेलैन जे कुत्ता केकरो आ किदैन देखए कोइ..!

सुदिष्ट कक्काक मन तँ पाछू दिस मुड़लैन मुदा अपने दोसर मन धिक्कारैत कहलकैन ई पड़ाइनवादी विचार भेल। हम कि कोनो संयासी छी जे परिवार-समाज सभकेँ छोड़ि बोने-झाड़े वौआइत रहब। ‘जखने

जागी तखने परात', अखन तक समस्यो (दहेज प्रथा) केतौ नुका कऽ तँ केतौ देखा कऽ, केतौ चोर-घुसकी तँ केतौ डक-डकौआ चालिमे चलिये रहल अछि, मुदा समस्या भलेँ जुआ कऽ शीलगर किए ने बनि गेल हो मुदा ओहन समस्या तँ छीहे जे समाजक कोढ़-करेज खोखैर-खोखैर कऽ खा रहल अछि...। विचारक सीमापर अबिते सुदिष्ट कक्काक मन जहाँ आगू बढ़लैन कि अनेको एहेन-एहेन समस्या सभ आँखिक आगूमे झलकए लगलैन। शिक्षाक की गति अछि, वैदिक पद्धतिक समाजक की गति अछि। मुदा किछु बाजबसँ परहेज केने रहला। तैबीच गोपीलाल बजला-

"ऐ बेरक जे तैयारी अछि, माने 'मानव शृंखला'क, ओ जन-जागरण अनबे करत। जन-जनकेँ उठा दौड़ेबे करत। जखने जन-जागरण भेल तखने ने दहेज सन-सन कुरीतो मेटाएत। जे सम्पैत पानिमे जाइए ओ बँचबो करत। जखने सम्पैतिक समुचित उपयोग करब लोकमे आबि जाएत तखने ने ओ जिनगीक बाटपर दौड़ैत चलत।"

सुदिष्ट कक्काक विचारक प्रवाह अपना प्रवाहे उठए चाहि रहल छेलैन मुदा अपने मन रोकैत रहलैन। रोकैक कारण छेलैन जे गोपीलाल तँ चटसार परक चटिया छी, झूठ-सच, ऊँच-ले-ऊँचक कोनो विचारे नइ छै, मुदा अपने तँ से नहि छी। गोपीलाल कि कोनो ओहन चटसारक विचारक लोक छी जे कोनो गम्भीर मुद्दाक चर्च करब। तँए गोपीलालक बाहवाही करैत बजला-

"वाह..!"

अपन बाहवाही सुनि गोपीलालक मन अकासमे उड़ि गेलैन। उड़बो केना ने करितैन; एक तँ जाड़क ठिठुरल शरीरकेँ आगिक शक्ति भेटल जइसँ समैयक हिसाबे शक्तिवान भऽ गेला; दोसर सुदिष्ट कक्काक बाहवाही सेहो भेटबे केलैन। तैसंग जन-जागरणक पाछू शीत-रौद सभ

सहैले तैयारे छैथ।

गोपीलाल बजला- “भाय साहैब, पाँच बर्खक भीतरे अपना देशमे पचास खरब डॉलर; जे एक डॉलर अपन सत्तैर रुपैआक लगभग होइए, ओत्तेक अगुआ जाएत। आब अहीं कहू जे सरकारे केते क ऽ सकैए?”

गोपीलालक विचार सुनि सुदिष्ट कक्काक दोसर मन तम्मान नइ मानलकैन। बजला-

“पचास खरब पचास गोरेक जेबीक सम्पैत हएत आकि सबा अरब लोकक जेबीक सम्पैत?”

शब्दक उड़नबाज जहिना एक डारिसँ दोसर डारि आ एक गाछसँ दोसर गाछपर उड़ि-उड़ि टाँहि मारैए; तहिना गोपीलाल सेहो छथिए। दोसर डारिपर कुदैत बजला-

“भाय साहैब, हम सभ संकीर्ण विचारसँ नइ ने जुड़ल छी, देश-दुनियाँ दिस तकै छिऐ किने? दुनियाँक बीच देशेक गणना हएत किने।”

सह दैत सुदिष्ट काका बजला-

“यएह ने भेल विश्वामित्र बनब। एकटा बात कहह, देशक सोल्होअना दहेज पचासेटा कैं भेटतै कि सबा अरबकैं?”

सुदिष्ट काका गोपीलालकैं आँकि नेने छला मुदा गोपीलालकैं दिग्भ्रम भेल छेलैन जे सुदिष्ट भाय अपने सहमेलू विचारक छैथ। बजला-

“भाय साहैब, देशक एक-एक बच्चा तक के ने भेल।”

गोपीलालक बात सुनि सुदिष्ट कक्काक मनमे उठलैन जे पुछिऐ, जहिना अखन केकरो निरीह बच्चा कानि-कानि रोडपर भीख मंगैए आ केकरो बच्चा हवा-जहाजपर जनमैए, तेहने देशक सम्पैत ने हएत। मुदा अनेरे अपनो समयकैं नष्ट करब नीक नहि बुझि सुदिष्ट काका चपाड़ा भरैत बजला- “अहाँ सन-सन जुआन-जहान जखन आन्दोलन करैले

तैयार अछि, तखन देशकेँ आगू बढ़ैसँ के रोकत।"

संजोग बनल गोपीएलाल घूर लगसँ उठैत बजला-

"भाय साहैब, अखन छुट्टी दिअ। काजक जबरदस्त धुमशाही सिरचढ़ अछि।"

सुदिष्ट काका-

"हँ, हँ, जाउ।"



शब्द संख्या : 2431, तिथि : 15 जनवरी 2020

जेहेन मति तेहेन गति

फागुन मास, भिनसुरका आठ बजेक समय। अपन अरजल पाँच कोठरीक मकानक अपन बैसारक कोठरीमे असगरे बैसल धर्मनाथ बाबू अखबारक प्रतीक्षा कऽ रहल छला। अखबार समयपर हाथमे नै एने मन कोठरीसँ निकैल दुनियाँ (प्रकृति) दिस बढ़लैन। फागुन अपन फगुआक उत्साह लोकमे जगाइये चुकल छल। भगवानोक केहेन लीला छैन जे दिनो-रातिकेँ कहियो एको रंग बनबै छैथ तँ कहियो दिनकेँ नमहर आ रातिकेँ छोट बनबै छैथ, तँ कहियो रातियेकेँ नमहर आ दिनेकेँ छोट बनबै छैथ। अजीव श्रृजनकर्ता ओहो छैथ। कहियो गरमी जाड़केँ पटैक छातीपर बैसैए तँ कहियो जाड़े गरमीकेँ पटैक छातीपर बैसैए...। मुदा, वाह रे फागुन! जहिना धन्टा-मिनटसँ नापल दिन-राति एकरंग अछि तहिना थर्मामीटरसँ नापल सर्दी-गरमी अछि। ओना, मासक विचार घुसुका धर्मनाथ बाबूकेँ चौबीस घन्टाक दिन-रातिपर सेहो लऽ अनलकैन जे मास कोनो किए ने हुअए मुदा दिनो-राति कि कोनो एकेरंग होइए। जेना-जेना सुर्ज सिरचढ़ होइ छैथ तेना-तेना दिन-राति सेहो अपन सिर ऊपर-निच्चाँ करि कहुना खेपिये जाइए।

धर्मनाथ बाबूक मन कोठरीक दरबज्जासँ निकैल दुनियाँ दिस जे बढ़ल छेलैन ओ पुनः कोठरीए-मे आबि अखबार ताकए लगलैन। अखबार मोन पड़िते धर्मनाथ बाबू बुदबुदेला-

“आठ बाजि रहल अछि, अखन तक अखबार किए ने आएल।

अखबार बेचनिहारेकेँ ने ते कोनो अनहोनी समाचार भेट गेलै जे एतेक बिलम भऽ रहल अछि।"

फेर अपने मन मनबैत धर्मनाथ बाबूक आगूमे अपन जिनगीक अठहत्तरिम बर्ख आबि गेलैन। यएह फागुन मास छी जे मास अपन जनम-मास सेहो छी। आँखि उठा कऽ कलेण्डरपर देलैन तँ दिनो आ तारीखोक ठेकान पौलैन। ठेकान पेबिते जन्म तिथि सेहो मनमे नचलैन। काल्हि उनासियम बर्खमे प्रवेश करब। उनासी-अस्सी; जखने अस्सी तखने..! आजुक समयमे अस्सी बर्ख जीब लेब साधारण बात थोड़े छी। आब कि कोनो पहिलुका लोक जकाँ बुढ़ाड़ीकेँ मृत्युक करीब बुझल जाइए। आब तँ शिखर-पराग आ गाड़ी-सवारी मृत्युकेँ जबाने-जुआन लग आनि देलक अछि...। तही काल अखबार फड़फड़बैत पत्नी पहुँच, बजलैन-

"अपन राजाबाबूक हाल देखू..!"

'अपन राजाबाबूक हाल देखू' सुनि धर्मनाथ बाबू अपना मनपर जोर देलैन जे 'के अपन राजाबाबू छैथ?' परिवार दिस तकलैन तँ केतौ राजाबाबू नहि देखि पड़लैन। गाम-समाज दिस नजैर दौड़ेलैन तँ तेतौ ने राजाबाबूकेँ देखलैन। के राजाबाबू? अठारह बर्ख नोकरी छुटना भेल, बालो-बच्चा अपन-अपन ठौर पकैड़ लेलक आ अपने दुनू परानी, जहियासँ बिआह भेल तहियासँ नीको-बेजाए-मे संगे रहलौं अछि...।

चारू दुनियाँ तकला पछाइत धर्मनाथ बाबूकेँ जखन राजाबाबू नहि भेटलैन तखन अपन मनक हारि कबूल करैत बजला-

"के राजाबाबू?"

पतिक बात सुनिते सुवासिनीक मनमे भेलैन जे जेना-जेना मृत्यु करीब अबैत जाइए तहिना-तहिना ने जीवित लोकक समूह सेहो दूर होइत जाइए। तँए कि नीच कर्म केनिहारक गति तेना नइ होइए सेहो बात

तँ नहियेँ अछि, सेहो तँ होइते अछि, नीच-ऊँच सबहक होइए। जे सोभाविको अछिए। अनकर पाप लोक अपना माथपर किए लेत। सभ अपन-अपन कर्मक भागी ने अछि। आ जँ से नहि हुअए सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। तैबीच सुवासिनीक मनमे अपन नारीक संस्कार जागि गेलैन। नारीक संस्कार ई भेल जे पति-पत्नी हुअए आकि नारी-पुरुख हुअए, पुरुखक गलती देखि नारी समूहक विचार उपराए लगैए। जइसँ पति-पत्नीक बीच सेहो वैचारिक दूरी बनियेँ जाइ ए...। सुवासिनी बजली-

“अहींक राजाबाबू।”

पत्नीक बात सुनि धर्मनाथ बाबू पुन: अपन पाछू दिसक जिनगी टटोलए लगला। पत्नी झूठ थोड़े बजती।

पनरह बर्खक उम्रमे धर्मनाथ बाबूकेँ कौलेजमे राजाबाबूसँ भेँट भेला पछाइत परिचय भेलैन। एक्के कौलेजमे छह बर्ख संगे-संग पढ़लैन। राजाबाबूक असल नाओं ‘राजा मोहन’ छेलैन जे छठिआरीक राति मातो-पिता आ समाजक दाइयो-माइ विचारि कऽ रखने रहैन।

मनपर केतबो जोर धर्मनाथ बाबू देलखिन मुदा राजाबाबू मन नइ पड़लैन। ओना, कलेण्डर देखला पछाइत अपनो मनमे छेलैन्हे जे औझुके दिन अपन जन्म भेल छल, तँए किए ने पत्नियोँकेँ सुना दिऐन जे आइ हमर जन्म दिन सेहो छी। जहिना कोनो घाट लग एक दिस अगम पानि रहने डुमैक सम्भावना रहैए आ दोसर दिस सुखल धरती सेहो रहैए जैठाम लोक दौड़ैत चलैए; तहिना ने जीवनोमे अछि, कोनो घटना एहनो तँ जीवनमे घटिते अछि जे माटिकेँ चानी-सोनाक कोन बात जे एकेबेर लाल-जवाहर, हीरा बना दइए आ कोनो एहनो तँ घटिते अछि जे एकेबेर जिनगीक अन्त सेहो कइये दइए, माने मटियामेट कऽ दइए। ओना, मने-मन धर्मनाथ बाबू पत्नीक आगूमे अपनाकेँ हारल सन बुझै छला मुदा ईहो मनमे उठैत रहैन जे भलेँ दुनियाँ मोन नहि पड़त तँ नइ पड़ह, हमरो बिसैर

जाह। दुनूक हिसाब राप-साप अछिए। तइले पत्नीक आगू मुँहचुरू भेल रही सेहो नीक बात नहियेँ हएत। मनकेँ उत्साहित करैत धर्मनाथ बाबू बजला-

"आइ हमर अठहत्तरिम बर्ख बीत रहल अछि आ उनासीम बर्खमे प्रवेश करब; तँए नवका सालक जन्म दिनक उत्साह आ पुरान सालक श्रद्धापूर्ण समापन सेहो ने संगे करए पड़त। भोज-भातक बेसी लटारम कि करब; खाली उनासी गोरेक बीच एक-एकटा खाजा आ एक-एकटा मुंगबा बिलैह शुभ-शुभ कऽ नवारम्भ किए ने करी।"

ओना, सुवासिनी ग्रेजुएशन 'गृह विज्ञान'सँ केने छेली तँए अलंकारक बोध नहि छेलैन, मुदा समाजो तँ विश्वविद्यालय छीहे, अलंकार, मुहावराक संग भाषा वैज्ञानिक जकाँ शब्द-निर्माता सेहो छीहे। जखने लोहाक करखानाक अतिरिक्त विचारक कारखानासँ शब्दक जन्म होइए तखने ने व्याकरणकेँ के कहए जे छन्दोशास्त्र आ अलंकारो शास्त्र बदैल जाइए। जे नखसिख रहैए ओ सिखनख सेहो भाइये जाइए।

पतिक मुहसँ 'जन्म दिन' सुनिते सुवासिनीक मनमे सेहो नव रूप प्रकट भेलैन। जइसँ मन तेतेक मुदमुदा गेलैन जे अपन सभ किछु बिसैर बजली-

"खाजा खेनिहार राजाबाबू तँ जहलमे छैथ तखन किनका खुएबैन?"

पत्नीक ललियाएल वाण सुनि धर्मनाथ बाबूक मनमे जेना अपन जिनगीक बिलहल साइयो जिनगीक मुंगबा नाचि उठलैन। सरकारी नोकरीमे रहितो कहाँ कहियो ई बुझलौं जे सत्तासीन भेने सत्ताधीश भइये गेलौं। अपन वंशगत परिवारक जे अखन तकक चलैन रहल, ओही अनुकूल ने अपनाकेँ अखनो धरि रखने छी। पढ़ैक क्रममे आइ.ए.एस. केलौं। पैघ जवाबदेहीक नोकरी भेल, सामंजसक ढंगसँ चलैत अपन

अन्तिम सीमापर पहुँच सेवा-निवृत्त सेहो भेलौं। तेकरो आइ अठारह बर्ख भऽ गेल..! अपन जिनगीक पूर्णत्व देखैत धर्मनाथ बाबू बजला-

“कएम बर्खमे अहाँक बिआह भेल छल?”

जहिना अपन बालपनक कोनो बात वा काज मोन पड़ने बुढ़ाड़ियोमे मन खुशी भऽ जाइए तहिना ने पति-पत्नीक बीच बिआह सेहो छी। बिहुसैत सुवासिनी बजली-

“एगारहम बर्खमे बिआह भेल; जखन वाला सँ ब्रजवाला भेले छेलौं।”

जिनगी भरि शासन सूत्रसँ जुड़ल धर्मनाथ बाबू, तँए वृन्दावनक कृष्णलीला दिस धियान किए जइतैन। अपन हिसाब मने-मन जोड़ि बजला-

“पाँच बर्ख अहाँसँ हम जेठ छी। हम उनासीममे पहुँच रहल छी आ अहाँ चौहत्तरिममे। तइमे मासक कनी-मनी घटी-बढ़ी रहितो जहिना हमरा अस्सी पुरैमे एक बर्खक कमी अछि तहिना अहूँकेँ पचहत्तरिम पूरैमे साल भरिक कमी अछिए।”

अपनाकेँ पाँच बर्ख पाछू (कमी) सुनि सुवासिनीक मनमे पति-पत्नीक जिनगीक विचार खसलैन। विचार खसिते मन उत्फुल भेलैन। बजली-

“माता-पिताक बीच भलेँ हम पाँच बरख छोट किए ने रहल होइ, मुदा जइ दिन दुनू गोरेक बीच वैवाहिक बन्धन जुड़ल , तइमे कम थोड़े छी।”

निरविचार लोक धर्मनाथ बाबू; पत्नीक विचारसँ सहमत होइत बजला-

“हँ, तइमे कम नइ भेलौं। मुदा जिनगीक हिसाबे तँ पाँच बर्ख छोट जरूर छीहे।”

सुवासिनीक मनमे एकाएक नारी जिनगीक शक्तिक उदय भेलैन; बजली-

"जिनगीक आँट-पेट देखि जखन एहेन विचार मनमे अछि तखन ईहो तँ सम्भव अछिए जे जहिना आगूसँ पाँच बर्ख अहाँ जेठ छी तहिना पाछूसँ–मृत्युक हिसाबे–पाँचक बदला दस हमहूँ तँ भइये सकै छी, तखन?"

पत्नीक विचार सुनि धर्मनाथ बाबूक मनमे उठलैन जे केहेन जिज्ञासाक संग पत्नी छैथ आ अपने कोन रमझौआमे पड़ि गेलौं। सभ रमझौआकेँ समेट सामंजस करैत बजला-

"उमेरक हिसाबे ने हम पैघ छी आ ने अहाँ छोट छी। ई तँ जिनगीक लम्बाइ-चौड़ाइक विचार भेल। मुदा जैठाम पति-पत्नीक प्रश्न अछि, तइमे तँ दुनू गोरे एकेरंग भेलौं। ओहुना सृष्टिक सृजनमे दुनू गोरेक भागीदारी सेहो अछिए।"

पतिक विचार सुनि सुवासिनीक मन सुवासित भेलैन। अखबार आगूमे बढ़बैत बजली-

"हे देखू अपन संगीक किरदानी..!"

अखबारक मुख्य पृष्ठक पहिल समाचार, 'सरकारी पाइक गवनमे राजमोहन ऊर्फ राजाबाबूकेँ पुलिस पकैड़ जहलमे देलकैन।' समाचारकेँ आगू नहि पढ़ि 'हेडिंगे देखि धर्मनाथ बाबू गुम्म भऽ पत्नी दिस देखए लगला। पतिक परस्तपन देखि सुवासिनीक मन पहिनहिसँ कलशल रहबे करैन। पत्नीक फुलाएल मन आ अपन मुरझाएल मन, माने संगीकेँ जहल देखि धर्मनाथ बाबू विचित्र स्थिति (द्वन्द्व)मे पड़ि गेला। मुदा लगले अपन विश्वस्त मन मुरझाएल मनकेँ कहलकैन अनेरे दुनियाँक चालि देखि अपन चालि मुरझा रहल छी। तखन तँ भेल जे अखन जे पत्नी सिरचढ़ जकाँ लागि रहली अछि; पहिने तेकरा निच्चाँ उतारि एकबट्ट करैक अछि।

धर्मनाथ बाबू बजला-

“तुलसी बाबा ने कहने छैथ जे ‘सवै नचावे राम गोसाँई।’ मुदा तइमे कनी ओ छिपा कऽ कहलैन।”

तुलसी बाबाक नाओं सुनिते सुवासिनी चौंकली। चौंकैक कारण मनमे उठलैन जे नित्य एक आखर रामायणिक पाठ करैत एलौं; तुलसी बाबा सन साधक जे अपन जिनगीक परवाह नहि करैत दुनियाँक जिनगीमे अपन विचार दान केलैन, तिनका पति खोंट केना मानि रहला अछि..! बजली-

“की छिपा कऽ कहलैन?”

पत्नीक मन जे अखन धरि चढ़ल सन धर्मनाथ बाबूकेँ बुझि पड़ि रहल छेलैन ओ थोड़ेक लियौन भेलैन। लियौन देखि धर्मनाथ बाबू बजला-

“तुलसी बाबा छिपा ई लेलैन जे ‘सवै नचावे राम गोसाँई’ जे कहलैन से नहि कहि जँ ई कहितैथ जे ‘पति नचावे पत्नी गोसाँई।’”

पतिक बात सुवासिनीकेँ कठाइन सन लगलैन। जखन पति-पत्नी संगी रूपमे जीवन भरि हँसी-खुशीसँ चलैक संकल्पी छी; तखन एहेन विचार पतिक मनमे किए उठलैन? बजली-

“एना किए बाघक नाङेरकेँ हाथीक सूढ़मे बान्हि देलिऐ?”

पत्नीक विचार सुनि धर्मनाथ बाबू बिहुसैत बजला-

“दुनियाँमे एहेन बन्हनिहार की हमहींटा छी आकि दुनियेँ अछि।”

दुनियाँक बात सुनिते सुवासिनी बजली-

“से केना?”

धर्मनाथ बाबू बजला-

“पहाड़ तँ देखिते छी जे केते नमहरो होइए आ नमगरो-चौड़गर

होइते अछि।"

बिच्चेमे सुवासिनी बजली-

"हँ, से तँ अछिए।"

धर्मनाथ बाबू बजला-

"नान्हिटा जे काज होइए वा नान्हिटा कोनो गपे रहैए, तेकरो लोक पहाड़ कहैए आकि नहि?"

सुवासिनीकेँ अपनो आँखिक देखल आ कानक सुनल सेहो छेलैन्हे। तँए गुम्मे रहि गेली। अपन जीत होइत देखि जहिना केतौ पानिक बहावक प्रवाहकेँ माटिक चेकासँ रोकला पछातियो ऊपरसँ चेका लादल जाइए तहिना धर्मनाथ बाबू विचारक चेका चढ़बैत बजला-

"जखन पति-पत्नी जीवन संगी भेल तखन एक-दोसरक जीवन क्रिया सेहो ने एक संगे चलक चाही।"

पतिक विचारक प्रवाहमे सुवासिनी ओहिना बहि गेली जेना कोनो कवि अलंकारक विचारमे बहि भावनाक मुँह-कान भसका दइए; तहिना बजली-

"हँ, से तँ चलबऽके चाही।"

टौहकीमे फँसल माछ देखि जहिना टौहकीदार विश्वस्त भऽ जाइए जे हाथ आबि गेल; तहिना धर्मनाथ बाबूक मनमे सेहो भेलैन। अपन विश्वस्त विचार रखैत बजला-

"यएह ने बाजल छेलौं जे पति नचाबे पत्नी गो साँई।"

सुवासिनी-

"हँ।"

'हँ' सुनिते धर्मनाथ बाबू बजला-

“ऐमे मान-अपमान की भेल। जहिना देवा तहिना देवी। अकारान्तो स्त्रीलिंग होइए आ इकारान्तो तँ होइते अछि।”

गम्भीर होइत सुवासिनी बजली-

“की कहए चाहै छेलौं आ केतए वौआए लगलौं से अपनो ठेकान करै छिऐ?”

जहिना गाड़ीक पहिया आगूक ठोकर पेब मुड़ि जाइए तहिना धर्मनाथ बाबू अपन विचारकेँ मोड़ैत बजला-

“अपना दुनू गोरे पति-पत्नी छी। हम जिनगी भरि नोकरी केलौं। अपने टा नहि अहूँ बुझै छी जे केते दरमाहा (तलब) कहिया भेटल, आ कोन तरहक जीवन-यापन परिवारक रहल।”

परिवारक बेकतीकेँ परिवारोक प्रवाह तँ किछु-ने-किछु प्रभावित करिते अछि। परिवारक प्रवाह जहिना धर्मनाथ बाबूपर छेलैन तहिना सुवासिनीपर सेहो छेलैन्हे। बाबेक अमलदारीक विचार धर्मनाथ बाबूक विचारपर अखनो ओहिना जीवित हँसि रहल छैन जेना बाबाक अमलदारीसँ चलैत आबि रहल छैन। ओ विचार छी, दोसरकेँ डाँरब नहि। दोसरकेँ डाँरब मनुखक लेल अधम वृत्ति छी। जेकर निमरजना धर्मनाथ बाबू परिवारक बीच अखन धरि करैत आबि रहला अछि। विचार आगू बढ़िते धर्मनाथ बाबू अखबार उनटा कऽ पुन: देखए लगला। एक तँ पहिल पृष्ठक पहिल समाचार आ दोसर अखबार पढ़ैक जिज्ञासा सेहो रहबे करैन; तँए गहराइसँ समाचार देखए लगला। आगूक समाचार, दोसर समाचार पढ़ै दिस नजैर नहि बढ़लैन। नजैर अँटैक गेलैन राजाबाबूक समाचारपर।

तैबीच आगूक तगेदा करैत सुवासिनी बजली-

“समाचारमे की भेटल?”

राजाबाबूक समाचारसँ धर्मनाथ बाबू मिसियो भरि विचलित नहि भेला। विचलितो किए होइतैथ। परिवारसँ लऽ कऽ आइ धरिक राजाबाबूक जीवन क्रिया जानि रहला अछि। जहिना सुवासिनीक प्रश्न छेलैन तहिना धर्मनाथो बाबू उत्तर दैत बजला-

“की भेटत! अहाँ भेटलौं।”

जहिना व्यंग्यवाण धर्मनाथ बाबू छोड़ने छला तहिना व्यंग्योत्तर करैत सुवासिनी बजली-

“खुनलौं पहाड़ आ भेटल मुसरियो ने टुसरी..!”

धर्मनाथ बाबू बजला-

“किछु तँ भेटल। नहि कैलाशक मानसरोवर आकि शिव-पार्वती भेटला, मुदा टुसरियो तँ भेटबे कएल किने।”

ओना, सुवासिनीक मनात्मामे बिसवासक दृढ़ता रहबे करैन जे हँसियो-चौलमे पति पतितपनेक उद्धारक विचार करै छैथ, तँए विचारमे किछु रस-रहस्य हेबे करत। बजली-

“से केना?”

धर्मनाथ बाबू जहिना अखन तक पत्नीक संग पतिक रूप निमाहैत एला, जइसँ सदिकाल विचारक संग चलैत रहला तहिना दृढ़तासँ बजला-

“राजाबाबूक सम्बन्धमे जड़ियेसँ कहि दइ छी।”

पतिक विचार पर जोर दैत सुवासिनी बजली-

“पहिने औझुका समाचार कहि दिअ, तखन जँ गप-सप्प करैक समय बँचत तँ आदि-सँ-अन्त धरि बुझा कऽ कहब।”

पत्नीक बात सुनि धर्मनाथ बाबूक मनमे एलैन जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल। सभ किछु कि कोनो आइये भेल। तँए मुड़कट्टी जवाब देब नीक हएत...। धर्मनाथ बाबू बजला-

"जेहेन मति तेहेन गति।"

पतिक विचार सुवासिनीकेँ मनक भाँजपर चढ़बे ने केलैन। किए तँ अपनो मुहेँ केता दिन बाल-बच्चाकेँ कहि चुकल छेली जे 'जेहने लोकक मति होइए तेहने ने लोकक गतियो होइए।' मुदा से तँ कहै छेलिऐ कोनो प्रसंगवश, ऐठाम तँ जहलक प्रसंग अछि...। निरसोची होइत बिहुसैत सुवासिनी बजली-

"एना छीपापनार हरे कि करीने जकाँ नइ अगड़ाउ, जेना हमर मन मानए तेना मनमैत कऽ कहू।"

जहिना बोखरलगुआ रोगीकेँ थर्मामीटर लगौला पछाइत डॉक्टर जर-बोखारकेँ आँकि लैत तहिना धर्मनाथ बाबू पत्नीकेँ आँकि लेलैन। ओना, धर्मनाथ बाबूक मनमे अखनो तक ई छैन्हे जे कहुना राजमोहनकेँ राजाबाबू कहि संगी बना लिऐन जइसँ सुवासिनीकेँ सौतीनपना जमबैमे नीक हेतैन। भने झोटा-झोटौवैल चलैत रहत। मुदा लगले मन कहलकैन अनेरे हम मौगमेहरा झंझटमे अपन समय नष्ट करए जा रहलौं हेन। ओना, मनमे ईहो उठि गेलैन जे जँ पत्नीकेँ बिसवासिनी बना नहि राखब तँ माथमे एकोटा टीक रहए देती। तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे सुहरदे मुहेँ हिनकेपर छोड़ि दिऐन...।

धर्मनाथ बाबू बजला-

"राजाबाबूक विषय कि कोनो किताबक कहानी जकाँ अछि जे रामोकथाकेँ आठे पाँती- 'एक था रावण, एक था रमना, दोनो में हुआ झगड़ा। एक अयोध्या, दूसरा लंका, दोनो में फँसा रगड़ा। सरयुग धार पर तुलसी बैठा, बेराग बबाजी रूप धरना। बैठे-बैठे रच डाला, रामायण जैसा पोथना।' लिख देब।"

सुवासिनी चुप रहि गेली। पत्नीकेँ चुप देखि धर्मनाथ बाबूक मनमे उठलैन, सभसँ नीक हिनके किए ने छूट दैत कहिऐन जे मनमे जे आबए

से बाजू; हम जवाब दैत चलब। बजला-

“की बुझैक अछि से बाजू।”

सुवासिनी- “अखबारबला सभ झूठे समाचार छपलक अछि आकि किछु सतो छइ?”

धर्मनाथ बाबू-

“अखबारबला जे किछु छपलक, ओ अपना विचारे छपलक। छीपा कऽ छपलक आकि छीपलकैं देखार करैत छपलक तइसँ हमरा कोन मतलब अछि। तखन अपना जे बुझल रहत सएह ने कहब।”

पतिक विचार सुनि सुवासिनीक मन मानि गेलैन जे पति अखन पतिपन निमाहैले पूर्ण तैयार छैथ। बजली-

“केहेन काण्डमे राजाबाबू जहल गेला अछि?”

धर्मनाथ बाबू बजला-

“अखन बेसी बात नहि पुछब खाली एकेटा बात पुछै छी, जहियासँ दुनू गोरे संगे जीवन बितबै छी तहियासँ कहियो राजाबाबू ऐठाम गेलौं आकि वएह एला से ठेकान अछि। जँ अछि तँ मोन पाड़ि दिअ।”

पतिक बात सुनि सुवासिनी अतीतमे जा मनपर जोर देलैन, मुदा केतौ किछु ने पेब बजली-

“से तँ चेहरो-मोहरा मन नहि पड़ि रहला अछि। एतबे बुझल अछि जे जहिना अहाँ आइ.ए.एस. अफसर छी तहिना ओहो आई.पी.एस. अफसर छेला।”

धर्मनाथ बाबू-

“हँ छेला। आरो किछु?”

जहिना ज्ञानी गुरु लग शिष्य अपन अज्ञानता देखबैए तहिना सुवासिनी बजली-

"अहाँकेँ जे बुझल अछि से हमरो बुझा दिअ।"

पत्नीक बुझैक जिज्ञासा अपन विरक्त होइत मनक बीच सामंजस करैत धर्मनाथ बाबू बजला- "जखन पनरह बर्खक रही, मैट्रिक केनहि रही, तहियेक बात छी।"

विवाहक पूर्वक बात सुनि सुवासिनी चौंकली। चौंकैक कारण भेलैन जे साठि बर्खसँ ऊपरेक बात छी, मुदा पति अखन तक अपनो संगी-साथीक गप-सप्प छिपौनहि छैथ। बजली-

"आगू की भेल?"

आगूक बात सुनि धर्मनाथ बाबूक मनमे एलैन जे आगूक बात कहैसँ पहिने अपनो आ राजोबाबूक पारिवारिक परिचय दऽ देब बेसी नीक हएत। धर्मनाथ बाबू बजला-

"राजाबाबूक पिताजी जमीन्दार छेलखिन। तहसील छेलैन। अफरजात जमीनो-जत्था छेलैन, आ धनो-सम्पैत, मुदा अपना नइ छल। परबाबाकेँ तँ नहि देखलयैन, मुदा बाबाक जेहेन सीख-लीख रहैन तेहने पिताजीक रहलैन। पनरह बीघा अपन जोत जमीन रहैन, वएह परिवारक जीविकाक साधन छल आ ओहीपर परिवार चलै छल।"

सुवासिनी बजली-

"खेत-पथारक बात छोड़ू।"

धर्मनाथ बाबू-

"समाजमे माने गाममे, कोनो परिवारक संग ने कहियो कोनो चीज-ले विवाद भेल आ ने कहियो समाज परिवारकेँ समाजक परिवार नहि बुझलक। मुदा राजाबाबूक परिवार से नहि छेलैन। दाब-चाप सदिकाल करैत रहै छला।"

सुवासिनी बजली-

“समाजोक बात छोड़ू। राजाबाबूसँ केहेन सम्ब न्ध रहल?”

धर्मनाथ बाबू-

“कौलेज जीवनमे चिन्हारए भेल, मुदा हम अपन रूटिंगक अनुसार चलैत रही तँए बेसी सम्बन्ध नहि बनि पाएल। दुनू गोरे संगे एम.ए. पास केलौं। कम्पीटिशनमे बैसलौं। हम आई.ए.एस. भेलौं , ओ आई.पी.एस. भेला। नोकरीक एहेन जीवन रहल जे एक क्षेत्रमे कहियो एकठाम नहि भेलौं। जखन हम डी.एम. रही तखन ओ डी.आई.जी. बनि गेला। ओही क्रममे ओ सरकारी खजाना गबन केलैन। की केलैन, केते केलैन ओ स्पष्ट नहि अछि।”

सुवासिनी-

“ओही दिनक केस छिऐन?”

धर्मनाथ-

“हँ।”



शब्द संख्या : 2630, तिथि : 21 जनवरी 2020

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:

---------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भS गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019
854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019
855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019
856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019
857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019
858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019
859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019
860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019
861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019
862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019
863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019
864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019
865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019
866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019
867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019
868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019
869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019
870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019
871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019
872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019
873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019
874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020
875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020
876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020
877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020
878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020
879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020
880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कS खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022
1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022
1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022
1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022
1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022
1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022
1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022
1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022
1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022
1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022
1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022
1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022
1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022
1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022
1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022
1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022
1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022
1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022
1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022
1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022
1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022
1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022
1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022
1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022
1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022
1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022
1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022
1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्ति: जारी...

❑❑❑

❑❑

❑